26 जून, 2025
आषाढ़, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा
संवत 2082
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

* ओड़िशा संस्करण

www.epaper.azadsipahi.in

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

रांची
गुरुवार, वर्ष 10, अंक 246

झारखंड में नीली क्रांति को साकार करेगी सरकार : शिल्पी नेहा तिर्की

सिल्ली के गांव में घुसा बाघ, दहशत, शाम को किया गया रेस्क्यू

■ मारदू गांव में सुबह साढ़े चार बजे किसान के घर में घुसा था ■ पीटीआर की टीम ने बेहोश किये बिना किया रेस्क्यू

आजाद सिपाही संवाददाता

मुरी/सिल्ली। सिल्ली प्रखंड के मारदू गांव के एक घर में घुसे रॉयल बंगाल टाइगर का रेस्क्यू कर लिया गया है। पलामू टाइगर रिजर्व की टीम ने बाघ का रेस्क्यू कर उसे अपने कब्जे में ले लिया है। उक्त बाघ गांव के पुरंदर महतो के घर में घुस गया था। किसान और उसके परिजनों ने बाघ को घर के भीतर बंद कर दिया था। बुधवार सुबह गांव में उस समय हड़कंप मच गया, जब एक बाघ जैसे विशालकाय जानवर को गांव में घूमते हुए देखा गया। कुछ ही देर बाद बाघ भोजन की तलाश में पुरंदर महतो के घर में घुस गया। साहस और सूझबूझ का परिचय देते हुए पुरंदर महतो ने बाघ को घर में बंद कर दिया। जिस कमरे में बाघ घुसा था, उसमें उस वक्त कोई भी मौजूद नहीं था। घटना की जानकारी मिलते ही ग्रामीणों ने तुरंत सिल्ली थाना पुलिस और वन विभाग को सूचित किया।

बाघ के घर में घुसने की खबर जंगल में आग की तरह फैल गयी और देखते ही देखते पुरंदर महतो के घर के बाहर ग्रामीणों की भारी भीड़ जमा हो गयी। बाघ को घर के अंदर देख पूरे गांव में दहशत फैल गयी और अफरा-तफरी का माहौल बन गया। गांव के कई लोगों ने सुबह के वक्त उस जानवर को गांव की गलियों में घूमते हुए देखा था। बताया जा रहा है कि जैसे ही पुरंदर महतो बकरी लेकर घर से बाहर निकले, उसी समय बाघ अंदर घुस गया। सूचना मिलने पर वन विभाग की टीम भी मौके पर पहुंची। फिर पीटीआर की टीम भी वहां पहुंची। ग्रामीणों को अनावश्यक रूप से घटनास्थल के पास जाने से रोकने के लिए प्रशासन ने घर के आसपास निषेधाज्ञा लागू कर दी। बाघ को रेस्क्यू करने में बिरसा जैविक उद्यान के कर्मियों ने भी मदद की। घटना स्थल पर रांची के डीएफओ श्रीकांत में मौजूद थे। उन्होंने बताया कि बाघ पूरी तरह सुरक्षित है। सबसे खास बात है कि रेस्क्यू करने के दौरान बाघ को बेसुध करने की भी जरूरत नहीं पड़ी। बाघ को बिरसा जैविक उद्यान में रखा जायेगा। वहां उसका हेल्थ चेकअप होगा। हेल्थ रिपोर्ट ठीक आने के बाद नेशनल टाइगर कंजर्वेशन ऑथरिटी से बात करने के बाद तय होगा कि इसको कहां शिफ्ट करना है।

बुधवार को सिल्ली प्रखंड के मारदू गांव से रॉयल बंगाल टाइगर (बाघ) को रेस्क्यू कर बिरसा जैविक उद्यान ओरमांझी ले जाती पीटीआर की टीम।

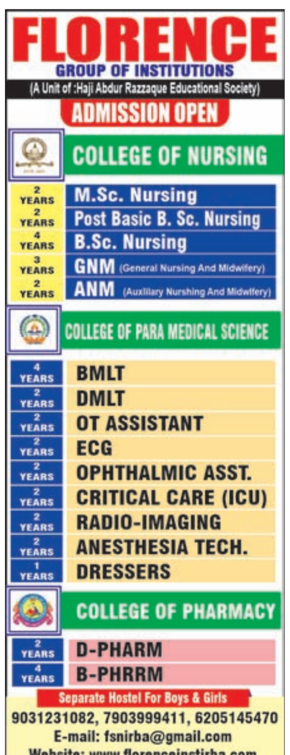

न्यूज रील्स

2026 से साल में दो बार होगी सीबीएसइ 10वीं की बोर्ड परीक्षा

नयी दिल्ली (आजाद सिपाही)। सीबीएसइ ने 2026 से साल में दो बार कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा आयोजित करने के मानदंडों को मंजूरी दी। यह जानकारी परीक्षा नियंत्रक संयम भारद्वाज ने दी है। सीबीएसइ कक्षा 10वीं की बोर्ड परीक्षाएं वर्ष में दो बार आयोजित करेगा। पहला चरण फरवरी में और दूसरा चरण मई में होगा। कक्षा 10 के छात्रों के लिए बोर्ड परीक्षा के पहले चरण में उपस्थित होना अनिवार्य होगा, जबकि दूसरा चरण वैकल्पिक रहेगा। आंतरिक मूल्यांकन केवल एक बार किया जायेगा। इस फैसले के बाद छात्रों को अपने अंकों में सुधार का मौका मिल पायेगा। यदि किसी छात्र के अंक पहले चरण में कम रह जाते हैं, तो वह दूसरे चरण में अच्छा प्रदर्शन करके उसे सुधार कर सकेगा। सीबीएसई ने कक्षा 10वीं के लिए वर्ष में दो बार बोर्ड परीक्षा आयोजित करने के मानदंडों को मंजूरी दे दी है।

इमरजेंसी के 50 साल : देश ने याद किया लोकतंत्र का काला दिन

कोई भी भारतीय कभी नहीं भूल सकता वह दिन : मोदी

- कांग्रेस की तत्कालीन सरकार ने लोकतंत्र को बंधक बना लिया था
- संसद की आवाज दबा दी गयी और अदालतों को बंधक बनाया गया

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। देश में 25 जून 1975 को लगाये गये आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ पर पीएम नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस पर बड़ा हमला बोला। उन्होंने आपातकाल के दिनों को याद करते हुए कहा कि आज भारत के लोकतांत्रिक इतिहास के सबसे काले अध्यायों में से एक आपातकाल लागू होने के 50 साल पूरे हो गये हैं। यह वो वक्त था, जब तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने लोकतंत्र को बंधक बना लिया था।

पीएम मोदी ने कहा कि कोई भी भारतीय कभी नहीं भूल सकता कि किस तरह हमारे संविधान की भावना का उल्लंघन किया गया। संसद की आवाज दबायी गयी और अदालतों को नियंत्रित करने का प्रयास किया गया। 42वां संशोधन उनकी हरकतों का एक प्रमुख उदाहरण है। गरीबों, हाशिये पर पड़े लोगों और दलितों को खास तौर पर निशाना बनाया गया, जिसमें उनकी गरिमा का अपमान भी शामिल है।

आपातकाल के खिलाफ लड़ने वालों को सलाम : प्रधानमंत्री ने कहा कि हम आपातकाल के खिलाफ लड़ाई में डटे रहने वाले हर व्यक्ति को सलाम करते हैं। ये लोग पूरे भारत से, हर क्षेत्र से, अलग-अलग विचारधाराओं से आये थे, जिन्होंने एक ही उद्देश्य से एक-दूसरे के साथ मिलकर काम किया। उनका लक्ष्य था भारत के लोकतांत्रिक ढांचे की रक्षा करना और उन आदर्शों को बनाये रखना, जिनके लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना जीवन समर्पित कर दिया। यह उनका सामूहिक संघर्ष ही था, जिसने यह सुनिश्चित किया कि तत्कालीन कांग्रेस सरकार को लोकतंत्र बहाल करना पड़ा और नये चुनाव कराने पड़े। जिसमें वे बुरी तरह हार गये।

गरीबों और वंचितों के सपने पूरे करेंगे : प्रधानमंत्री ने लिखा कि हम अपने संविधान में निहित सिद्धांतों को मजबूत करने तथा विकसित भारत के अपने सपने को साकार करने के लिए मिल कर काम कर रहे हैं। हम प्रगति की नयी ऊंचाइयों को छुएं तथा गरीबों और वंचितों के सपनों को पूरा करेंगे।

केंद्रीय कैबिनेट ने संविधान हत्या दिवस पर रखा मौन, प्रस्ताव भी पास

नयी दिल्ली (आजाद सिपाही)। देश में आपातकाल लगाये जाने की 50वीं बरसी के मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय कैबिनेट की बुधवार को बैठक बुलायी गयी। इसमें आपातकाल के खिलाफ प्रस्ताव पारित किया गया। इस प्रस्ताव में 1975 में लगे आपातकाल को 'लोकतंत्र और संविधान की हत्या' करार दिया गया और इसकी कड़ी निंदा की गयी। प्रधानमंत्री मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में आपातकाल की ज्यादतियों के पीड़ितों को श्रद्धांजलि के देने के लिए दो मिनट का मौन भी रखा गया। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी समेत सभी मंत्री खड़े रहे। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कैबिनेट मीटिंग में पारित प्रस्तावों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि वर्ष 2025 संविधान हत्या दिवस की 50वीं वर्षगांठ है। इस मौके पर केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 1975 में लगाये गये आपातकाल की कड़ी निंदा करते हुए प्रस्ताव पास किए हैं। प्रस्ताव में कहा गया है कि आपातकाल के दौरान देशभर में लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन हुआ और आम आदमी के संवैधानिक अधिकार छीने गये थे।

युवाओं से सीख लेने का किया आह्वान

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने अपने प्रस्ताव में देश के युवाओं से लेकर वरिष्ठ नागरिकों तक से लोकतंत्र के सेनानियों और उनके बलिदान से सीख लेने का आह्वान किया गया है। प्रस्ताव में कहा गया है कि आपातकाल के वीर सेनानियों ने तानाशाही प्रवृतियों का विरोध किया और हमारे संविधान और लोकतांत्रिक भावनाओं की दृढ़ता से रक्षा की थी। इसमें कहा गया है कि लोकतंत्र की जननी के रूप में भारत संवैधानिक मूल्यों के संरक्षण, सुरक्षा और रक्षा का मूर्तरूप है।

अंतरिक्ष में लहराया तिरंगा : 41 साल बाद भारतीय शामिल

लखनऊ के शुभांशु ने शुरू किया अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र का सफर

एजेंसी

फ्लोरिडा। भारत ने अंतरिक्ष की दुनिया में इतिहास रच दिया है। लखनऊ के रहने वाले शुभांशु शुक्ला ने बुधवार को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र (आइएसएस) की ओर उड़ान भर कर भारत की मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम में 41 साल बाद वापसी करायी। वह अमेरिका की प्राइवेट कंपनी एक्सिओम मिशन के तहत अंतरिक्ष में गये हैं। इस मिशन में भारत के अलावा हंगरी और पोलैंड के अंतरिक्ष यात्री भी शामिल हैं। स्पेसएक्स के फाल्कन-9 रॉकेट ने बुधवार दोपहर 12 बजकर 01 मिनट पर फ्लोरिडा के कैनेडी स्पेस सेंटर से उड़ान भरी। रॉकेट ने जैसे ही अंतरिक्ष में प्रवेश किया, भारत समेत दुनिया भर में इस ऐतिहासिक पल का जश्न शुरू हो गया। लखनऊ में शुभांशु शुक्ला के माता-पिता और सिटी मांटेसरी स्कूल के छात्रों ने भी लाइव लांच देखा और गर्व महसूस किया।

41 साल बाद रचा इतिहास : लांच के 10 मिनट बाद ही रॉकेट ने पृथ्वी की कक्षा में प्रवेश कर लिया। इस दौरान शुभांशु शुक्ला ने उत्साह में कहा: कमाल की राइड थी। यह सुनते ही देशवासियों के चेहरे खिल उठे। उनका यह सफर भारत की अंतरिक्ष उड़ान में एक नया अध्याय है, जो राकेश शर्मा की 1984 में हुई ऐतिहासिक उड़ान के 41 साल बाद संभव हुआ है।

साथ मौजूद हैं ये अंतरिक्ष यात्री : एक्सिओम मिशन में शुभांशु शुक्ला के साथ अमेरिका की अनुभवी अंतरिक्ष यात्री पैगी व्हिटसन, पोलैंड के स्लावोस उजनांस्की-विस्निएव्स्की और हंगरी के टिबोर कपू शामिल हैं।

नये स्पेसक्राफ्ट का नाम ग्रेस : अंतरिक्ष में पहुंचते ही चारों अंतरिक्ष यात्रियों ने अपने नये स्पेसक्राफ्ट का नाम 'ग्रेस' रखा। स्पेसएक्स ने उन्हें शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जो अच्छा है, उसके लिए इंतजार करना पड़ता है। 'ग्रेस' के पहले क्रू को शुभकामनाएं। अंतरिक्ष यात्री अब 14 दिन तक आइएसएस पर रहेंगे और इस दौरान 60 वैज्ञानिक प्रयोग करेंगे।

चावल और आम भी पहुंचे अतंरिक्ष

खास बात यह है कि इस मिशन में वैज्ञानिक प्रयोगों के अलावा अंतरिक्ष यात्री अपने-अपने देश की सांस्कृतिक झलक भी लेकर गये हैं। शुभांशु शुक्ला भारतीय करी, चावल और आम का रस लेकर गये हैं, जबकि हंगरी से स्पाइसी पपरिका पेस्ट और पोलैंड से फ्रीज-फ्राइड पिरोगीज अंतरिक्ष में भेजे गये हैं। यह मिशन केवल वैज्ञानिक उपलब्धि नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान का भी प्रतीक है।

मेरी नहीं, भारत की यात्रा: शुभांशु

पृथ्वी की कक्षा में पहुंचने के बाद शुभांशु शुक्ला ने हिंदी में देशवासियों को संबोधित करते हुए कहा: नमस्कार मेरे प्यारे देशवासियों, 41 साल बाद हम अंतरिक्ष में पहुंचे हैं। मेरी कंधों पर तिरंगा है, जो मुझे यह एहसास दिलाता है कि मैं अकेला नहीं, 140 करोड़ भारतीयों के साथ हूं। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ मेरी अंतरिक्ष यात्रा नहीं है, बल्कि भारत की मानव अंतरिक्ष यात्रा की शुरुआत है। शुभांशु शुक्ला ने अंतरिक्ष यात्रा से पहले कहा था कि वह भारत के युवाओं में विज्ञान के प्रति जिज्ञासा जगाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि मैं अंतरिक्ष जा रहा हूं, लेकिन यह 140 करोड़ भारतीयों की यात्रा है।

केंद्रीय कैबिनेट ने किया स्वागत

केंद्रीय कैबिनेट ने भारतीय अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला और तीन अन्य लोगों के साथ अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के लिए उनके एक्सिओम-4 मिशन के सफल प्रक्षेपण का स्वागत किया है। कैबिनेट द्वारा पारित प्रस्ताव में कहा गया, हम भारत, हंगरी, पोलैंड और अमेरिका के अंतरिक्ष यात्रियों को लेकर अंतरिक्ष मिशन के सफल प्रक्षेपण का स्वागत करते हैं।

गोलीकांड के विरोध में बंद रहा हजारीबाग का कारोबार

- व्यवसायियों ने जुलूस निकाल कर सुरक्षा बढ़ाने की मांग की

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। रविवार को शहर के श्री ज्वेलर्स के बाहर हुई फायरिंग और उत्तम यादव नामक व्यक्ति द्वारा घटना की जिम्मेवारी लेने के विरोध में हजारीबाग स्वर्णकार व्यवसायी संघ और फेडरेशन ऑफ हजारीबाग चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के आह्वान पर बुधवार को शहर का कारोबार बंद रहा। बड़े प्रतिष्ठान और दुकानें बंद रहीं। व्यवसायी संघ के लोगों ने जुलूस निकाला और दुकानों को बंद कराया। व्यापारियों ने प्रशासन से सुरक्षा बढ़ाने की मांग की। उन्होंने कहा कि शहर में अपराधियों के हौसले लगातार बढ़ रहे हैं। कभी चोरी, कभी फायरिंग आम बात हो गयी है। जान-माल खतरे में है। अगर सुरक्षा नहीं मिली, तो हम बड़े आंदोलन के लिए बाध्य होंगे। व्यापारियों का कहना था कि बार-बार शिकायत के बावजूद प्रशासन द्वारा ठोस कदम नहीं उठाया जा रहा। पुलिस को अपराधियों के खिलाफ त्वरित कार्रवाई करनी चाहिए। व्यापारियों ने प्रशासन से सुरक्षा की गारंटी, अपराधियों की तत्काल गिरफ्तारी और शहर में पुलिस पेट्रोलिंग बढ़ाने की मांग की है। व्यापार संघ ने उपायुक्त और पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन भी सौंपा। ज्ञापन की प्रति मुख्यमंत्री, देश के गृह मंत्री और प्रधानमंत्री कार्यालय को भी भेजी गयी है। इसमें चार मांगें रखी गयी हैं, जिसमें घटना की निष्पक्ष एवं त्वरित जांच, दोषियों की शीघ्र गिरफ्तारी, व्यापारिक क्षेत्रों में पुलिस पेट्रोलिंग बढ़ाने और ज्वेलर्स और अन्य संवेदनशील दुकानों के लिए सुरक्षा प्रदान करने की मांग शामिल है।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
200000 Subscribers
VIEWERSHIP 5 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Channel
आजाद सिपाही Subscribe NOW

इमरजेंसी के 50 साल: सत्ता के मद में कुचल दिया गया था लोकतंत्र

■ इंदिरा गांधी की कांग्रेस सरकार ने भारत के संविधान का गला घोंट दिया था

■ तानाशाही के उस भयानक दौर में महान भारत की आत्मा तक सिहर उठी थी

■ विरोध में उठनेवाले हर स्वर को सत्ता की ताकत के सहारे कुचल दिया गया था

■ आधी रात को छीन लिये गये थे आम भारतीय को दिये गये मौलिक अधिकार

किसी भी देश-समाज के लिए तारीखों का बड़ा महत्व होता है। जहां तक भारत की बात है, तो इसके लिए कई तारीखें महत्वपूर्ण हैं, लेकिन 26 जून, 1975 एक ऐसी तारीख है, जिसे भारत के 140 करोड़ लोग भूल जाना चाहते हैं, पर इसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। इस तारीख को दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के संविधान की हत्या करने के दिन के रूप में याद किया जाता है। आज से 50 साल पहले तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश की लोकतांत्रिक संरचना को सत्ता के मद में इतनी बुरी तरह निचोड़ दिया था कि उसका दर्द आज तक रह-रह कर उभर आता है। जिस भारत को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने का अभिमान था, उसकी आत्मा को सत्ताधारी दल कांग्रेस ने पिंजरे में कैद ही नहीं कर दिया था, बल्कि अपने विरोध में उठनेवाली हर आवाज को जबरन बंद कर दिया था। नागरिकों के लोकतांत्रिक अधिकारों को सत्ता के बूटों तले रौंद दिया गया था। अभिव्यक्ति की आजादी के अधिकार को जब्त कर लिया गया था। वह ऐसा दौर था, जिसमें एकबारगी ऐसा लगने लगा था कि भारत अब दोबारा कभी अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकेगा और न खुली हवा में सांस ले सकेगा। भारतीय लोकतंत्र पर यह सबसे बड़ा आघात था और 26 जून की तारीख को इसीलिए हमेशा याद रखने की जरूरत है। इमरजेंसी के उस काले दिन के 50 साल पूरा होने के मौके पर इसके तमाम पहलुओं के बारे में बता रहे हैं **आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।**

आजाद सिपाही विशेष

राकेश सिंह

50 वर्ष पहले 25 जून 1975 की आधी रात को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भारतीय संविधान की धारा 352 के अधीन देश में आपातकाल की घोषणा कर दी। पूरा देश इस फैसले से भौंचक रह गया। 26 जून, 1975 को सुबह रेडियो पर इमरजेंसी का एलान हुआ था। इस एलान से कुछ घंटे पहले आधी रात के आसपास तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश में अपने खिलाफ बढ़ती नाराजगी को दबाने के लिए देश को इमरजेंसी की आग में झोंक दिया था। भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में इस दिन को देश के सबसे दुर्भाग्यपूर्ण दिन की संज्ञा दी जाती है। 50 साल पहले आज के ही दिन देश के लोगों ने रेडियो पर वह एलान सुना और देश में जंगल की आग की तरह खबर फैल गयी कि सारे भारत में अब आपातकाल की घोषणा कर दी गयी है। 50 साल के बाद भले ही देश के लोकतंत्र की एक गरिमामयी तस्वीर सारी दुनिया में प्रशस्त हो रही हो, लेकिन आज भी अतीत में 26 जून का दिन लोकतंत्र के एक काले अध्याय के रूप में दर्ज है। भारतीय इतिहास में लोकतंत्र के लिए वह काला दिन था। आपातकाल मार्च 1977 तक चला। इस दौरान भारत में लोकतंत्र लगभग खत्म कर दिया गया और एक तानाशाही शासन की शुरुआत इस दौरान नागरिक अधिकारों का बड़े पैमाने पर हनन हुआ था। इंदिरा गांधी की सरकार ने अपने राजनीतिक विरोधियों को जेल में डाल दिया, मीडिया की आजादी छीन ली, लोगों के मौलिक अधिकारों को रौंदा, मानवाधिकारों का उल्लंघन किया और आम नागरिकों को बेरहमी से प्रताड़ित किया गया और हत्या तक की गयी। इस दौर में संविधान को भी कमजोर किया गया। हालांकि, आपातकाल का हर पहलू चौंकाने वाला था, लेकिन खासकर छात्रों पर किये गये अत्याचार बेहद निंदनीय थे। सब कुछ सिर्फ एक परिवार की तानाशाही को बरकरार रखने के लिए। पहली बार ऐसा मौका था जब देश में अनुच्छेद 352 के तहत आपातकाल की घोषणा की गयी थी। लोगों को आपातकाल के मतलब भी नहीं पता था। आपातकाल की घोषणा के साथ ही आम जनता के सभी मौलिक अधिकार छीन लिये गये थे। किसी तरह की अभिव्यक्ति की आजादी का अधिकार ही नहीं, लोगों के पास जीवन का अधिकार भी नहीं रह गया था। आम जनता, मीडिया समूह, रेडियो, और अन्य प्रचार के माध्यमों पर पूरी पाबंदी लगा दी गयी थी। आपातकाल की घोषणा के कुछ घंटे के भीतर की प्रमुख समाचार पत्रों के कार्यालयों में बिजली की आपूर्ति काट दी गयी थी।

आपातकाल की सूचना के बाद से ही देश में ढूंढ़-ढूंढ़ कर विपक्ष के नेताओं की गिरफ्तारियों का दौर शुरू हो गया था। तत्कालीन समय के बड़े नेता जयप्रकाश नारायण, लालकृष्ण आडवाणी, अटल बिहारी वाजपेयी, जॉर्ज फर्नांडिस को जेल में डाल दिया गया। विपक्षी नेताओं के साथ साथ समाज में प्रभाव रखने वाले कांग्रेस के विपरीत विचारधारा वाले सभी लोगों और आम जनता में बेगुनाहों को भी जेल में भर दिया गया था, जेलों में जगह नहीं बची थी। करीब 1.40 लाख लोगों आपातकाल में बिना किसी सुनवाई के राजनीतिक बंदी बनाया गया। इसमें कोई दो राय नहीं है कि आपातकाल के दौरान पूरे देश का नियंत्रण गांधी-नेहरू परिवार के हाथ में था। कांग्रेस ने आपातकाल की आड़ में वो सभी काम किये, जो ना सिर्फ राजनीतिक लिहाज से अशोभनीय थे, बल्कि अमानवीय भी थे। प्रेस में सरकार या आपातकाल की आलोचना करना अपराध की श्रेणी में आ चुका था। प्रेस-मीडिया पर भी सेंसरशिप लगा दी गयी थी। हर अखबार में सेंसर अधिकारी तैनात किया गया था। हालात यह थे कि कांग्रेस समर्थित उस अधिकारी के अनुमति के बाद ही कोई समाचार छप सकता था। सरकार विरोधी समाचार छापने पर बिना किसी सुनवाई के गिरफ्तारी हो रही थी।

यही नहीं, कांग्रेस का विरोध करने वाले 26 संगठनों पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। 4 जुलाई 1975 को राष्ट्रीय विचार और भारतीयता के लिए काम करने वाले संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। आपातकाल के मुखर आलोचक रहे फिल्मी कलाकारों को भी इसका दंश झेलना पड़ा। किशोर कुमार के गानों को रेडियो और दूरदर्शन पर बजाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। देव आनंद को भी अनौपचारिक प्रतिबंध का सामना करना पड़ा था। देश में आपातकाल लागू होने के बाद कई त्रासद घटनाएं हुईं। दिल्ली का तुर्कमान गेट कांड भी इनमें एक था। मुस्लिम बहुल उस इलाके को संजय गांधी ने दिल्ली के सौंदर्यीकरण के नाम पर खाली करा दिया। यह काम लोगों की सहमति से नहीं, बल्कि जबरन किया गया गया। बुल्डोजर से लोगों के घर ढहाये गये। जिन्होंने विरोध किया, उन्हें जेलों में ठूंस दिया गया। विरोध के दौरान पुलिस ने लाठियां बरसायीं और आंसू गैस के गोले छोड़े। पुलिस ने गोलियां भी चलायीं। चार लोगों की जान चली गयी। संजय गांधी की सनक के चलते सड़क से भिखारियों, झोपड़पट्टी के लोगों और राहगीरों को पकड़ कर जबरन नसबंदी के टारगेट पूरे किये जाने लगे। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में 18 अक्टूबर 1976 को नसबंदी अभियान का विरोध कर रहे आंदोलनकारियों पर पुलिस ने सीधी फायरिंग कर दी थी, जिसमें 42 बेगुनाहों की मौत हो गयी थी। मृतकों की स्मृति में यहां शहीद चौक बना हुआ है। एक रिपोर्ट के मुताबिक इमरजेंसी के दौरान देशभर में 1.10 करोड़ से ज्यादा लोगों की नसबंदी कर दी गयी थी। 21 महीने के बाद जयप्रकाश का आंदोलन निर्णायक मुकाम तक जा पहुंचा। इंदिरा गांधी को सिंहासन छोड़ना पड़ा। मोरारजी देसाई की सरकार ने 28 मई 1977 में आपातकाल के दौरान हुए ज्यादतियों को जानने के लिए जस्टिस जे सी शाह की अध्यक्षता में शाह कमीशन गठित किया। शाह आयोग ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट किया था कि जिस वक्त आपातकाल की घोषणा की गयी, उस वक्त ना देश में आर्थिक हालात खराब थे और ना ही कानून व्यवस्था में किसी तरह की कोई अड़चन थी। इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल अपनी इच्छा के अनुसार लगाया था और इस संबंध में उन्होंने अपने पार्टी के कुछ लोगों को छोड़कर किसी भी सहयोगी से कोई विमर्श नहीं किया था।

आपातकाल में गिरफ्तार किये गये अधिकतर सम्मानित और बुजुर्ग नेताओं को चिकित्सा सुविधा की आवश्यकता थी, जो उन्हें अस्पताल में उपलब्ध नहीं करायी गयी। इंदिरा गांधी की तानाशाही का एक नमूना इस बात से भी पता चलता है कि शाह आयोग ने नसबंदी कार्यक्रम पर सरकार के रवैये की बेहद आलोचना की थी। आयोग ने कहा था कि पटरी पर रहने वाले और भिखारियों की जबरदस्ती नसबंदी की गयी। इसके साथ-ऑटो रिक्शा चालकों के ड्राइविंग लाइसेंस के नवीनीकरण के लिए नसबंदी सर्टिफिकेट दिखाना अनिवार्य कर दिया गया था। आयोग ने यह स्पष्ट रूप से माना था कि सरकारी तंत्र का उपयोग कर कुछ लोगों को फायदा पहुंचाने के लिए इस पूरे आपातकाल का इस्तेमाल किया गया।

जनवरी 2011 में सुप्रीम कोर्ट ने एक मामले की सुनवाई के दौरान यह स्वीकार किया कि वर्ष 1975 में आपातकाल के समय नागरिकों के मौलिक अधिकारों का हनन हुआ था। तत्कालीन अटॉर्नी जनरल नीरेन डे ने तब सुप्रीम कोर्ट में यह कबूल किया था कि जीने का अधिकार स्थगित है। आपातकाल के दौरान प्रेस की स्थिति को लेकर एक श्वेत पत्र एक अगस्त 1977 में संसद में पेश किया गया। 87 पेज के श्वेत पत्र से यह स्पष्ट हुआ कि तानाशाही की इच्छा रखने वाली इंदिरा गांधी ने अपनी अध्यक्षता में तय किया था कि प्रेस काउंसिल को भंग कर दिया जाये और तत्कालीन चारों समाचार एजेंसियों को मिलाकर एक कर दिया जाये, जिससे उन्हें सेंसर करने और संभालने में आसानी होगी।

राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी के जो नेता पिछले कुछ समय अक्सर लोकतंत्र बचाने की बात कर रहे हैं। संसद से सड़क तक वे संविधान की किताब लेकर घूमते हैं, उन्हें याद दिलाना जरूरी है कि उनकी पार्टी के नेता ने दादागिरी करके इस देश पर 21 महीने आपातकाल लगाकर लोगों को जेल में ठूंस दिया था। असल में, 1975 में लगाया हुआ आपातकाल इंदिरा गांधी की गलती नहीं थी, बल्कि इंदिरा गांधी का अहंकार था। दिसंबर 2024 को सदन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आपातकाल का उल्लेख किया और कहा, दुनिया में जब भी लोकतंत्र की चर्चा होगी तो कांग्रेस के माथे से कभी यह कलंक मिट नहीं सकेगा क्योंकि लोकतंत्र का गला घोंट दिया गया था। भारतीय संविधान निर्माताओं की तपस्या को मिट्टी में मिलाने की कोशिश की गयी थी।

इमरजेंसी के एलान से 13 दिन पहले इलाहाबाद में पड़ी इसकी नींव

तारीख 12 जून 1975। जगह, इलाहाबाद हाइकोर्ट परिसर। पूरे देश की नजरें यहां के जस्टिस जगमोहन लाल सिन्हा पर टिकी थीं। जस्टिस सिन्हा इंदिरा गांधी बनाम राजनारायण मामले में अपना फैसला सुनाने वाले थे। यह मामला साल 1971 के चुनावों से जुड़ा था। इस चुनाव में इंदिरा गांधी ने रायबरेली से राजनारायण को हराया था। हारने के बाद राजनारायण ने चुनावी नतीजों को कोर्ट में चुनौती दी थी। उन्होंने इंदिरा गांधी पर सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग, चुनाव में घोटाले और भ्रष्टाचार का आरोप लगाया था और मांग की थी कि यह चुनाव रद्द किया जाये। 12 जून की सुबह करीब 10 बजे जस्टिस सिन्हा अपने चैंबर से कोर्ट रूम में आये और अपना फैसला सुनाने लगे। फैसले में उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को चुनाव में धांधली का दोषी करार दिया और चुनाव रद्द कर दिया। साथ ही जस्टिस सिन्हा ने यह भी कहा कि आने वाले छह सालों तक इंदिरा चुनाव नहीं लड़ सकेंगी। ऐसा पहली बार हुआ था कि भारत के प्रधानमंत्री का चुनाव ही रद्द कर दिया गया। इंदिरा गांधी किसी भी कीमत पर प्रधानमंत्री की कुर्सी छोड़ने को तैयार नहीं थी। उन्होंने हाइकोर्ट के इस फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाने का फैसला किया। 23 जून को इंदिरा गांधी ने सुप्रीम कोर्ट में इस फैसले को रोकने के लिए याचिका दायर की। अगले ही दिन जस्टिस वीआर कृष्णा अय्यर ने याचिका पर सुनवाई करते हुए फैसला सुनाया। उन्होंने कहा कि वह हाइकोर्ट के फैसले पर पूरी तरह रोक नहीं लगायेंगे, लेकिन इंदिरा प्रधानमंत्री पद पर बनी रह सकती हैं। साथ ही यह भी कहा कि इस दौरान वह संसद की कार्यवाही में भाग तो ले सकती हैं, लेकिन वोट नहीं कर सकेंगी। सुप्रीम कोर्ट ने इंदिरा को थोड़ी राहत जरूर दी, लेकिन इंदिरा के लिए यह काफी नहीं था। इंदिरा गांधी के पास यह विकल्प था कि वह किसी और को प्रधानमंत्री बना सकती थीं, लेकिन कहा जाता है कि संजय गांधी इस बात के लिए राजी नहीं थे।

एक तरफ इंदिरा गांधी को कोर्ट से राहत नहीं मिली थी, दूसरी तरफ लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में पूरा विपक्ष सड़कों पर उतर कर इंदिरा के इस्तीफे की मांग कर रहा था। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के बाद तो विपक्ष और आक्रामक हो गया था। 24 जून को फैसला आया और 25 जून को जयप्रकाश नारायण ने दिल्ली के रामलीला मैदान में एक रैली का आयोजन किया। इस रैली में लाखों की तादाद में भीड़ जुटी, जिसे संबोधित करते हुए जयप्रकाश नारायण (जेपी) ने रामधारी सिंह दिनकर की कविता का अंश पढ़ते हुए कहा, सिंहासन खाली करो कि जनता आती है। जेपी ने इंदिरा गांधी को स्वार्थी और महात्मा गांधी के आदर्शों से भटका हुआ बताते हुए उनसे इस्तीफे की मांग की। इंदिरा गांधी अब चौतरफा घिर चुकी थीं। इधर जेपी की रैली खत्म हुई और उधर इंदिरा गांधी राष्ट्रपति भवन पहुंचीं। 25-26 जून की दरम्यानी रात को तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद से इंदिरा गांधी ने इमरजेंसी के आदेश पर दस्तखत करा लिये। 26 जून सुबह छह बजे कैबिनेट की आपातकालीन बैठक बुलायी गयी। अभी तक देश को इस फैसले की भनक तक नहीं थी। इंदिरा गांधी ने यह फैसला लेने से पहले अपने मंत्रिमंडल से सलाह तक नहीं ली थी। करीब आधे घंटे चली कैबिनेट बैठक के बाद इंदिरा गांधी ने आकाशवाणी पर देश में इमरजेंसी लगाने की घोषणा की। इसके साथ ही आजाद भारत के इतिहास के सबसे बुरे दौर की शुरुआत हो गयी। विपक्षी नेताओं समेत कांग्रेस के नेताओं को भी जेल में डाल दिया गया, प्रेस पर पाबंदी लगा दी गयी, नागरिकों के सारे अधिकार छीन लिये गये और देश में लोकतंत्र खत्म हो गया। अगले दिन देश में अखबार नहीं छप पाये, क्योंकि सरकार ने अखबार के दफ्तरों की बिजली काट दी थी। जो अखबार छप रहे थे, उन पर सख्त पाबंदिया लगायी गयीं। अखबारों में क्या छपेगा क्या नहीं, इसके लिए सरकार ने अखबारों के दफ्तर में अफसरों को तैनात कर दिया। इमरजेंसी के दौरान इंदिरा के छोटे बेटे संजय गांधी ने नसबंदी प्रोग्राम चलाया, जिसमें पकड़-पकड़ कर लोगों की नसबंदी की गयी। लाखों लोगों को जेल में डाल दिया गया। पूरा देश एक बड़ी जेल बन गया। इस दौरान इंदिरा गांधी ने नये-नये कानून लाकर संविधान को कमजोर करने की कोशिश भी की। इस भयंकर त्रासदी को पूरा देश 21 महीनों तक झेलता रहा। जनवरी 1977 में घोषणा की गयी कि 16 मार्च को देश में चुनाव होंगे। देश में चुनाव हुए और इंदिरा गांधी को जनता ने इमरजेंसी का सबक सिखा दिया। इंदिरा और संजय गांधी दोनों चुनाव हार गये। इसके बाद 21 मार्च 1977 को आपातकाल खत्म हो गया, लेकिन यह देश का सबसे काला वक्त साबित हुआ, जिसका दर्द लोगों के दिलों में आज भी जिंदा है।

कोयलांचल विवि में हो जनजातीय भाषा की पढ़ाई : डॉ लंबोदर महतो

पूर्व विधायक ने राज्यपाल को लिखा पत्र, कुरमाली, संथाली खोरठा जैसी जनजातीय और क्षेत्रीय भाषा की पढ़ाई शुरू कराने के लिए पहल करने की मांग

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। पूर्व विधायक डॉ लंबोदर महतो ने राज्यपाल सह कुलाधिपति संतोष कुमार गंगवार से बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर झारखंड की क्षेत्रीय और जनजातीय भाषा यथा कुरमाली, संथाली एवं खोरठा की पढ़ाई शुरू करने की मांग की है। उन्होंने राज्यपाल को इस बात से अवगत कराया है कि इस विश्वविद्यालय के 2017 में स्थापना के बाद अब तक कुरमाली, संथाली खोरठा जैसी जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा की पढ़ाई यहां के अंगीभूत महाविद्यालयों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर तक आरंभ नहीं की गयी है सिर्फ कुछ संबद्ध (एफिलिएटेड) महाविद्यालय में इसकी पढ़ाई की सामान्य व्यवस्था है। दूसरी तरफ स्नातकोतर पर टीआरएल का विभाग तक खोला नहीं गया है। इस कारण यहां के बहुत से छात्र- छात्राएं एवं शोधार्थी स्नातकोत्तर की पढ़ाई आरंभ नहीं होने से परेशान है, मायूस है और भटक रहे हैं। विशेष कर यहां की छात्राओं को इन भाषाओं की पढ़ाई छोड़ने को विवश होना पड़ रहा है। उन्होंने राज्यपाल को लिखे अपने पत्र में इस बात की ओर उनका ध्यान आकृष्ट कराया है कि राज्य के रांची विश्वविद्यालय, कोल्हान विश्वविद्यालय, नीलांबर पीतांबर विश्वविद्यालय, श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय आदि में क्षेत्रीय एवं जनजातीय भाषा की पढ़ाई स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर तक हो रही है पर बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय इन भाषाओं के अध्ययन अध्यापन से दूर है। उन्होंने कहा है कि बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय की ओर से पूर्व में इसके लिए शिक्षा निदेशालय को सूचित किया जा चुका है साथ ही जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं की अध्यापन व्यवस्था शुरू करने एवं सुचारु रूप से संबंधित विषय में आवश्यकता अनुसार पद सृजित करते हुए पढ़ाई आरंभ करने के नियमित निवेदन किया जा चुका है किंतु अब तक इस आशय का कोई आदेश विश्वविद्यालय को प्राप्त नहीं हुआ है।

रांची विवि में नामांकन के लिए अब 29 जुलाई तक करें आवेदन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। शैक्षणिक सत्र 2025-28 के लिए रांची विश्वविद्यालय में स्नातर पाठ्यकर्मों में दाखिले की प्रक्रिया जारी है। छात्रों की संख्या को देखते हुए विश्वविद्यालय प्रशासन ने चांसलर पोर्टल को 29 जुलाई 2025 तक के लिए फिर से खोलने का निर्णय लिया है, ताकि जो छात्र अब तक आवेदन नहीं कर पाये हैं, वे आवेदन कर सकें।

इस बार विश्वविद्यालय के पास कुल 70,000 सीटें उपलब्ध हैं, जिनमें से 43,000 से अधिक पर पहले ही आवेदन आ चुके हैं। विश्वविद्यालय प्रशासन का कहना है कि सीटों की भरपूर उपलब्धता

है और योग्य छात्रों को दाखिले के लिए पूरा मौका दिया जा रहा है।

बिहार, बंगाल, ओड़िशा और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों के छात्र भी बड़ी संख्या में आवेदन कर रहे हैं। विश्वविद्यालय की डीन स्टूडेंट वेलफेयर प्रोफेसर सुदेश कुमार साहू ने बताया कि 'चांसलर पोर्टल के माध्यम से दूसरे राज्यों से भी ऑनलाइन आवेदन आ रहे हैं और सभी का मूल्यांकन मेरिट के आधार पर किया जा रहा है।' उन्होंने यह भी बताया कि विश्वविद्यालय से जुड़े कॉलेजों में दाखिले की प्रक्रिया तेजी से चल रही है और जल्द ही पहली मेरिट लिस्ट जारी की जायेगी।

ये हैं जरूरी तारीखें

आवेदन की अंतिम तिथि- 29 जुलाई 2025

पहली मेरिट लिस्ट जारी होने की तिथि- 3 जुलाई 2025

दस्तावेजों की जांच और दाखिला- 4 जुलाई से 12 जुलाई तक।

अगर इसके बाद भी कुछ सीटें खाली रह जाती हैं तो चांसलर पोर्टल को फिर से खोला जा सकता है। रांची विश्वविद्यालय के कॉलेजों के साथ-साथ इसके स्नातक और स्नातकोत्तर विभागों में भी नामांकन की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। छात्र ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं और तय समय पर मेरिट लिस्ट जारी की जायेगी। प्रो साहू ने कहा, जो छात्र किसी कारणवश अब तक आवेदन नहीं कर सके थे, उनके लिए यह अच्छा अवसर है। विश्वविद्यालय का प्रयास है कि कोई भी छात्र मौका चूक न जाये।

वेदर

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	26.8 °c	23.0 °c
सूर्यास्त (आज) :		18.38 बजे
सूर्योदय (कल) :		05.04 बजे

आजाद सिपाही

रांची, गुरुवार, 26 जून, 2025

www.azadsipahi.in

कभी नोटबंदी तो कभी कोरोना की बात पर आपातकाल लागू किया गया : सुप्रियो

विपक्षी दलों के शासित राज्यों को लेकर केंद्र का नजरिया सही नहीं

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के केंद्रीय महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने देश में वर्ष 1975 में कांग्रेस सरकार की ओर से लगाये गये आपातकाल पर कहा कि 25 जून 1975 को देश में आपातकाल लगा था, लेकिन इस बात को समझना होगा कि उस दौर में क्या परिस्थितियां रही होंगी कि सरकार को इतना बड़ा निर्णय लेना पड़ा था। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में सब कुछ जानते हुए कभी नोटबंदी तो कभी कोरोनाकाल की बात पर लोगों को जिस तरह जबरन अघोषित आपातकाल में धकेला जाता है यह जग जाहिर है।

भट्टाचार्य बुधवार को पार्टी के हरमू स्थित कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि विपक्षी दलों के शासित राज्यों को लेकर केंद्र सरकार का नजरिया सही नहीं है। भट्टाचार्य ने कहा कि अपना हक और अधिकार मांगने पर या केंद्र के किसी नीति का विरोध करने पर इडी, सीबीआइ, आइटी जैसी जांच एजेंसियों को लगा दिया जाता है। झारखंड इसका भुक्तभोगी रहा है। उन्होंने कहा कि बिना विवेचना के लोगों को बंदी बना लिया जाता है। केंद्र का मकसद सिर्फ लोगों की आवाजों को बंद कर अपना इवेंट करना होता है। भट्टाचार्य ने कहा कि यह देश लोकतंत्र, संविधान, बाबा, अंबेडकर, बुद्ध, कबीर, गुरु नानक जैसे महान व्यक्तियों के साथ चलेगा न कि गलत लोगों के साथ।

झारखंड में नीली क्रांति को साकार करेगी सरकार : शिल्पी नेहा तिर्की

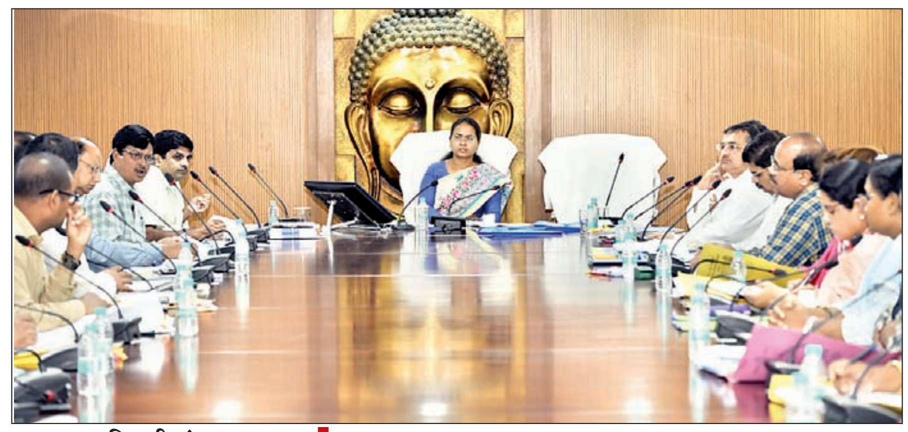

झारखंड में मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने की समीक्षा बैठक

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड सरकार मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के साथ नीली क्रांति को साकार करने के लिए वृहद कार्य योजना तैयार करेगी। कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने मत्स्य विभाग की बैठक में अधिकारियों को मत्स्य बीज और फीड को बढ़ावा देने पर जोर देने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि राज्य के हर एक जिले में मत्स्य विभाग फीड मिल की स्थापना का प्रस्ताव तैयार करेगा। अधिकारियों को विभाग की योजनाओं की चर्चा स्थानीय विधायक और मुखिया से करने और उनकी सलाह को प्राथमिकता में रखने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि योजना का लाभ हर बार किसी एक लाभुक के बजाये नये लाभुकों को देने का प्रयास करना चाहिए। पशुपालन एवं सहकारिता मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने लंबी लकीर खींचने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

तालाबों का जीर्णोद्धार: मिट्टी और गाद से भरे तालाबों की सूची जिला स्तर पर तैयार करने का निर्देश दिया गया और विभाग के स्तर पर इसका जीर्णोद्धार किया जायेगा।

फीड मिल स्थापना: राज्य के सभी जिलों में फीड मिल स्थापना का प्रस्ताव तैयार करने का निर्देश दिया गया और पहले से संचालित फीड मिल को अपग्रेड करने के लिए एक कमेटी का गठन करने को कहा गया।

अधिकारियों को निर्देश: अधिकारियों को निदेशालय के बजाय जिला भ्रमण पर जाने को कहा गया और कलस्टर बना कर काम करने की सलाह दी गयी। बैठक में मत्स्य निदेशक एचएन द्विवेदी, विशेष सचिव प्रदीप हजारी, विभाग के उपनिदेशक, प्रमंडलीय प्रभारी, जिला मत्स्य पदाधिकारी मौजूद थे।

राशिफल

डॉ एनके बेरा | 9431114351

मेष नौकरी में उच्चाधिकारियों से सहयोग से नये पद-अधिकार प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय में उन्नति होगी।

वृष बनते कार्य में रूकावटे खड़ी होगी। व्यवहार दक्षता अधिक रखनी होगी। आपकी लापरवाही का दूसरे फायदा उठायेंगे।

मिथुन व्यापार-व्यवसाय में उन्नति होगा। कामकाज अच्छा चलेगा.आमदनी बढ़ेगी, कर्ज की स्थिति में सुधार होगा।

कर्क मानसिक चिंता रहेगी। भाई-बहनों अथवा मित्रों वर्ग से कष्ट होगा, लिखा-पढ़ी के काम में विशेष सावधानी रखें।

सिंह अपने सोचे अनुसार काम कम होंगे। नौकरी में स्थानातंरण अथवा अधिकारियों के साथ मतभेद होने की संभावना।

कन्या आपको आकस्मिक धन लाभ होने की संभावना, रोजगार-व्यापार के कार्य तेजी से चलेगा और आपकी प्रगति होगी।

तुला आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, आपका काम बनेगा। किसी काम से आपको पैसा मिलेगा, आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

वृश्चिक लेखन-पठन-पाठन में रूचि कम होगी घर में बड़े लोगों का समागम होगा, भूमि-भवन-वाहन सुख की अनुकूलता रहेगी।

धनु रोजी-रोजगार में सफलता, यशस्वी कार्य करने का अवसर मिलेगा, अभी तक जो कोई इच्छा अधूरी रही हो।

मकर अपने क्षेत्र के प्रमुख व्यापारियों अधिकारियों एवं उच्चस्तरीय लोगों से आप सम्बन्ध बनाने की चेष्टा करें ।

कुंभ आवश्यक कामों में व्यवहार कुशलता सिद्धि और प्रसिद्धि देने वाली है, आवश्यक कार्यों में सूझबूझ प्रशंसनीय होगी।

मीन मानसिक उलझनें होगी, आपने जिस पर भी आज तक भरोसा किया होगा या स्वयं कष्ट उठाकर उसको सुख दिया होगा।

केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने केन्या में प्रवासी भारतीयों के साथ संवाद किया

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने केन्या प्रवास के दौरान नैरोबी में प्रवासी भारतीयों के साथ संवाद किया। उन्होंने प्रवासी भारतीयों के साथ भारत के विकास और उपलब्धियों पर चर्चा की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संदेश को साझा किया। संजय सेठ ने प्रवासी भारतीयों को भारत की परिवर्तनकारी विकास यात्रा और उपलब्धियों से अवगत कराया। उन्होंने भारत की मजबूत आर्थिक वृद्धि और इसके उभरते वैश्विक नेतृत्व पर प्रकाश डाला।

संजय सेठ ने उन्हें आतंकवाद को लेकर भारत की जीरो टॉलरेंस की नीति से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि विकसित भारत 2047 सिर्फ भारत का नहीं, बल्कि दुनियाभर में रह रहे हर भारतीय का संकल्प है। इस अवसर पर केन्या में भारत के कार्यवाहक उच्चायुक्त सुशील प्रसाद, उच्चायोग के अधिकारी, केन्या में प्रतिष्ठित भारतीय संगठनों के प्रतिनिधि मौजूद थे।

रांची दंगा के आरोपी महबूब आलम को अग्रिम जमानत देने से हाइकोर्ट का इनकार

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। साल 2022 में रांची के मेन रोड में हुए दंगा मामले के आरोपित महबूब आलम को झारखंड हाइकोर्ट ने अग्रिम जमानत देने से इनकार कर दिया है। बुधवार को सुनवाई के पश्चात न्यायाधीश आनंद सेन की अदालत ने महबूब आलम की अग्रिम जमानत याचिका को खारिज कर दिया। 10 जून 2022 को जुमे की नमाज के बाद रांची के मेन रोड इलाके में उपद्रव, पत्थरबाजी और गोलीबारी की घटना हुई थी। इस घटना के बाद डेली मार्केट थाना में बड़ी संख्या में लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गयी थी। मामले में कई लोगों को आरोपित बनाया गया है। महबूब आलम को भी इसी मामले में आरोपित बनाया गया है, जिसको लेकर आलम ने अग्रिम जमानत की मांग की थी लेकिन हाइकोर्ट ने याचिका पर सुनवाई के बाद उसे खारिज कर दिया।

संविधान हत्या दिवस कार्यक्रम भाजपा का नाटक है : आलोक

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा प्रदेश कांग्रेस के महासचिव आलोक कुमार दुबे ने भाजपा की ओर से देशभर में आयोजित किये जा रहे संविधान हत्या दिवस कार्यक्रम की आलोचना की है। उन्होंने इसे राजनीतिक नाटक करार देते हुए कहा कि यह पूरा आयोजन कांग्रेस पर हमला करने के बहाना मात्र है। उन्होंने कहा कि असल में यह भाजपा सरकार की उस घबराहट को दर्शाता है, जो राहुल गांधी की जय बापू, जय भीम, जय संविधान रैली की सफलता और जनसमर्थन से पैदा हुई है। दूबे ने कहा कि भाजपा को आपातकाल की याद सिर्फ तब आती है, जब वह अपने असफल शासन से जनता का ध्यान भटकाना चाहती है। उन्होंने कहा कि 50 वर्ष पुराने इतिहास को खोदकर भाजपा आज लोकतंत्र की सबसे बड़ी रक्षक बनने का दावा कर रही है, जबकि आज के भारत में सबसे बड़ा खतरा लोकतंत्र को उसी पार्टी से है जो सत्ता में बैठी है। भारत में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता खतरे में है, पत्रकार जेलों में हैं, विपक्ष की आवाज दबायी जा रही है, संसद में जनप्रतिनिधियों को बोलने नहीं दिया जा रहा और संवैधानिक संस्थाओं का दुरुपयोग चरम पर है। ऐसे में लोकतंत्र की हत्या का असली चेहरा वही है जो सत्ता की कुर्सी पर बैठा है।

भाजपा जनता को भटकाने का प्रयास कर रही: कांग्रेस

रांची। पिछले 11 वर्षों से देश अघोषित आपातकाल के दौर से गुजर रहा है, देश संगठित रूप से किये जा रहे हमले की चपेट में है। भाजपा के पूंजीवादी और राजनीतिक गठजोड़ ने देश के आम नागरिकों के मौलिक अधिकारों पर चरणबद्ध तरीके से हमला किया है और भाजपा आपातकाल को काला अध्याय बता कर जनता को देश की बदहाल राजनीतिक,आर्थिक परिस्थितियों से भटकाने का प्रयास कर रही है। भाजपा पर उक्त आरोप लगाते हुए प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता सोनाल शांति ने कहा कि पूरे संविधान को बदलने के लिए भाजपा ने जनता से चार सौ पार का जनादेश मांगा था लेकिन जनता ने उनकी मंशा को भांप कर उन्हें एकछत्र सत्ता संचालन से दूर रखा।

आपातकाल के 50 वर्ष पूरे होने पर भाजपा ने सेमिनार का आयोजन किया

अपने स्वार्थ के लिए कांग्रेस ने देश पर आपातकाल थोपा था : बाबूलाल

आजाद सिपाही संवाददाता

गिरिडीह। 25 जून 1975 को कांग्रेस ने आपातकाल लगाया था। इंदिरा गांधी की सरकार के द्वारा लगाये गये आपातकाल के 50 वर्ष हो चुके हैं। इस मौके पर भाजपा द्वारा सेमिनार का आयोजन किया गया। गिरिडीह के सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने बताया कि किस तरह अपने स्वार्थ के लिए कांग्रेस ने देश पर आपातकाल थोपा था, जो भारतीय लोकतंत्र के इतिहास का सबसे काला अध्याय है। उन्होंने कहा कि 12 जून 1975 को इलाहाबाद हाइकोर्ट का वह ऐतिहासिक फैसला, जिसमें इंदिरा गांधी के चुनाव को अवैध ठहरा दिया गया। साथ ही जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में देशभर में सरकार विरोधी आंदोलन भी तेज हो गया था। इन परिस्थितियों से बचने और सत्ता पर बने रहने के लिए इंदिरा गांधी ने आपातकाल लागू किया था।

25 जून 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल घोषित किया था। यह आपातकाल संविधान के अनुच्छेद-352 के अंतर्गत लगाया गया था। जिसमें उन्होंने 'आंतरिक अशांति' का हवाला दिया था. यह आपातकाल 21 महीने मार्च 1977 तक चला। इस दौरान सरकार द्वारा मौलिक अधिकारों को समाप्त कर दिया था हजारों राजनेताओं और कार्यकर्ताओं को जेल में डाल दिया गया था। प्रेस और मीडिया पर सेंसरशिप लागू कर दी गयी। आम जनता की आवाज को दबा दिया गया और सरकार के विरोध को देशद्रोह कहा जाने लगा था।

कांग्रेस की नीति-नीयत पर सवाल

बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि जिस कांग्रेस ने अपने स्वार्थ के लिए संविधान के साथ खिलवाड़ किया, आज उनके नेता राहुल गांधी संविधान खतरे में हैं जैसी बात कहते हैं। जबकि सच्चाई है कि मोदी के शासनकाल में संविधान की रक्षा हुई है। कांग्रेस जब सत्ता में थी तो किसी भी राज्य की सरकार (जहां दूसरे दल की सत्ता थी) को बर्खास्त करने का काम करती रही। लेकिन नरेंद्र मोदी की सरकार में ऐसा नहीं हुआ। कार्यक्रम के दौरान जमुआ विधायक मंजू कुमारी, प्रदेश मंत्री दिलीप वर्मा, पूर्व विधायक जय प्रकाश वर्मा, जिला महामंत्री संदीप डैंगेच और महेंद्र वर्मा, पूर्व जिलाध्यक्ष यदुनंदन पाठक जी, बिनय शर्मा, प्रकाश सेठ, जिप अध्यक्ष मुनिया देवी, दिनेश यादव, नुनूलाल मरांडी समेत अन्य उपस्थित थे।

जेपी के आह्वान से भयभीत इंदिरा गांधी ने लगाया था आपातकाल : कर्मवीर सिंह

रांची। भाजपा प्रदेश संगठन महामंत्री ने बुधवार को संविधान हत्या दिवस पर लोकनायक जयप्रकाश नारायण को याद किया। प्रदेश कार्यालय में उनके चित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर नमन किया। सिंह ने कहा कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले से इंदिरा गांधी की सांसद के रूप में सदस्यता समाप्त हो चुकी थी। उन्हें अपने पद से इस्तीफा देना चाहिए था, लेकिन गांधी ने न सिर्फ न्यायालय के आदेश की अवमानना की बल्कि देश के संविधान को ही कुचल डाला। आज संविधान बचाने की दुहाई देने वाली कांग्रेस ने लोकतंत्र की सारी मर्यादाओं को तार-तार किया है।

कांग्रेस की सत्ता की भूख का परिणाम था देश में आपातकाल : सुदेश महतो

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। आपातकाल के 50 वर्ष होने पर आजसू पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष और झारखंड के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश महतो ने कहा है कि आपातकाल कांग्रेस की सत्ता की भूख का परिणाम था। 25 जून 1975 को भारत के इतिहास में एक काला अध्याय लिखा गया, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने आपातकाल लागू कर लोकतंत्र के मूल सिद्धांतों को कुचल दिया। आज जब राहुल गांधी संविधान बचाओ की बात करते हैं तो यह हास्यास्पद लगता है। महतो ने कहा कि आपातकाल वह दौर था जब नागरिकों के मौलिक अधिकारों को छीन लिया गया, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर ताला लगा दिया गया और लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर किया गया। सुदेश महतो ने इस घटना को भारतीय लोकतंत्र पर एक गहरा आघात बताया, जिसने देश की जनता को मजबूर और असहाय बना दिया। महतो ने कहा कि तत्कालीन सरकार ने अपनी शक्ति को बनाये रखने के लिए लोकतंत्र की आत्मा को दबाने का प्रयास किया।

झारखंड में भी लोकतंत्र की रक्षा की आवश्यकता : देवशरण भगत

आजसू के मुख्य प्रवक्ता डॉ देवशरण भगत ने कहा कि आपातकाल ने देश के युवाओं और सामान्य नागरिकों को यह सिखाया कि सत्ता का दुरुपयोग कितना खतरनाक हो सकता है। झारखंड जैसे राज्य, जहां लोग अपनी पहचान और अधिकारों के लिए लंबे समय से संघर्ष करते रहे हैं, वहां लोकतंत्र की रक्षा करना और भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने आपातकाल के दौरान जेल में बंद उन नेताओं और कार्यकर्ताओं को याद किया, जिन्होंने लोकतंत्र की बहाली के लिए संघर्ष किया।

जेपी आंदोलन ने संघर्ष के लिए प्रेरित किया : प्रवीण प्रभाकर

झारखंड आंदोलनकारी प्रवीण प्रभाकर ने कहा कि 1975 की थोड़ी बहुत यादें उनके जेहन में हैं, क्योंकि वह उस वक्त 7 वर्ष के थे और दुमका में आंदोलनकारियों का जुलूस निकलता देख प्रेरित होते थे। आपातकाल में उनके पिता को दुमका और मामा को रांची में बिना कारण गिरफ्तार किया गया था। उन्होंने वर्तमान संदर्भ में आपातकाल से सीख लेकर लोकतंत्र को मजबूत करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आज भी कई बार झारखंड में भी सत्ता पक्ष द्वारा जनता की आवाज को दबाने की कोशिश की जाती है।

भारत गौरव विशेष पर्यटक ट्रेन से ज्योतिर्लिंग दर्शन सहित दक्षिण भारत यात्रा

आजाद सिपाही संवाददाता

कोलकाता। भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम लिमिटेड भागलपुर से भारत दर्शन पर्यटक ट्रेन ज्योतिर्लिंग दर्शन सहित दक्षिण भारत यात्राह्व का संचालन निम्नलिखित कार्यक्रमानुसार करेगाः यह टूर पैकेज स्लीपर क्लास एवं एसी 3-टियर क्लास में भारत गौरव पर्यटक ट्रेन द्वारा संचालित होगा, जो तिरुपति-रामेश्वरम- मदुरै-कन्याकुमारी - मल्लिकार्जुन जैसे दर्शनीय एवं धार्मिक स्थलों को कवर करेगा। ये सभी स्थान श्रद्धालुओं पर आध्यात्मिक और भावनात्मक रूप से गहरा प्रभाव छोड़ते हैं।

यात्रा की मुख्य विशेषताएं

यात्रा का नाम : भारत गौरव ज्योतिर्लिंग यात्रा सहित दक्षिण भारत यात्रा

अवधि : 11 रात/12 दिन

यात्रा की तिथि : 27.07.2025 से 07.08.2025

यात्रा/ट्रेन मार्ग : तिरुपति - रामेश्वरम - मदुरै - कन्याकुमारी झ्र मल्लिकार्जुन

बोर्डिंग/डीबोर्डिंग स्टेशनः

भागलपुर-जसीडीह-मधुपुर-बराकर-धनबाद-बोकारो स्टील सिटी-मुरी-रांची-राउरकेला-झारसुगुड़ा-चांपा-बिलासपुर-रायपुर-दुर्ग।

सीटों की संख्या:

स्लीपर क्लास - 720

एसी 3-टियर - 70

टूर मूल्य (प्रति व्यक्ति, भारतीय रुपये में, जीएसटी सहित) : श्रेणी प्रति व्यक्ति पैकेज मूल्य इकोनॉमी - 22,760/-

स्टैंडर्ड - 39,990/-

भारतीय रेलवे भारत गौरव ट्रेन योजना के अंतर्गत रेल पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए लगभग 33% की रियायत प्रदान कर रहा है। उपरोक्त मूल्य में यह रियायत शामिल है।

एसबीयू और यूनिवर्सिटी ऑफ एरिजोना के बीच शैक्षणिक सहयोग पर हुआ करार

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सरला बिरला यूनिवर्सिटी और यूनिवर्सिटी ऑफ एरिजोना, अमेरिका के बीच एक ऐतिहासिक शैक्षणिक करार पर सहमति बनी है। इस सहयोग के अंतर्गत दोनों संस्थान अनुसंधान, परामर्श, अकादमिक आदान-प्रदान और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों में मिलकर कार्य करेंगे। इस साझेदारी को औपचारिक रूप से मूर्त रूप देने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर एसबीयू के डायरेक्टर जनरल प्रो गोपाल पाठक और यूनिवर्सिटी ऑफ एरिजोना की वाइस प्रेसिडेंट प्रो. जेनी ली द्वारा हस्ताक्षर किये गये। इसका उद्देश्य वैश्विक शैक्षणिक मानकों के अनुरूप दोनों विश्वविद्यालयों के छात्रों और शिक्षकों को एक अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान करना है। इससे छात्र बहुपरिप्रेक्ष्यीय शिक्षण वातावरण में अध्ययन कर सकेंगे, जबकि विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में उन्हें नवीनतम शोध एवं प्रौद्योगिकी से जुड़े अवसर भी प्राप्त होंगे। एसबीयू की कुलपति जयश्री मोहता, प्रतिकुलाधिपति बिजय कुमार दलान, शासी निकाय के सदस्य अनंत जाटिया, कुलपति प्रो सी जगनाथन और राज्यसभा सांसद डॉ प्रदीप वर्मा ने इस सहयोग पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसे विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण के लिए एक बड़ा कदम बताया। यह करार न केवल एसबीयू के शैक्षणिक क्षेत्र को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलायेगा, बल्कि भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए वैश्विक सहयोग के नये द्वार भी खोलेगा।

साईं नाथ विश्वविद्यालय में नशा मुक्ति अभियान

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। साईं नाथ विश्वविद्यालय रांची ने बुधवार को एक सार्थक और सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पहल करते हुए नशा मुक्ति अभियान का सफल आयोजन अपने बहुउद्देश्यीय हॉल में किया। इस अभियान का उद्देश्य नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता फैलाना और विद्यार्थियों समेत स्थानीय समुदाय को एक स्वस्थ, संयमित तथा नशा-मुक्त जीवन के लिए प्रेरित करना था। कार्यक्रम का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. एसपी अग्रवाल, मुख्य अतिथि अनिल कुमार तिवारी, ओरमांझी थाना प्रभारी और सम्मानित अतिथि उप निरीक्षक अमित कुमार एवं सतीश कुमार ने संयुक्त रूप से किया। कुलपति द्वारा सभी विशिष्ट अतिथियों का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया। अपने प्रेरक संबोधन में कुलपति डॉ. एसपी अग्रवाल ने कहा, यह आयोजन केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि हमारे युवा समाज को नशे से मुक्ति दिलाने का एक संकल्प है। एक ऐसा संकल्प, जो जीवन को स्पष्ट दिशा और लक्ष्य प्रदान करता है। उन्होंने अपने संबोधन में यह भी जोड़ा कि सपने वही साकार होते हैं, जिनके विचार स्पष्ट और जीवन नशा-मुक्त होता है। मुख्य अतिथि अनिल कुमार तिवारी ने अपने वक्तव्य में नशे के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आर्थिक दुष्प्रभावों को विस्तारपूर्वक समझाते हुए युवाओं से नशा छोड़ने का आह्वान किया। सम्मानित अतिथि अमित कुमार और सतीश कुमार ने छात्र-छात्राओं को नशा छोड़ने के लिए प्रेरित किया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सभी विभागों के शिक्षक, शिक्षिकाएं, अधिकारीगण और छात्र-छात्राएँ बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

युवा कांग्रेस एक मजबूत प्लेटफॉर्म : अजय नाथ शाहदेव

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। बुधवार को धुर्वा सेक्टर 3 में युवा कांग्रेस की बैठक हुई जिसमें युवा कांग्रेस का मेंबरशिप पोस्टर लॉन्च किया गया। इस मौके पर अजय नाथ शाहदेव ने कहा कि युवा कांग्रेस एक मजबूत प्लेटफॉर्म है जिसमें बढ़-चढ़कर युवा भाग लेंगे। झारखंड के युवाओं के लिए असली मौका है। अब सिर्फ नारे नहीं, नेतृत्व भी करें। कांग्रेस में जुड़िए, चुनाव लड़िए, नेता बनिए। युवा कांग्रेस नेता रोहित सिन्हा ने कहा कि युवा कांग्रेस में हर मेहनती कार्यकर्ता को बराबरी से आगे बढ़ने का मौका मिलता है। युवाओं के हाथ में देश का लोकतांत्रिक भविष्य है, आइए, संविधान के साथ खड़े हों, कांग्रेस के साथ आगे बढ़ें। उन्होंने कहा कि 15 जुलाई से 15 अगस्त तक मेंबरशिप के माध्यम से वोटिंग की जायेगी, जिसकी उम्र सीमा 18 से 35 वर्ष तक होगी। इसमें प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश महासचिव, जिला अध्यक्ष, जिला महासचिव, विधानसभा अध्यक्ष और ब्लॉक अध्यक्ष के पदों के लिए चुनाव होगा।

युवाओं के हाथ में देश का लोकतांत्रिक भविष्य, संविधान के साथ खड़े हों : रोहित सिन्हा

इस बैठक में मुख्य रूप से उपस्थित जोनल कोऑर्डिनेटर महानगर रजत थापा, जोनल कोऑर्डिनेटर ग्रामीण प्रदीप सिंह, हटिया विधानसभा के प्रत्याशी अजय नाथ शाहदेव, झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव बबलू शुक्ला, युवा कांग्रेस नेता रोहित सिन्हा, अनंत झा, साकिब जिया, धुर्वा मंडल अध्यक्ष प्रणव सिंह, रोहित सिंह, जस्सी आर्या, विक्रांत, साहिल, आकाश, विराट, सौरव एवं सहित सैकड़ों युवा मुख्य रूप से उपस्थित थे।

महत्वपूर्ण खबरें

डॉ कमलेश कुमार ने राज्यपाल से मुलाकात कर शिक्षा से संबंधित कई सुझाव दिये

रांची (आजाद सिपाही)। डॉ कमलेश कुमार ने बुधवार को राज्यपाल से मुलाकात कर झारखंड में उच्च शिक्षा में सुधार के लिए रणनीतिक सुझाव दिये। उन्होंने कहा कि झारखंड के विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा की प्रगति के प्रति गहरी प्रतिबद्धता है, लेकिन गुणवत्ता, समावेशन और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों में रणनीतिक हस्तक्षेप की आवश्यकता है। डॉ कमलेश कुमार ने वर्तमान नियामक ढांचे के तहत, राज्य विश्वविद्यालयों में पदोन्नति प्रक्रिया झारखंड लोक सेवा आयोग के माध्यम से होती है, जिससे योग्य संकाय सदस्यों की पदोन्नति में देरी होती है। डॉ कमलेश कुमार ने सुझाव दिया कि मौजूदा कानूनों या सरकारी अधिसूचनाओं में संशोधन किया जाये ताकि पदोन्नति की शक्तियां विश्वविद्यालयों के कार्यकारी निकायों को सौंपी जा सकें। शिक्षकों की पदोन्नति और नियुक्ति की देखरेख के लिए एक विश्वविद्यालय सेवा आयोग का गठन किया जा सकता है। इस मौके पर उनके साथ झारखंड हाइकोर्ट के अधिवक्ता वेंकटेश कुमार भी मौजूद थे।

गरुड़ आइ हॉस्पिटल ने लगाया आइ कैंप

रांची (आजाद सिपाही)। बिरसा मुंडा एयरपोर्ट में गरुड़ आइ हॉस्पिटल के द्वारा बुधवार को कैंप का आयोजन किया गया। इस कैंप में लोगों ने बढ़-चढ़ कर अपने आंखों की जांच करवायी। डॉ हर्षिता ने कहा कि यहां पर कर्मचारियों सहित एक सौ से अधिक लोगों की आंखों की जांच की गयी। इसमें से पांच लोगों को मोतियाबिंद और पांच को रेटिना की समस्या थी। अन्य लोगों को चश्मे का पावर दिया गया। कैंप में मुस्कान, बबलू, तनवीर सहित अन्य लोग मौजूद थे।

उत्थान संगठन जनहित सेवा की पहल पर 51 जोड़ियों की शादी संपन्न

रांची (आजाद सिपाही)। उत्थान संगठन जनहित सेवा की ओर से अध्यक्ष रेणु सिंह के नेतृत्व में रांची के पुराना विधानसभा मैदान में भव्य सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें 51 जोड़ों ने वैवाहिक जीवन में प्रवेश किया। इस समारोह के मुख्य अतिथि समाजसेवी टाइगर संदीप नायक और मुकेश कुमार नायक उपस्थित थे। उन्होंने नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद देते हुए संगठन के इस मानवीय प्रयास की सराहना की। वहीं, टाइगर संदीप नायक ने कहा, पिछले 10 वर्षों से उत्थान संगठन समाजहित में निरंतर काम कर रहा है, चाहे वह महिलाओं को रोजगार दिलाने की बात हो या जरूरतमंदों की हर प्रकार से मदद।

25 जून इतिहास का काला दिवस है : गोविंदा वाल्मीकि

रांची (आजाद सिपाही)। 25 जून को आपातकाल के 50 साल पूरे हो गये हैं। भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा झारखंड प्रदेश आइटी सेल के सहसंयोजक गोविंदा वाल्मीकि ने कहा कि 25 जून इतिहास का काला दिवस है। इस दिन को संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। आज के दिन संविधान की हत्या भारत के नागरिकों को प्रताड़ित करके दी गयी, जो कांग्रेस के कार्यकाल का कुपित समय था। इसमें असंख्य निर्मम हत्याएं हुईं। कांग्रेस ने देश को हमेशा से ही ऐसी विकट परिस्थितियों में डाला है। यहां अमानवियता का प्रगाड़ उदाहरण है। इंदिरा गांधी ने राष्ट्रपति से इमरजेंसी लगवाकर अपने विरोधियों को दमन करने की नीति बनायी। सत्ता की लालसा में वह देश के कानून को कुचल दिया। लाखों निर्दोष जेल में डाल दिये। भाजपा एक शक्तिशाली संगठन है, जो कांग्रेस को मुंहतोड़ जवाब देता आ रहा है, और आगे भी देगा।

निर्मला कॉन्वेंट हाइस्कूल में नशे को ना, जिंदगी को हां

रांची (आजाद सिपाही)। निर्मला कॉन्वेंट हाइस्कूल, एदलहातू, मोराबादी, रांची में नशे को ना, जिंदगी को हां विषय पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराना और उन्हें एक स्वस्थ, सकारात्मक जीवन की ओर प्रेरित करना था। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने नशे के खिलाफ पोस्टर, भाषण और नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जागरूकता फैलाई। स्कूल परिसर में नशे को ना थीम पर एक रंगोली प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी। अतिथियों ने छात्रों के साथ संवाद कर उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। कार्यक्रम में उपस्थित विशिष्ट अतिथियों ने छात्रों को नशे के बढ़ते प्रभाव और उससे होने वाले सामाजिक व मानसिक नुकसान के बारे में बताया। उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों और घटनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि वे नशे से दूर रहें और अपने जीवन में सकारात्मक लक्ष्य निर्धारित करें। विद्यालय के सचिव सीमा शर्मा ने झारखंड सरकार और पुलिस प्रशासन का आभार जताते हुए कहा कि इस तरह के कार्यक्रम समाज में जागरूकता फैलाने का माध्यम बनते हैं और विद्यार्थियों को जीवन के सही निर्णय लेने में मदद करते हैं। इस मौके पर प्राचार्य विजय कुमार शर्मा, जन जीवन कुमार बेसरा ,मनोज कुमार, पूजा विभूति, विद्यालय के शिक्षक- शिक्षिका आशुतोष कुमार, किरण कुमारी, सुधीर कुमार, अनामिका छेत्री, निधि कुमारी सहित कई विद्यार्थीगण भी उपस्थित थे।

महत्वपूर्ण खबरें

सेंटेविटा अस्पताल में चैरिटी इवेंट आयोजित

रांची (आजाद सिपाही)। सेंटेविटा अस्पताल में एक विशेष चैरिटी कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जो स्वर्गीय रमेश लाल वर्मा की पुण्य स्मृति को समर्पित था। यह आयोजन अस्पताल की कार्यकारी निदेशक रेशमा साहू द्वारा उनके स्वर्गीय पिता की याद में आयोजित किया गया। इस चैरिटी कार्यक्रम के अंतर्गत सेंटेविटा अस्पताल के कर्मचारियों के बच्चों को स्कूल बैग, पेंसिल बॉक्स, लंच बॉक्स, पानी की बोतलें और शैक्षणिक सामग्री वितरित की गयी। साथ ही बच्चों को मनोरंजक खेल सामग्री भी दी गयी। समाजसेवी रेशमा साहू ने कहा कि यह कार्यक्रम मेरे पिताजी के समाज सेवा के सपनों को साकार करने की दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

अदाणी फाउंडेशन ने लगाया रक्तदान शिविर, 35 यूनिट से अधिक रक्त संग्रहित

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। अदाणी फाउंडेशन द्वारा वॉलंटरी ब्लड डोनर्स एसोसिएशन के सहयोग से शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज सह अस्पताल में एक दिवसीय रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कुल 35 यूनिट से अधिक रक्त का संग्रह किया गया। यह आयोजन अदाणी समूह के चेयरमैन गौतम अदाणी के जन्मदिवस को अदाणी दिवस के रूप में मनाने के उपलक्ष्य में किया गया। हर वर्ष इस अवसर पर समूह द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन कर अधिक से अधिक लोगों को रक्तदान के लिए प्रेरित किया जाता है। शिविर की शुरुआत गोंदुलपारा खनन परियोजना के प्रमुख पुंडरीक मिश्रा द्वारा रक्तदान कर की गयी।

झारखंड राज्य धार्मिक न्यास बोर्ड की बैठक में चार प्रस्तावों पर मुहर

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड राज्य धार्मिक न्यास बोर्ड की 09 वीं बैठक बोर्ड कार्यालय में बुधवार को अध्यक्ष जयशंकर पाठक की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में मुख्य रूप से सदस्य राकेश सिन्हा, संजीव तिवारी, अजय नारायण मिश्रा सम्मिलित हुए। उक्त आशय की जानकारी देते हुए धार्मिक न्यास बोर्ड के सदस्य राकेश सिन्हा ने बताया कि बोर्ड में चार प्रस्तावों पर मुहर लगी, जिसमें सर्वप्रथम राज्य कैबिनेट से धार्मिक न्यास बोर्ड को प्रत्येक साल 3 करोड़ रुपये के आवंटन पर मुख्यमंत्री, वित्त मंत्री, सहित मंत्रिपरिषद के सभी सदस्यों के प्रति आभार जताते हुए धन्यवाद प्रेषित किया और कहा कि इस कदम से बोर्ड सक्षम और सबल तरीके से अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकेगा। द्वितीय प्रस्ताव में सर्वसम्मति से यह पारित हुआ कि श्रावणी मेला की तैयारी सभी प्रसिद्ध शिवालयों में उचित व्यवस्था के साथ हो, इसके लिए प्रशासन के साथ बोर्ड के सदस्य और कर्मचारी भी तैनात रहेंगे। तृतीय बोर्ड में नियुक्त सभी स्तर के कर्मचारियों बोर्ड के सदस्यों को स्वास्थ्य बीमा देने का प्रस्ताव पारित किया गया। चतुर्थ बोर्ड के द्वारा मंदिर प्रबंधन और सामाजिक दायित्वों पर एक या दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित करने पर निर्णय लिया गया। इसके साथ जो मंदिर अभी तक निबंधन नहीं हुए उनको नोटिस जारी कर अविलंब निबंधन होने को कहा गया अन्यथा उक्त मंदिर में न्याय बोर्ड कमेटी का गठन करने का भी निर्णय बोर्ड ने लिया।

प्रो डॉ संजय कुमार सिंह रांची विवि के परीक्षा नियंत्रक प्रभारी बने

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड के राज्यपाल-सह-कुलाधिपति के आदेश पर रांची विश्वविद्यालय के कुलपति ने विश्वविद्यालय के राजनीति शास्त्र विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ संजय कुमार सिंह को परीक्षा नियंत्रक प्रभारी नियुक्त किया है। यह नियुक्ति राज्यपाल सचिवालय, राजभवन, रांची द्वारा पत्र संख्या आरयू -03/2021-1685/रा०शि० 23 जून, 2025 के माध्यम से की गयी सिफारिश के आधार पर की गयी है। डॉ सिंह छह माह या नियमित नियुक्ति होने तक, जो भी पहले हो, इस पद पर रहेंगे।

शांति स्किन एंड लेजर सेंटर में मुफ्त विटिलिगो शिविर का आयोजन

रांची (आजाद सिपाही)। रांची के शांति स्किन एंड लेजर सेंटर में बुधवार को एक विशेष नि:शुल्क विटिलिगो (सफेद दाग) परामर्श एवं उपचार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 5 मरीजों को निशुल्क मेलानोसाइट ट्रांसप्लांट सर्जरी दी गयी। शांति स्किन एंड लेजर सेंटर मेलानोसाइट ट्रांसप्लांट सर्जरी करता है। सेंटर में आधुनिक और सुरक्षित तकनीक का उपयोग किया जाता है, जैसे कि यूवीए और नैरोबैंड यूवीबी फोटोथेरपी सिस्टम और एक्ससीमर थेरपी। शिविर डॉ रविशंकर द्विवेदी के देखरेख में संपन्न हुआ।

किसानों का धान बीज व फसल को नुकसान होने से आक्रोशित ग्रामीणों ने सड़क जाम की

जरमुंडी(दुमका) (आजाद सिपाही)। एनएच 114ए के निर्माण कार्य में बरती जा रही लापरवाही के कारण जरमुंडी विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत पहरीडीह पंचायत के जमुवा नवाडी गांव की सैकड़ों एकड़ जमीन बड़े टापू में तब्दील हो गयी है। एन एच 114ए के सामने लगभग 40 लोगों का जमीन पूरी तरह पानी में डूब गयी हैं। ग्रामीणों ने बताया कि इसमें से 10-15 खेतों में धान का बीज भी है। कुछ लोगों का घर भी डूबने के कगार पर हैं। ग्रामीणों ने बताया कि हालात बद से बद्तर हो गये हैं। ग्रामीणों ने कहा कि मजबूर होकर बुधवार को हमलोगों ने सड़क को जाम कर दिया था। मामले की सूचना ग्रामीणों द्वारा स्थानीय विधायक देवेंद्र कुमार को दी गयी। सूचना मिलते ही विधायक प्रतिनिधि मिथिलेश कुमार पहुंचे और ग्रामीणों को समझाते हुए कहा कि हमने भी मामले में फोन से कम्पनी को निर्देश दिया था कि इस क्षेत्र में बरसात के पहले काम करवा दीजिए नहीं तो दिक्कत होगी जो आज हो ही गयी। ग्रामीणों एवं जरमुंडी थाना प्रभारी श्याम सुंदर मंडल के सामने कंपनी वाले को फोन कर विधायक प्रतिनिधि मिथलेश सिंह ने कहा कि गांव के लोगों का धान का बीज एवं फसल को नुकसान हुआ है। उनको उचित मुआवजा मिलना चाहिए। कंपनी ने दो दिन का समय लिया है और कहा कि सभी का समाधान हो जायेगा।

ऐतिहासिक रथयात्रा कल : श्रद्धालुओं का उमड़ेगा सैलाब

भगवान जगन्नाथ, भाई बलभद्र और माता सुभद्रा का नेत्रदान आज

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। धुर्वा स्थित जगन्नाथपुर मंदिर केवल आस्था और विश्वास का केंद्र नहीं है, बल्कि यह आदिवासी और सदान समुदाय के सम्मिलित सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक भी है। इसी आस्था के दरबार में 26 जून को श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ने की संभावना है, क्योंकि गुरुवार दोपहर बाद भगवान जगन्नाथ, भाई बलभद्र और माता सुभद्रा का नेत्रदान अनुष्ठान संपन्न होगा। इसके अगले दिन 27 जून को ऐतिहासिक रथ मेला का आयोजन होगा, जिसमें लाखों श्रद्धालु भगवान जगन्नाथ के दर्शन के लिए जुटेंगे।

फाइल फोटो

26-27 को सामान्य वाहनों का प्रवेश बंद

ट्रैफिक संचालन को ध्यान में रखते हुए 26 और 27 जून को सामान्य वाहनों का धुर्वा गोलचक्कर से पुराने विधानसभा भवन की ओर परिचालन बंद किया गया है। इसके अलावा प्रभात तारा मैदान से शालीमार बाजार की ओर भी सामान्य वाहनों की इंट्री बंद की गयी है। एचइसी और बिरसा चौक की ओर से आने वाले वाहन सवार शहीद मैदान से शालीमार बाजार होते हुए प्रभात तारा मैदान से जेएससीए स्टेडियम से दाहिने मुड़कर तिरिल मोड़ होते हुए अपने गंतव्य की ओर परिचालन कर सकेंगे।

ट्रैफिक में बदलाव

जगन्नाथपुर में रथ यात्रा और मेला को लेकर 26 जून से इलाके के ट्रैफिक रूट में बदलाव किया गया है। धुर्वा गोलचक्कर, नया सराय रोड, जेएससीए स्टेडियम और पुराना विधानसभा रोड पर सुबह 8 से रात 12 बजे तक वाहनों का प्रवेश पूरी तरह से बंद रहेगा। नयासराय और जेएससीए स्टेडियम की ओर से आने वाले वाहन तिरिल मोड़ तक ही आ सकेंगे। इसके अलावा शहीद मैदान से मौसीबाड़ी गोलचक्कर और प्रभात तारा मैदान तिराहा से जगन्नाथपुर बाजार तक वाहनों की इंट्री बंद रहेगी। इस संबंध में बुधवार को ट्रैफिक एसपी कैलाश करमाली ने बताया कि वाहन सवार रिंग रोड से ही अपने गंतव्य तक परिचालन कर सकेंगे।

साथ ही ट्रैफिक एसपी ने जगन्नाथपुर ट्रैफिक थानेदार को स्पष्ट निर्देश दिया है कि वे खुद अपनी टीम के साथ लगातार भ्रमणशील रहते हुए यातायात व्यवस्था पर पूरी नजर रखेंगे।

पार्किंग की व्यवस्था

तुपुदाना, हटिया, खूंटी, धुर्वा गोलचक्कर से आने वाले वाहनों के लिए धुर्वा गोलचक्कर के पश्चिम स्थित खाली मैदान और प्रभात तारा के पास मैदान में पार्किंग की व्यवस्था रहेगी। बालालोंग या धुर्वा बस स्टैंड व नया हाइकोर्ट की ओर से आने वाले वाहनों के लिए प्रभात तारा मैदान में नया सराय और न्यू विधान सभा रोड से आने वाले वाहनों के लिए तिरिल मोड़ और हेलीपैड मैदान अरगोड़ा या बिरसा चौक की ओर से आने वाले वाहनों के लिए शहीद मैदान एवं विधानसभा मैदान में पार्किंग की व्यवस्था की गयी है। धुर्वा सेक्टर-एक या दो की ओर से आने वाले वाहनों के लिए मौसीबाड़ी गोलचक्कर के बगल में खाली मैदान में पार्किंग की व्यवस्था की गयी है।

सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम

डीआइजी सह एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने बताया कि जगन्नाथपुर मेला और रथ यात्रा को लेकर सुरक्षा के कड़े और पुख्ता इंतजाम किये गये हैं। पर्याप्त संख्या में सुरक्षा बलों की तैनाती की जायेगी। वॉच टावर सीसीटीवी कैमरे और ड्रोन कैमरे से निगरानी की जायेगी। सादे लिबास में भी महिला पुलिस और पुरुष पुलिस की तैनाती की गयी है।

झारखंड पुलिस मेंस एसोसिएशन ने उच्च न्यायालय में अवमानना याचिका दाखिल की

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड पुलिस एसोएिशन के प्रांतीय अध्यक्ष कर्ण सिंह ने झारखंड उच्च न्यायालय में अवमानना याचिका दाखिल की। झारखंड सरकार के विरुद्ध पुलिस कर्मियों का एसीपी एमएसीपी डब्ल्यू (एस) 3793/2019 झारखंड पुलिस मेंस एसोसिएशन बनाम झारखंड सरकार के संबंध में उच्च न्यायालय झारखंड रांची के दिनांक 16/8/2024 के पारित आदेश को राज्य सरकार द्वारा अभी तक लागू नहीं करने के कारण रांची हाइकोर्ट में अवमानना याचिका दायर की गयी है। यह जानकारी कोषाध्यक्ष बोकारो मृत्युंजय सिंह ने दी है।

झारखंड में 8वीं बोर्ड से वंचित छात्रों के लिए विशेष परीक्षा का आयोजन

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड अधिविद्य परिषद्, रांची द्वारा कक्षा आठ की विशेष परीक्षा 2025 को लेकर एक महत्वपूर्ण सूचना जारी की गयी। यह परीक्षा उन छात्रों के लिए आयोजित की जा रही जो किसी कारणवश कक्षा आठ की बोर्ड परीक्षा 2025 में सम्मिलित नहीं हो पाये थे। परिषद् ने अभिभावकों, विद्यालय प्रमुखों और संबंधित पदाधिकारियों को सूचित किया है कि ऐसे छात्र-छात्राओं के लिए परीक्षा आवेदन पत्र ऑनलाइन भरा जायेगा। ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया परिषद की आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से की जायेगी। जिन छात्रों ने पहले ही परीक्षा फॉर्म भरा था और परीक्षा में अनुपस्थित रहे, उन्हें दोबारा फॉर्म भरने की आवश्यकता नहीं है। उनका पुराना प्रवेश पत्र ही वैध माना जायेगा। वहीं, नये छात्रों के लिए सभी आवश्यक दिशा-निर्देश वेबसाइट पर उपलब्ध कराये गये हैं। जिला शिक्षा पदाधिकारी द्वारा स्वीकृत विद्यालयों के वे छात्र ही इस विशेष परीक्षा में सम्मिलित हो सकेंगे जिन्हें ऑनलाइन स्वीकृति प्रदान की गयी हो। इसके लिए विद्यालयों को परिषद द्वारा पूर्व में प्रदान किये गये यूजर आइडी और पासवर्ड का प्रयोग करते हुए आवेदन भरना होगा। ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि 25 जून 2025 से 7 जुलाई 2025 तक तय की गयी है।

सरकार स्पष्ट करे कि भारत में आदिवासी कौन हैं और जनजाति कौन : परिषद

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद के कार्यालय में बुधवार को बैठक हुई। इस बैठक में परिषद के सभी पदाधिकारियों ने आदिवासी सभ्यता, संस्कृति और आदिवासीयों के प्रति सरकार के सौतेलापन व्यवहार पर नाराजगी जाहिर की। अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद् के अध्यक्ष सत्यनारायण लकड़ा ने कहा कि पूरे विश्व विशेष कर भारत में आदिवासी सबसे पहले निवासी रहे हैं। इस बात को बुद्धिजीवियों, मानव शास्त्रीयों एवं इतिहासकारों ने भी स्वीकारा है। भारत के उच्चतम न्यायालय ने भी माना है कि आदिवासी ही देश की धरती के प्रथम निवासी हैं।

देश में प्राचीन काल में भी मुगल साम्राज्य से अंग्रेजी हुकूमत के समय में बोलचाल की भाषा में आदिवासी शब्द का उपयोग होता था। भारत की आजादी के बाद जब संविधान बना तब उसमें आदिवासी शब्द को विलोपित करते हुए उसकी जगह जनजाति शब्द लगा दिया गया। यह बड़ी विडंबना की बात है और आदिवासी समाज में इससे असमंजस की स्थिति बनी हुई है।

सरकार यह स्पष्ट करे कि आदिवासी कौन हैं और जनजाति कौन है? उन्होंने यह भी कहा कि भारत सरकार ने शुरू से ही आदिवासियों को खिचड़ी बना कर रख दिया है। एक तरफ कुछ आदिवासी धर्म परिवर्तन करके विदेशी धर्म अपना लिये हैं और उनकी संस्कृति, परंपरा, मान्यतायें, रीति रीवाज, रहन सहन एवं खान-पान को अपना चुके हैं। संविधान में आदिवासी शब्द की परिभाषित, मूल्य तत्व को ही सरकार ने खत्म कर दिया है और दूसरे धर्म अपनाने वाले आदिवासी ही सरकार की योजनाओं का 90% फायदा उठा रहे हैं और मूल आदिवासी मुक-बधिर बने हुए हैं।

परिषद के महासचिव जादो उरांव ने इस संबंध में कहा कि सरकार की ऐसी चापलूसी नीति कब तक चलेगी? सरकार की गलत नीति के कारण आदिवासी समाज राष्ट्र की मुख्य धारा से कोसों दूर हैं। सरकार की नीति के मुताबिक लगता है कि आदिवासियों को देश में जीने का अधिकार नहीं है। सरकार को यह स्पष्ट करना चाहिए कि भारत में आदिवासी कौन हैं और जनजाति कौन है? इस बैठक में मुख्य रूप से परिषद के अध्यक्ष सत्यनारायण लकड़ा, कार्यकारी अध्यक्ष बाना मुंडा, महासचिव जादो उराव, संयुक्त सचिव विमल कच्छप, अजय लिंडा, दीपक जायसवाल, जय बक्शी, प्रदीप कुमार आदि उपस्थित थे।

रांची में खुला फुलौरी द बिरयानी हाउस

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सुचित कुमार सोनी ने इंजीनियरिंग छोड़ अपना बिजनेस स्टार्टअप कर हैदराबाद में फुलौरी द बिरयानी हाउस की शुरूआत की। अब इसका दूसरा आउटलेट अपने होम टाउन रांची में खोला है। बुधवार को जिलाध्यक्ष भारतीय जनता युवा मोर्चा रांची ग्रामीण विवेक आनंद जायसवाल ने बतौर मुख्य अतिथि फुलौरी द बिरयानी हाउस का रिबन काटकर उद्घाटन किया। इस अवसर पर विवेक आनंद जायसवाल ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि फुलौरी द बिरयानी हाउस रांची के लोगों को जायका के लिये एक नया डेस्टिनी बनेगा। वहीं प्रोप्राइटर सुचित कुमार सोनी ने कहा कि हैदराबाद में फुलौरी द बिरयानी हाउस अपनी पहचान बना चुकी है। झारखंड की राजधानी रांची में दूसरा आउटलेट खोल रहे है। यहां पहले से कई बिरयानी हाउस है लेकिन फुलौरी द बिरयानी हाउस हैदराबादी बिरयानी का वही स्वाद दिलायेगा, जिसके आप मुरीद हैं। उन्होंने कहा कि रांची के लोगों को पहलीबार हैदराबाद के फेमस डिश मटन मरग मिलेगा। इसके आलावा मटन के कई डिश भी मिलेगा जो हैदराबाद में फेमस है। इस मौके पर आशीष बर्मन, अनूप कुमार अग्रवाल, आशुतोष कुमार अग्रवाल अधिवक्ता झारखंड उच्च न्यायालय सहित अन्य मौजूद थे।

सोच संस्था का पौधरोपण पखवाड़ा अभियान

रांची (आजाद सिपाही)। सोच संस्था ने भारत सरकार के जीरो कार्बन 2070 लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए झारखंड के 16 विद्यालयों में वृक्षारोपण अभियान चलाया। यह अभियान 12-24 जून तक चलाया गया। इस अभियान में राष्ट्रीय आदिवासी छात्र छात्रावास समिति के सहयोग से दुमका, गुमला, सिमडेगा, रांची जैसे जिलों में महोगनी, नीम, आम, जामुन जैसे 32,600 से अधिक पौधे लगाये गये। इस पहल में ईसीओ पथ संस्था का इस अभियान में विशेष योगदान रहा, जिसने वृक्षारोपण के लिए आवश्यक संसाधन और मार्गदर्शन प्रदान किया। सोच के सीईओ अश्विनी प्रताप सिंह, कार्यक्रम अधिकारी प्रमेंद्र सिंह, सुधीर सिंह, अखिलेश कुमार, और राष्ट्रीय आदिवासी छात्र शिक्षा समिति के अधिकारीगण इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से शामिल हुए। विद्यालयों के शिक्षक और बच्चे भी इस अभियान का हिस्सा बने और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अपना योगदान दिया।

पूर्व मध्य रेल

खुली ई-निविदा सूचना

(निर्माण विभाग)

e-Tender No. ELCSMHX-ETEN-20-24-25

भारत के राष्ट्रपति के तरफ से निम्न कार्य हेतु ई.निविदा आमंत्रित की जाती है **1. कार्य का नाम एवं स्थान:** उपमुख्य विद्युत अभियंता/निर्माण/दक्षिण के अधीन पूर्व मध्य रेलवे के बानदाग–हजारीबाग में इलेक्ट्रिकल जनरल वर्क्स और Banadag रैपिड लोडिंग सिडिडिंग धनबाद डिवीजन में प्रकाश व्यवस्था और किसी भी अन्य स्थान पर dy.cee/con/दक्षिण/MHX अंतर्गत काम करने के लिए खुली निविदा। **2. अनुमानित कार्य की लागत:** रु. 99017640.14 **3. जमा किए जाने वाले बयाना राशि एवं निविदा प्रपत्र का मूल्य:** NIT के अनुसार एवं रु. शून्य **4. कार्य पूर्ण करने का समय :** 06 माह **5. निविदा बंद होने की तिथि एवं समय:** 15.07.2025 दोपहर 12:00 बजे तक। **6. वेबसाइट का विवरण, नोटिस बोर्ड का स्थान जहां निविदा की पूर्ण जानकारी देखा जा सकता है तथा कार्यालय का पता जहां से निविदा प्रपत्र खरीदा जा सकता है:** आई.आर.ई.पी.एस वेबसाइट www.ireps.gov.in पर निविदि डाउन लोड किया जा सकता है एवं सीईई/कॉन महेन्द्रूघाट, कार्यालय सीएओ/कॉन ईसीआर ऑफिस परिसर, पटना–800004 में निविदा पट पर देखा जा सकता है। हिन्दी एवं अंग्रेजी की सूचना में किसी प्रकार की भिन्नता पाये जाने पर अंग्रेजी में प्रकाशित सूचना को सही माना जायेगा।

उप मुख्य विद्युत अभियंता/निमार्ण/दक्षिण
पू.म.रे./महेन्द्रूघाट/पटना

पीआर/0473/एमएचएक्स/एस/टी/25–26

AFFIDAVIT

As per Affidavit date 24.09.2024, I, GOPI KISHAN AGARWAL S/O Late Radhey Sham Agarwal aged about 64 years, by faith Hindu,by profession business resident of 186 Addi bunglowroad Jhumritelaiya Distt. Kodarma (Jharkhand), do hereby solemnly affirm and declare as follows:-

1. That my name printed in passport Gopi Krishna Agarwal instead of Gopi Kishan Agarwal.
2. That my date of birth is 15th January 1959 as per my Aadhar, PAN and school certificates.
3. That I further declare that by mistake in old passport my date of birth printed 20.02.1960 instead of 15th January 1959.
4 That I am also known as Gopi Kishan Agarwal and Gopi Krishna Agarwal.

I.Gopi Kishan Agarwal, deponent, do hereby solemnly affirm and state that the contents of Paragraph No. 1 & 5 of this affidavit are true to my personal knowledge, that no part of it is incorrect and false Nothing material has been concealed in it

जल जीवन मिशन की मुख्य सचिव अलका तिवारी ने उपायुक्तों के साथ समीक्षा बैठक की

जल जीवन मिशन की सफलता में सभी डीसी लीडरशिप दें : मुख्य सचिव

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। हर घर नल से जल को लेकर चल रहे जल जीवन मिशन की झारखंड में वर्तमान स्थिति को लेकर मुख्य सचिव अलका तिवारी की अध्यक्षता में बुधवार को समीक्षा की गयी। समीक्षा के दौरान मिशन के आड़े आ रही समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश की गयी। वर्चुवल माध्यम से जुड़े तमाम जिले के उपायुक्तों को मुख्य सचिव ने मिशन के सुचारू क्रियान्वयन में लीडरशिप देने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि मिशन के कार्यों में समन्वय स्थापित करने के लिए सक्रिय सहभागिता निभायें। इसकी नियमित समीक्षा करें। इलाके के मुखिया के साथ नियमित अंतराल पर बैठक करें। इससे इलाके की अच्छी जमीनी जानकारी मिलेगी। इस फीडबैक का उचित उपयोग करें। उन्होंने कहा कि अधूरा कार्य और पूरा भुगतान का मामला सामने आने पर उसे गंभीरता से लें। उसकी जांच करायें और समुचित कार्रवाई सुनिश्चित करें।

मिशन की देखरेख के लिए हर जिले में होंगे दो इंजीनियर

उन्होंने उपायुक्तों को निर्देश दिया कि वे जब भी किसी काम से फील्ड में जायें, तो वहां के जल जीवन मिशन के कार्यों को जरूर देखें। उसका आकलन करें और जरूरत पड़ने पर मौके पर ही समस्या का समाधान करें। जल जीवन मिशन की सफलता के लिए सभी उपायुक्तों को दो कमिटेड इंजीनियर दिये जा रहे हैं। वे उपायुक्तों के अधीन कार्य करेंगे। मुख्य सचिव ने कहा कि उनका टेक्निकल सेल बना कर पूरा काम लें। रोज उन्हें काम सौंपे और उसकी रिपोर्ट लें।

एजेंसी के जिम्मे है पांच साल तक रख-रखाव का जिम्मा : मुख्य सचिव ने कहा कि जल जीवन मिशन के तहत कार्यकारी

एजेंसी को पांच साल तक रख-रखाव की जिम्मेदारी तय है। इस कारण छोटी-मोटी समस्या के समाधान में देरी नहीं होनी चाहिए। जो एजेंसी इसमें विफल रहती है, उसके खिलाफ प्रस्ताव दें, उसका निराकरण मुख्यालय स्तर से यथाशीघ्र होगा। वहीं निर्देश दिया कि प्रशासनिक स्तर की बाधा को उपायुक्त प्राथमिकता के स्तर पर अपनी लीडरशिप में दूर करायें। इसके अलावा उपायुक्तों को जल जीवन मिशन के अधूरे कार्यों को पूरा कराने, पूरी हो चुकी योजना को ग्राम समिति को सुपुर्द करने का निर्देश दिया।

2028 तक सभी घरों में नल से जल पहुंचाना है : 15 अगस्त 2019 को सभी ग्रामीण घरों, स्कूलों और आंगनबाड़ी केंद्रों में नल से जल पहुंचाने के लिए जल जीवन मिशन की शुरूआत हुई थी। दिसंबर 2028 तक इस योजना के तहत कार्य संपन्न करना है। इसके तहत अब तक झारखंड में 97,535 योजनाएं ली गयी हैं। उनमें से 56,332 योजनाएं पूर्ण हो चुकी हैं। 24,781 योजनाएं ग्राम समिति को सुपुर्द की जा चुकी हैं। बाकी बची योजनाओं को ग्राम समिति को सुपुर्द करने की कार्रवाई की जा रही है। बताते चलें कि झारखंड में 29,398 गांव हैं। उनमें से 6963 गांवों को पूर्णतः नल के जल से जोड़ा जा चुका है। झारखंड के गांवों में 62,54,059 घर हैं। उनमें से 34,42,332 घरों में नलका से पानी आपूर्ति की जा रही है।

जिंदगी दाव पर लगा रहे युवा

आज सोशल मीडिया का जमाना है और हर किसी को किसी न किसी तरह चर्चा में आने की पड़ी है। ऐसे में युवक-युवतियों में रील बनाकर प्रसिद्धि पाने का जुनून जोरों पर है। रील बनाने वाले युवा उल्टी-सीधी हरकतों से कभी तो लोगों के मनोरंजन का साधन बनते हैं और कभी रील बनाने के चक्कर में घायल हो जाते हैं या फिर अपनी जान ही गंवा बैठते हैं। इसके कई उदाहरण हैं। 18 अप्रैल को दुर्ग में रील बनाते समय तीन नाबालिगों की मोटरसाइकिल 2 वाहनों से टकरा गयी, जिससे 2 नाबालिगों की घटनास्थल पर ही मृत्यु और तीसरा घायल हो गया। 26 अप्रैल को वाराणसी में कुर्थिया गांव के निकट चलती मोटरसाइकिल पर रील बना रहे 2 युवक सामने से आ रही एक कार से टकरा कर गंभीर रूप से घायल हो गए। 12 मई को सिवनी (मध्य प्रदेश) में रेल की पटरी पर रील बनाने के दौरान 1 युवक की रेलगाड़ी की चपेट में आ जाने से मौत हो गयी। 17 मई को अमरोहा के हसनपुर में तेज रफ्तार से मोटरसाइकिल चलाते हुए रील बना रहे 2 युवकों की मोटरसाइकिल दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के परिणामस्वरूप दोनों युवक अपनी जान से हाथ धो बैठे। 4 जून को आगरा के नगला नाथू गांव में यमुना नदी में रील बनाते समय 6 युवतियां गहरे पानी में चली गयीं तथा भंवर में फंस जाने के कारण डूब जाने से उनकी मौत हो गयी। इनमें से 3 युवतियां एक ही परिवार की थीं, जबकि 3 अन्य इनकी रिश्तेदार थीं। 14 जून को बहराईच में रील बनाने के लिए सड़क पर स्टंट कर रहे 2 मोटरसाइकिल सवार युवकों ने एक महिला को टक्कर मार दी और उसे दूर तक घसीटते चले गये, जिससे उसकी मौत हो गयी। 15 जून को सहरसा के विश्वकर्मा ढाला में रेलवे यार्ड में खड़ी एक मालगाड़ी के इंजन पर चढ़ कर रील बनाते समय एक युवक हाईटेंशन तारों की चपेट में आ जाने से 90 प्रतिशत झुलस गया। इसी तरह 16 जून को हरिद्वार में एक युवक गंगा नदी में नहाने के दौरान रील बनाने के लिए गहरे पानी में चला गया और जल्द ही पानी के तेज बहाव में बह गया और डूब गया। रील बनाने का एक कारण यह भी है कि बहुत अधिक बार देखी जाने वाली तथा फॉलो व फारवर्ड किये जाने पर रील बनाने वालों को सोशल मीडिया साइट के संचालकों द्वारा आकर्षक धनराशि भी मिलने लगती है। उक्त घटनाएं सोशल मीडिया पर रील बनाने के बढ़ते चलन और इससे जुड़े खतरों को उजागर करती हैं। पिछले कुछ समय के दौरान रील बनाने के रुझान और इससे होने वाली दुर्घटनाओं में भारी वृद्धि हुई है, जिसने इस मामले में सावधानी बरतने के बारे में सोचने के लिए विवश किया है। इस संबंध में हम युवाओं को यही सलाह देंगे कि वे अपनी जान जोखिम में डाल कर इस प्रकार के स्टंट न करें, क्योंकि चंद पलों की भूल जिंदगी भर के लिए पीड़ा दे सकती है।

पिछले कुछ समय के दौरान रील बनाने के रुझान और इससे होने वाली दुर्घटनाओं में भारी वृद्धि हुई है। हम युवाओं को यही सलाह देंगे कि वे अपनी जान जोखिम में डाल कर इस प्रकार के स्टंट न करें, क्योंकि चंद पलों की भूल जिंदगी भर के लिए पीड़ा दे सकती है।

अभिमत
आजाद सिपाही

भारतीय रेल भी तीर्थयात्रियों को सेवा में हमेशा की तरह तत्पर है। तीर्थयात्रियों के सुखद अनुभव के लिए भारतीय रेल उनकी सेवा में तत्पर है। पिछले 11 वर्ष, ओड़िशा के रेल इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास की दृष्टि से ऐतिहासिक रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 'पूर्वोदय नीति' के तहत ओडिशा को आवंटित रेल बजट में 2009-14 के वार्षिक औसत के मुकाबले 12 गुना उछाल देखने को मिला है। वर्ष 2025-26 में बजट का आंकड़ा 10,500 करोड़ रुपये से भी अधिक हो गया है।

जगन्नाथ रथयात्राः श्रद्धालुओं की सेवा में सदैव तत्पर भारतीय रेल

अश्विनी वैष्णव

महाप्रभु की पावन नगरी, जगन्नाथ पुरी, रथयात्रा के लिए पूरी तरह तैयार है। दुनिया भर से हर वर्ष आने वाले लाखों श्रद्धालुओं के लिए यह आस्था की अनोखी यात्रा है। भारतीय रेल भी तीर्थयात्रियों को सेवा में हमेशा की तरह तत्पर है। तीर्थयात्रियों के सुखद अनुभव के लिए भारतीय रेल उनकी सेवा में तत्पर है। पिछले 11 वर्ष, ओड़िशा के रेल इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास की दृष्टि से ऐतिहासिक रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 'पूर्वोदय नीति' के तहत ओडिशा को आवंटित रेल बजट में 2009-14 के वार्षिक औसत के मुकाबले 12 गुना उछाल देखने को मिला है। वर्ष 2025-26 में बजट का आंकड़ा 10,500 करोड़ रुपये से भी अधिक हो गया है। ओडिशा में 2014 से अब तक 2,100 किलोमीटर से अधिक नयी पटरियां बिछायी जा चुकीं हैं। यह मलेशिया के पूरे रेल नेटवर्क से भी अधिक है। ओडिशा में वर्तमान में 73,000 करोड़ रुपये की नयी रेल लाइन परियोजनाएं चल रही हैं।

59 अमृत स्टेशन विकसित किए जा रहे हैं, जिनमें आकांक्षी जिलों में 16 स्टेशन शामिल हैं। राज्य में संचालित 6 वंदे भारत सेवाएं 17 जिलों को कवर कर रहीं हैं। ओडिशा में भारतीय रेलवे का सबसे खास योगदान रथयात्रा के दौरान होता है। रेलवे हर साल इस दौरान लाखों तीर्थयात्रियों की सेवा का जिम्मा उठाता है।

इस वर्ष जगन्नाथपुरी के लिए 850 नियमित और 365 विशेष ट्रेन सेवाओं सहित कुल 1,215 ट्रेन सेवाएं संचालित हैं।

भारतीय रेल की विशेष इंजीनियर्स और टेक्नीशियन्स की टीम पूरी रथयात्रा के दौरान रथों के साथ तैनात रहती है। यह रथों को निर्माण स्थल से जगन्नाथ मंदिर तक ले जाने के साथ उनकी सुगम आवाजाही और मरम्मत में सहयोग करती है। यह टीम स्पेशल स्क्रू जैक का उपयोग कर रथों को ठीक जगह पर रखना, उनकी दिशा और सीध भी सुनिश्चित करती है।

सुगम यात्रा, सहज व्यवस्था

पिछले 11 वर्षों में रथयात्रा स्पेशल ट्रेनों की संख्या चार गुना बढ़ी है। इस वर्ष जगन्नाथपुरी के लिए 850 नियमित और 365 विशेष ट्रेन सेवाओं सहित कुल 1,215 ट्रेन सेवाएं संचालित हैं। ये ट्रेनें ओड़िशा के कई आकांक्षी जिलों जैसे कालाहांडी, बलांगीर, नुआपाड़ा, कोरापुट, रायगढ़ा, गजपति और ढेंकनाल और आदिवासी क्षेत्रों को श्रीक्षेत्रपुरी से जोड़तीं हैं।

एआइ-आधारित रियल-टाइम डिमांड प्रिडिक्शन सिस्टम के जरिए ट्रेनों का बेहतर संचालन हो रहा है। पुरी में इस बार 10 प्लेटफॉर्म तीर्थयात्रियों के स्वागत के लिए तैयार हैं। पुरी के साथ-साथ अन्य रेलवे स्टेशनों पर अतिरिक्त टिकट काउंटर लगाये गये हैं।

आस्था आधारित सार्वजनिक सेवा मॉडल

'सेवा परमो धर्म :' की भावना के साथ, भारतीय रेल यह सुनिश्चित कर रही है कि रथ यात्रा के दौरान तीर्थयात्रियों को सम्मान, सुविधा और सुरक्षा मिले।

इस वर्ष तीर्थ यात्रा को समावेशी बनाने की बहुत बड़ी पहल हो रही है। प्रतिदिन अधिकतम 2 लाख की क्षमता के साथ रेलवे करीब 20 लाख यात्रियों की सेवा के लिए तैयार है। 25,000 तीर्थयात्रियों की क्षमता वाला होल्डिंग एरिया भी बनाया गया है। गर्मी से राहत के लिए पर्याप्त व्यवस्था की गयी है। भोजन, पानी और कूलर की व्यवस्था है। लगभग 2.5 लाख निःशुल्क भोजन सामग्री के वितरण की व्यवस्था है।

सफाई के लिए आधुनिक जेट क्लीनिंग मशीनें, सीवर सफाई ट्रक सहित अत्याधुनिक सुविधाएं मौजूद हैं। तीर्थयात्रियों की सुरक्षा के लिए पर्याप्त सुरक्षा बल, सीसीटीवी, ड्रोन और फेस रिकग्निशन सिस्टम लगाये गये हैं। दिव्यांगजनों, बुजुर्गों, महिलाओं और बीमार श्रद्धालुओं की आवश्यकताओं का ध्यान रखा गया है। डॉक्टर, एंबुलेंस, मेडिकल बूथ और फर्स्ट एड काउंटर स्थापित किये गये हैं। इस बार भारतीय रेलवे ने पुरी स्टेशन को आस्था-आधारित सार्वजनिक सेवा के एक मॉडल के रूप में परिवर्तित किया है।

स्पेशल जैक के साथ रथयात्रा में प्रत्यक्ष सहभागी

भारतीय रेल की विशेष इंजीनियर्स और टेक्नीशियन्स की टीम पूरी रथयात्रा के दौरान रथों के साथ तैनात रहती है। यह रथों को निर्माण स्थल से जगन्नाथ मंदिर तक ले जाने के साथ उनकी सुगम आवाजाही और मरम्मत में सहयोग करती है।

यह टीम स्पेशल स्क्रू जैक का उपयोग कर रथों को ठीक जगह पर रखना, उनकी दिशा और सीध भी सुनिश्चित करती है। रथों के बीच उचित दूरी बनाये रखने और मार्ग की बाधाओं को हटाने की जिम्मेदारी भी रेलवे की टीम देखती है। भारतीय रेल को राष्ट्र की जीवनरेखा कहा जाता है। रथ यात्रा को अपनी जीवनरेखा मानने वाले तीर्थयात्रियों के साथ हर भारतीय की सेवा के लिए भारतीय रेल प्रतिबद्ध है।

(लेखक : भारत सरकार में केंद्रीय रेल, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आइटी तथा सूचना एवं प्रसारण मंत्री हैं।)

कोल्हान की खबरें

मुखियागणों से मिले कांग्रेस जिला अध्यक्ष आनंद बिहारी दुबे, कहा

पंचायतों को मिले पूर्ण अधिकार और सम्मान

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। जमशेदपुर प्रखंड कार्यालय स्थित पंचायत सचिवालय में एक बैठक का आयोजन किया गया। पूर्वी सिंहभूम जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष आनंद बिहारी दुबे के नेतृत्व में आयोजित बैठक में सभी मुखियागण उपस्तित हुए।

मौके पर पंचायतों को पूर्ण वित्तीय एवं प्रशासनिक अधिकार देने, राज्य वित्त आयोग की निधि सीधे पंचायतों को उपलब्ध कराने, 25,000 मासिक मानदेय, मनरेगा योजना का संचालन पंचायतों के माध्यम से कराने और जनप्रतिनिधियों को दुर्घटना बीमा का लाभ देने की मांगें रखीं गयी। बैठक में मुखिया संघ के महासचिव कान्हू मुर्मू ने कहा कि वर्तमान में पंचायतों को मात्र 1-2 विभागों से पत्राचार होता है, जबकि 14 विभागों का अधिकार पंचायतों को मिलना चाहिए। श्री दुबे ने आश्वासन दिया मुखियागणों की सभी मांगों को विभागीय मंत्री दीपिका पांडे सिंह के समक्ष रखा जायेगा। शीघ्र ही एक जिला स्तरीय संवाद बैठक भी आयोजित की जायेगी। इस अवसर पर कांग्रेस के कई वरिष्ठ पदाधिकारी, पंचायत प्रतिनिधिगण सहित कार्यकर्तागण उपस्थित रहे।

पुलिस ने अवैध मिनी शराब फैक्ट्री का किया खुलासा, दो गिरफ्तार

66 बोतल विदेशी शराब सहित 800 खाली बोतल बरामद

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। सोनारी पुलिस ने वरीय पदाधिकारी के निर्देश सोनारी नॉर्थ ले-आउट में विनोद सिंह के मकान में चल रही अवैध मिनी शराब फैक्ट्री का खुलासा कर दिया। बुधवार को पुलिस ने अवैध कारोबार में शामिल दो कर्मचारियों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया। गिरफ्तार आरोपियों में दोनों बंधु कुमार और जयंत कुमार शामिल है। यह मकान एक पूर्व आयकर विभाग के अधिकारी होने का अनुमान लगाया जा रहा है। हालांकि इसकी कोई आधिकारिक सूचना नहीं मिली है। छापेमारी के दौरान पुलिस ने विदेशी शराब के 66 बड़ी बोतल, बड़ी मात्रा में शराब बनाने की सामग्री, नकली ब्रांडेड बोतलें, स्टीकर और पैकिंग सामग्री बरामद कर लिया। फिलहाल पुलिस पूरे नेटवर्क की जांच की जा रही है। पुलिस के अनुसार प्रारंभिक जांच में बॉटलिंग कर नकली शराब आसपास के क्षेत्रों में सप्लाई करने की बात सामने आ रही है। इसके पीछे कोई बड़ी गिरोह का हाथ होने का अनुमान लगाया जा रहा है।

शहर पहुंचने पर झारखंड प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष का भव्य स्वागत

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। झारखंड प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष शहजादा अनवर का जमशेदपुर आगमन पर पूर्वी सिंहभूम जिला कांग्रेस उपाध्यक्ष मौलाना अंसार खान ने उनका भव्य स्वागत किया। श्री अनवर एक निजी कार्य में शामिल होने पहुंचे थे। इस दौरान दोनों के बीच झारखंड की वर्तमान राजनीतिक स्थिति और संगठनात्मक मुद्दों पर चर्चा हुई। मौलाना अंसार खान ने उन्हें जिला कांग्रेस अध्यक्ष आनंद बिहारी दुबे द्वारा जन समस्याओं को लेकर चलाये जा रहे आंदोलनों की जानकारी दी। मौके पर कांग्रेस संगठन को मजबूत करने हेतु मार्गदर्शन प्राप्त किया।

शिक्षकों को दिखायी जा रही प्रधानाध्यापक अरविंद के नवाचारों की प्रेरणादायक कहानी

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। नयी शिक्षा नीति के तहत झारखंड के प्राथमिक शिक्षकों के लिए सतत व्यवसायिक विकास नामक 50 घंटे का अनिवार्य कोर्स चलाया जा रहा है। जिसमे गुरुजी ऐप के माध्यम से 20 घंटे का ऑनलाइन प्रशिक्षण 1 जून से 30 जून तक दी जारही है। इस कोर्स के कुल 24 मॉड्यूल में से 18वां मॉड्यूल स्कूल लीडरशिप पर आधारित है। जिसमें उत्क्रमित मध्य विद्यालय, टांगराईन के प्रधानाध्यापक अरविंद तिवारी द्वारा किये गये नवाचारों और विद्यालय में लाये गये परिवर्तन को शामिल किया गया। अरविंद तिवारी विशेष रूप से आदिम जनजाति के बच्चों को शिक्षा से जोड़ने और बालिकाओं के ड्रॉप आउट को रोकने के लिए लगातार प्रयासरत हैं। उनके कार्यों को मॉडल के रूप में प्रस्तुत कर राज्यभर के शिक्षकों को प्रेरित किया जा रहा है। प्रशिक्षण में प्रत्येक वीडियो के अंत में वस्तुनिष्ठ प्रश्न होते हैं, जिनका उत्तर देकर शिक्षकों को अपनी समझ भी प्रमाणित करनी होती है।

जिला स्तरीय माइनिंग टास्क फोर्स की बैठक में डीसी ने सख्त कार्रवाई के दिये आदेश, टोल फ्री नंबर जारी

आजाद सिपाही संवाददाता

सरायकेला। डीसी नितिश कुमार सिंह की अध्यक्षता में जिला स्तरीय माइनिंग टास्क फोर्स की बैठक संपन्न हुई। बुधवार को बैठक में एनजीटी दिशा-निर्देशों के अनुपालन और अवैध खनन पर सख्ती से रोक के लिए अधिकारियों को निर्देश दिये गये। डीसी ने कहा कि बालू उत्खनन पर 10 जून से 15 अक्टूबर तक पूर्ण रोक है। अवैध खनन में संलिप्त लोगों पर कानूनी कार्रवाई, चेकनाका स्थापित कर वाहनों की जांच, वन मार्गों पर निगरानी और ग्राम पंचायत स्तर पर टोल फ्री नंबर 18003456490 के प्रचार का निर्देश दिया। बैठक में अब तक की कार्रवाई में 34 वाहन जब्त, 53700 घनफुट बालू जब्त, 40.10 लाख जुमार्ना वसूली और 7 एफआईआर दर्ज होने की जानकारी दी गयी।

डीसी ने सड़क सुरक्षा में जनसहभागिता के लिए अपील की

सरायकेला (आजाद सिपाही)। सरायकेला खरसावां जिले के जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा समिति की बैठक डीसी नितिश कुमार सिंह की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। बुधवार को बैठक में डीसी ने सड़क दुर्घटनाओं पर नियंत्रण और जन-जागरूकता बढ़ाने को लेकर कई निर्देश दिए। डीसी ने 18 चिन्हित ब्लैक स्पॉट पर साइनेज बोर्ड लगाने, ट्रैफिक पुलिस की तैनाती और नियमित गश्ती सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। साथ ही अवैध पार्किंग और अतिक्रमण पर कार्रवाई तथा गम्हरिया से स्वर्णरेखा पुल तक स्ट्रीट लाइटों की निगरानी के निर्देश दिए। बीते मई माह में जिले के 27 सड़क दुर्घटनाएं हुईं, जिनमें 20 लोगों की मौत हो गयी। डीसी ने सड़क सुरक्षा में जनसहभागिता के लिए अपील की। बैठक में पुलिस अधीक्षक मुकेश लुनायत, अपर उपायुक्त जयवर्धन कुमार, आदित्यपुर नगर निगम प्रशासक रवि प्रकाश, जिला परिवहन पदाधिकारी गिरजा शंकर महतो, चांडिल अनुमंडल पदाधिकारी, पुलिस उपाधीक्षक मुख्यालय, सभी अंचलाधिकारी, जिले के सभी थाना क्षेत्र के प्रभारी और समिति के अन्य सदस्यगण उपस्थित रहे।

बिस्टुपुर राम मंदिर से 27 जून को निकलेगी इस्कॉन की भव्य रथयात्रा

एक हजार स्वयंसेवक करेंगे रथ संचालन

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। लौहनगरी जमशेदपुर में इस्कॉन के द्वारा प्रभु जगन्नाथ की भव्य रथ यात्रा 27 जून को बिष्टुपुर स्थित श्रीराम मंदिर से निकाली जायेगी। बुधवार को इस्कॉन से जुड़े लोगों ने इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया तीन रथों पर भगवान श्रीजगन्नाथ, मां सुभद्रा और बलभद्र विराजमान रहेंगे। यह रथ यात्रा हरि भक्तों, सामाजिक धार्मिक संगठनों एवं कीर्तन मंडलियों की सहभागिता से मौसी बाड़ी तक जायेगी। आयोजन की सभी तैयारियों की समीक्षा हेतु आंध्र भक्त श्रीराम मंदिर में इस्कॉन प्रमुख स्वामी पद्मनाभजगन्नाथ दास की अध्यक्षता में बैठक हुई। करीब 1000 स्वयंसेवक रथ संचालन की जिम्मेदारी संभालेंगे। रथ यात्रा में हजारों हजार की संख्या श्रद्धालुओं शामिल होंगे।

गढ़वा सदर अस्पताल परिसर के सरकारी आवास में डॉक्टर की पत्नी ने की आत्महत्या

गढ़वा (आजाद सिपाही)। गढ़वा सदर अस्पताल में परिसर में अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ तरुण की पत्नी सुषमा देवी (कुमारी) 25 वर्ष ने अस्पताल परिसर स्थित अपने सरकारी आवास में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना के बाद पूरे अस्पताल परिसर में सनसनी फैल गयी और गमगीन माहौल व्याप्त हो गया। मिली जानकारी के अनुसार, घटना के वक्त डॉ तरुण अस्पताल की ओपीडी में मरीजों का इलाज कर रहे थे। इस दौरान उनके आवास पर कुछ पारिवारिक सदस्य भी मौजूद थे। ड्यूटी समाप्त होने के बाद जब वे अपने आवास लौटे, तो दरवाजा अंदर से बंद पाया गया। कई बार दस्तक देने के बावजूद कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलने पर उन्होंने तत्काल सिविल सर्जन को सूचना दी और इसके बाद पुलिस को बुलाया गया। पुलिस की उपस्थिति में जब दरवाजा तोड़ा गया, तो अंदर का दृश्य देखकर सभी स्तब्ध रह गये। डॉ तरुण की पत्नी सुषमा का शव पंखे से लटका हुआ पाया गया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है। आत्महत्या के कारणों का अब तक कोई स्पष्ट खुलासा नहीं हुआ है। थाना प्रभारी ब्रिज कुमार ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

लंबित आवास कार्य प्रारंभ नहीं करने वाले लाभुकों के विरुद्ध होगी कार्रवाई: बीडीओ

विशुनपुरा (आजाद सिपाही)। विशुनपुरा प्रखंड के सदर पंचायत अंतर्गत 2023-24 एवं 2024-25 में मिले अबुआ आवास एवं पीएम आवास के पैसा लेने के बावजूद जो लाभुक आवास कार्य प्रारंभ नहीं किए हैं। उनके यहां बुधवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी सह अंचलाधिकारी राजेश कुमार, आवास समन्वयक निरंजन मिश्रा एवं पंचायत सेवक हुसैन अंसारी के द्वारा स्थल का निरीक्षण किया गया। वहीं सभी लाभुकों को यथाशिघ्र आवास कार्य प्रारंभ करने का निर्देश भी दिया गया। साथ ही एक सप्ताह के अन्दर निर्देश के अनुपालन कर आवास कार्य प्रारंभ नहीं करने वाले लाभुकों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाई करने की चेतावनी प्रखंड विकास पदाधिकारी राजेश कुमार के द्वारा दिया गया।

दूसरे राज्य में मजदूरी करने गये युवक की मौत

मृतक संतोष की फाइल फोटो।

हरिहरपुर (आजाद सिपाही)। मंगलवार की शाम कांडी प्रखंड के मझिगावां पंचायत स्थित पोखरा टोला में उस समय मातम छा गया, जब बेंगलुरु मजदूरी करने गये संतोष यादव का शव ताबूत में बंद होकर गांव पहुंचा। संतोष की असामयिक मौत की खबर ने पूरे गांव को गमगीन कर दिया। बताया जाता है कि 35 वर्षीय संतोष यादव, पिता कामेश्वर यादव, रोजी-रोटी के लिए बेंगलुरु के सरजापुर क्षेत्र स्थित एक नंदीरा निर्माण कंपनी में मजदूरी कर रहा था। शनिवार को कार्य के दौरान वह छः मंजिला ऊंची इमारत से नीचे गिर गया, जिससे उसके शरीर के कई हिस्सों में गंभीर चोटें आईं और अत्यधिक रक्तस्राव हुआ। इलाज के लिए ले जाते समय रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गयी। परिजनों को घटना की सूचना मिलते ही पूरे गांव में कोहराम मच गया। मृतक के बूढ़े माता-पिता व पत्नी ने बेंगलुरु जाकर कानूनी प्रक्रिया पूरी की और मंगलवार देर शाम उसका पार्थिव शरीर ताबूत में लेकर गांव लौटे। मृतक संतोष अपने पीछे वृद्ध माता-पिता, पत्नी, दो पुत्र व एक पुत्री को छोड़ गया है। घटना की सूचना मिलते ही पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि शंभूनाथ शाह, उपमुखिया श्रवण पासवान बीडीसी प्रतिनिधि सुनील यादव, वार्ड सदस्य सत्य। प्रकाश चौबे समेत कई जनप्रतिनिधियों ने शोक-संतप्त परिवार से मुलाकात कर उन्हें ढांढस बंधाया।

घघरी गांव में राशन वितरण में भारी अनियमितता की शिकायत, डीलर के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग

सगमा (आजाद सिपाही)। प्रखंड अंतर्गत घघरी गांव में जन वितरण प्रणाली के तहत राशन वितरण में भारी अनियमितता की शिकायत सामने आई है। गांव के दर्जनों राशन कार्ड धारि दुखी राम, छोटेलाल, सुनीता देवी, चिंता देवी, त्रिपुरारी भुइयां, कामेश्वसर राम, भुखनी देवी, राजू धीरकार, राजा राम, माधव यादव, लालमोहन गुप्ता, मनमित यादव, मुन्नी कुंवर, सोनिया देवी, आनंद गुप्ता बसंत कुमार, मंगरी देवी, सरस्वती देवी, फूलमती देवी, कृष्णा यादव सहित अन्य कार्डधारियों ने बताया कि पिछले दो से तीन महीने से वे नियमित रूप से अंगूठा लगवाने के बावजूद उन्हें राशन नहीं दिया जा रहा है। इस गंभीर लापरवाही को लेकर ग्रामीणों में जबरदस्त आक्रोश है। राशन कार्ड धारी का आरोप है कि मई, जून, जुलाई महीने का कर कार्डधारियों से अंगूठा लगवा कर डीलर सुचिता देवी के द्वारा राशन नहीं दिया गया है। डीलर टाल मटोल करते हुए गोदाम से एक ही माह का राशन गोदाम से मिला है। वहीं पर उपस्थित मुखिया प्रतिनिधि अशोक राम के द्वारा गोदाम मैनेजर इरफान अंसारी से फोन के माध्यम से जानकारी लिया गया, तो पता चला कि गोदाम के द्वारा डीलर को जून और जुलाई दोनों माह का राशन डीलर को दे दिया गया है। वहीं राशन कार्ड धारियों का कहना कि डीलर सुचिता देवी की ओर से लगातार बहानेबाजी की जाती है। ग्रामीणों का यह भी आरोप है कि डीलर के सुचिता देवी के पति बिंदा राम, जो अक्सर दुकान का संचालन करते हैं, शराब के नशे में धुत होकर राशन लेने आये लोगों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं और गाली-गलौज तक करते हैं। महिलाओं ने बताया कि उन्हें अपमानित किया जाता है और डांट-फटकार के डर से कई लोग दुकान पर जाने से कतराते हैं। स्थानीय ग्रामीणों ने प्रखंड विकास पदाधिकारी और आपूर्ति विभाग से मांग की है कि डीलर के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाये।

डोरी बीनने गयी महिला की मिली निर्वस्त्र लाश, रेप के बाद हत्या की आशंका

मृतका रेखा देवी की फाइल फोटो।

विशुनपुरा (आजाद सिपाही)। विशुनपुरा थाना क्षेत्र में एक महिला की संदिग्ध हालात में मौत ने पूरे इलाके को दहला दिया है। मृतका की पहचान विशुनपुरा थाना क्षेत्र के सारांग निवासी रेखा देवी (उम्र लगभग 34 वर्ष), पति राकेश चंद्रवंशी के रूप में हुई है। मृतका अपने पीछे तीन छोटे-छोटे बच्चों को छोड़ गयी हैं, जिनमें 13 वर्षीय गुंजा कुमारी, 5 वर्षीय दुर्गेश और 4 वर्षीय आयुष शामिल हैं। रेखा देवी के पति राकेश चंद्रवंशी ने जानकारी दी कि रविवार रात लगभग 11 बजे तक उनकी पत्नी घर पर ही थी। रेखा रोजाना की तरह रात में पास के गांव के किनारे डोरी बीनने जाती थी। रात 11 बजे के बाद वह डोरी बीनने के लिए निकली, लेकिन अगली सुबह तक घर नहीं लौटी। मंगलवार की सुबह करीब 10 बजे ग्रामीणों ने गांव से लगभग 400 मीटर दूर केवाल बांध के पास एक महिला का शव नग्न अवस्था में देखा, जिसकी आंख फूटी हुई थी, मुंह में कपड़ा ठूंसा हुआ था और शरीर पर खासकर प्राइवेट पार्ट पर मारपीट के गंभीर निशान थे। शव की स्थिति देख कर आशंका जतायी जा रही है कि महिला के साथ पहले दुष्कर्म किया गया और फिर हत्या कर दी गयी। इस संबंध में थाना प्रभारी राहुल कुमार ने कहा कि पीड़ित के परिजन के अज्ञात लोगों के विरुद्ध थाने में आवेदन दिया गया है। पुलिस मामले की गंभीरता से जांच कर रही है और आरोपियों की तलाश में छापेमारी जारी है।

प्रपत्र VII
झारखण्ड सरकार, राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग

(भू–अर्जन निदेशालय) या
समाहर्त्ता या समुचित सरकार
अधिघोषणा
(अधिनियम–30/2013 की धारा–19(1) के अधीन)
संख्या–414/भू0अ0 दिनांक–21/06/2025

चूंकि झारखण्ड सरकार/समाहर्त्ता को यह प्रतीत होता है कि सार्वजनिक प्रयोजनार्थ यथा परियोजना–**तिलैया से बगड़ो भाया जयनगर पथ के पुर्ननिर्माण हेतु** ग्राम–सोन्देडीह थाना–कोडरमा, थाना सं0–259, अंचल–कोडरमा, जिला–कोडरमा में कुल– 0.9230 एकड़ यानि–0.3735 हे0 भूमि अपेक्षित है।

इसलिए अधिघोषणा किया जाता है कि उपर्युक्त परियोजना के लिए अर्जन के अधीन एक भू–खण्ड है, जो मानक माप में कमोवेश–0.9230 एकड़ यानि–0.3735 हेक्टेयर है और जो ग्राम–सोन्देडीह थाना–कोडरमा, थाना सं0–259, अंचल–कोडरमा, जिला–कोडरमा में है, जिसका विवरण निम्नलिखित है:–

ग्राम–सोन्देडीह थाना–कोडरमा, थाना सं0–259, अंचल–कोडरमा, जिला–कोडरमा।

क्रम सं0	खाता नं0	सर्वे भूखंड सं0	स्वामित्व का प्रकार	सर्वे किस्म (भूमि का प्रकार)	अर्जन के अधीन क्षेत्रफल (एकड़ में)	हितबद्ध व्यक्ति का नाम व पता	सीमा (भूखंड सं0) उ0	द0	पू0	प0
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	8	277	रैयती	टांड	0.0070	मसोमात ठगनी जौजे ललीत महतो वो बिसुन गोप वो बबुन गोप पेशरान रेवल गोप वो मोसोमात बुधनी दोख्तर जोवी गोप वो हेमन महतो वो नन्हकू वो बाबू महतो पेशरान खेमचन्द महतो वो मासोमात जगीया जोजे परेम महतो वो पुनीत वल्द जागो वो शीतवा वो चमना वो टेकवा पेशरान वीशु वो भीखो वो बुधन पेशरान बेचु वो मसो0 भीखनी जौजे खेमन वो धुपाल वो चमन वो मुरत वो नीरो पेशरान अनुप महतो।	प्लॉट 277 अंश	रास्ता	प्लॉट 279	सीमाना मौजा डुमरडीहा
2	8	279	रैयती	बाद	0.020		प्लॉट 279 अंश	रास्ता	प्लॉट 280	प्लॉट 277
3	5	280	रैयती	टांड	0.010	मुन्द्रीका देवी पति–खुशरू यादव वो छतरू यादव पिता–रघु गोप वो दर्शन यादव पिता–भोला गोप वो सहदेव यादव वो धानेश्वर यादव वो महादेव यादव वो कार्तिक यादव पिता–रामसहाय यादव वो बासदेव यादव पिता–लट्टु महतो	प्लॉट 280 अंश	रास्ता	प्लॉट 281	प्लॉट 279
4	5	281	रैयती	टांड	0.0050		प्लॉट 281 अंश	रास्ता	प्लॉट 282	प्लॉट 280
5	5	282	रैयती	टांड	0.0060		प्लॉट 282 अंश	रास्ता	प्लॉट 283	प्लॉट 281
6	5	283	रैयती	टांड	0.0090		प्लॉट 283 अंश	रास्ता	प्लॉट 284	प्लॉट 282
7	18	284	रैयती	टांड	0.0090	कैलाश यादव पिता–तुलसी यादव वो रेशमन यादव वो बालेश्वर यादव पिता–रिझो महतो वो रितलाल यादव वो प्रकाश यादव वो रामु यादव पिता–डेगन महतो	प्लॉट 284 अंश	रास्ता	प्लॉट 285	प्लॉट 283
8	1	285	रैयती	टांड	0.0070	मसो0 बन्धनी पति–बंशी महतो वो कौशल्या देवी पति–तुलसी यादव वो बुलाकी यादव पिता–अमरीत महतो वो पिन्टु कुमार पिता–मनी यादव वो लक्ष्मण यादव वो किशोर यादव वो बिनोद यादव वो संतोष यादव पिता–प्रभु यादव वो विक्की यादव पिता–जगन यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–बंशी यादव वो प्रयाग यादव पिता–धानो महतो	प्लॉट 285 अंश	रास्ता	प्लॉट 286	प्लॉट 284
9	20	286	रैयती	टांड	0.0080	मोहनलाल यादव वो सहदेव यादव पिता–कारू यादव वो गुरूसहाय यादव वो भोला यादव पिता–लालधारी यादव वो बिरेन्द्र यादव वो राजकुमार यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–रूपन यादव वो गणपत पिता–खेमन वो अकल महतो पिता.......वो भुनेश्वर यादव वो बालेश्वर यादव वो लखन यादव पिता–दर्शन यादव वो सखिया देवी पति–डीलो यादव वो रामेश्वर यादव पिता–रूपन यादव वो अशोक यादव वो रंजीत यादव वो गौतम यादव पिता–सुरेन्द्र यादव वो जगदीश यादव पिता–लिलो यादव वो भीखन यादव वो मुंशी यादव वो युगल यादव पिता–बोधी यादव वो जागेश्वर यादव पिता–बंधन यादव वो तुलसी यादव वो चन्दर यादव पिता–भातु यादव वो कोसुम देवी पति–जीतन यादव वो नुनू महतो पिता–चमन महतो वो वोजीर महतो पिता–चोकन महतो	प्लॉट 286 अंश	रास्ता	प्लॉट 287	प्लॉट 285
10	20	287	रैयती	टांड	0.0050		प्लॉट 287 अंश	रास्ता	प्लॉट 288	प्लॉट 286
11	20	288	रैयती	टांड	0.0140		प्लॉट 288 अंश	रास्ता	प्लॉट 289	प्लॉट 287
12	11	289	रैयती	टांड	0.0070	तुला महतो वल्द–सेवा महतो	प्लॉट 289 अंश	रास्ता	प्लॉट 292	प्लॉट 288
13	8	292	रैयती	टांड	0.0380	म्सोमात ठगनी जौजे ललीत महतो वो बिसुन गोप वो बबुन गोप पेशरान रेवल गोप वो मोसोमात बुधनी दोख्तर जोवी गोप वो हेमन महतो वो नन्हकू वो बाबु पेशरान खेमचन्द महतो वो मोसोमात जगीया जोजे परेम महतो वो पुनीत वल्द जागो वो शीतवा वो चमना वो टेकवा पेशरान वीशु वो भीखो वो बुधन पेशरान बेचु वो मसो0 भीखनी जौजे खेमन वो धुपाल वो चमन वो मुरत वो नीरो पेशरान अनुप महतो	प्लॉट 292 अंश	रास्ता	प्लॉट2 92 अंश	प्लॉट 289
14	5	393	रैयती	टांड	0.0070	मुन्द्रीका देवी पति–खुशरू यादव वो छतरू यादव पिता–रघु गोप वो दर्शन यादव पिता–भोला गोप वो सहदेव यादव वो धानेश्वर यादव वो महादेव यादव वो कार्तिक यादव पिता–रामसहाय यादव वो बासदेव यादव पिता–लट्टु महतो	प्लॉट 393 अंश	रास्ता	प्लॉट 394	रास्ता
15	5	394	रैयती	बाद	0.0090		प्लॉट 394 अंश	रास्ता	प्लॉट 397	प्लॉट 393
16	5	397	रैयती	बाद	0.0140		प्लॉट 397 अंश	रास्ता	प्लॉट 623	प्लॉट 394
17	18	401	रैयती	बाद	0.0030	कैलाश यादव पिता–तुलसी यादव वो रेशमन यादव वो बालेश्वर यादव पिता–रिझो महतो वो रितलाल यादव वो प्रकाश यादव वो रामु यादव पिता–डेगन महतो	रास्ता	प्लॉट 401 अंश	रास्ता	प्लॉट 402
18	11	402	रैयती	बाद	0.0010	तुला महतो वल्द–सेवा महतो	रास्ता	प्लॉट 402 अंश	प्लॉट 401	प्लॉट 403
19	18	411	रैयती	बाद	0.0170	कैलाश यादव पिता–तुलसी यादव वो रेशमन यादव वो बालेश्वर यादवपिता–रिझो महतो वो रितलाल यादव वो प्रकाश यादव वो रामु यादव पिता–डेगन महतो	रास्ता	प्लॉट 411 अंश	प्लॉट 411 के अंश	सीमानाम ौजाडुमर डीहा
20	6	503	रैयती	बाद	0.0070	झरी गोप वल्द हैमन गोप	रास्ता	प्लॉट 503 अंश	प्लॉट 504	प्लॉट 502
21	8	504	रैयती	टांड	0.0090	जागेश्वर यादव पिता–शिवल यादव वो देवन्ती देवी पति–युगल यादव वो कुन्ती देवी पति–भुनेश्वर यादव	रास्ता	प्लॉट 504 अंश	प्लॉट 505 अंश	प्लॉट 503
22	5	505	रैयती	बाद	0.0220	मुन्द्रीका देवी पति–खुशरू यादव वो छतरू यादव पिता–रघु गोप वो दर्शन यादव पिता–भोला गोप वो सहदेव यादव वो धानेश्वर यादव वो महादेव यादव वो कार्तिक यादव पिता–रामसहाय यादव वो बासदेव यादव पिता–लट्टु महतो	रास्ता	प्लॉट 505 अंश	प्लॉट 512	प्लॉट 504
23	5	512	रैयती	बाद	0.0140		रास्ता	प्लॉट 512 अंश	प्लॉट 513	प्लॉट 505
24	5	513	रैयती	बाद	0.0210		रास्ता	प्लॉट 513 अंश	प्लॉट 514	प्लॉट 512
25	5	514	रैयती	बाद	0.0090		रास्ता	प्लॉट 514 अंश	प्लॉट 515	प्लॉट 513
26	5	515	रैयती	बाद	0.0020		रास्ता	प्लॉट 515 अंश	रास्ता	प्लॉट 514
27	8	565	रैयती	बाद	0.0150	बाबूलाल यादव पिता–सोहर महतो वगैरह	रास्ता	प्लॉट 565 अंश	प्लॉट 566	प्लॉट 564
28	8	566	रैयती	बाद	0.0290	भुनेश्वर यादव पिता–दर्शन यादव वो नुनू महतो पिता–गया यादव	रास्ता	प्लॉट 566 अंश	प्लॉट 1738	प्लॉट 565
29	20	574	रैयती	बाद	0.0150	मोहनलाल यादव वो सहदेव यादव पिता–कारू यादव वो गुरूसहाय यादव वो भोला यादव पिता–लालधारी यादव वो बिरेन्द्र यादव वो राजकुमार यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–रूपन यादव वो गणपत पिता–खेमन वो अकल महतो पिता–.....वो भुनेश्वर यादव वो बालेश्वर यादव वो लखन यादव पिता–दर्शन यादव वो सखिया देवी पति–डीलो यादव वो रामेश्वर यादव पिता–रूपन यादव वो अशोक यादव वो रंजीत यादव वो गौतम यादव पिता–सुरेन्द्र यादव वो जगदीश यादव पिता–लिलो यादव वो भीखन यादव वो मुंशी यादव वो युगल यादव पिता–बोधी यादव वो जागेश्वर यादव पिता–बंधन यादव वो तुलसी यादव वो चन्दर यादव पिता–भातु यादव वो कोसुम देवी पति–जीतन यादव वो नुनू महतो पिता–चमन महतो वो वोजीर महतो पिता–चोकन महतो	प्लॉट 574 अंश	रास्ता	प्लॉट 567	प्लॉट 575
30	20	575	रैयती	बाद	0.0070		प्लॉट 575 अंश	रास्ता	प्लॉट 574	प्लॉट 578
31	11	583	रैयती	बाद	0.0010	तुला महतो वल्द–सेवा महतो	प्लॉट 583 अंश	रास्ता	प्लॉट 579	प्लॉट 584
32	8	584	रैयती	बाद	0.0040	मसोमात ठगनी जौजे ललीत महतो वो बिसुन गोप वो बबुन गोप पेशरान रेवल गोप वो मोसोमात बुधनी दोख्तर जोवी गोप वो हेमन महतो वो नन्हकु वो बाबु पेशरान खेमचन्द महतो वो मोसोमात जगीया जोजे परेम महतो वो पुनीत वल्द जागो वो शीतवा वो चमना वो टेकवा पेशरान वीशु वो भीखो वो बुधन पेशरान बेचु वो मसो0 भीखनी जौजे खेमन वो धुपाल वो चमन वो मुरत वो नीरो पेशरान अनुप महतो	प्लॉट 584 अंश	रास्ता	प्लॉट 583	प्लॉट 585
33	8	585	रैयती	बाद	0.0070		प्लॉट 585 अंश	रास्ता	प्लॉट 584	प्लॉट 607
34	8	607	रैयती	बाद	0.0020		प्लॉट 607 अंश	रास्ता	प्लॉट 585	प्लॉट 608
35	5	608	रैयती	बाद	0.0010	देवन्ती देवी पति–युगल यादव	प्लॉट 608 अंश	रास्ता	प्लॉट 607	प्लॉट 610
36	5	610	रैयती	चिरा–मीठा	0.0010	भीखी यादव पिता–जगन यादव	प्लॉट 610 अंश	रास्ता	प्लॉट 608	प्लॉट 612
37	5	612	रैयती	बाद	0.0020	मुन्द्रीका देवी पति–खुशरू यादव वो छतरू यादव पिता–रघु गोप वो दर्शन यादव पिता–भोला गोप वो सहदेव यादव वो धानेश्वर यादव वो महादेव यादव वो कार्तिक यादव पिता–रामसहाय यादव वो बासदेव यादव पिता–लट्टु महतो	प्लॉट 612 अंश	रास्ता	प्लॉट 610	प्लॉट 613
38	5	613	रैयती	बाद	0.0070		प्लॉट 613 अंश	रास्ता	प्लॉट 612	प्लॉट 622
39	8	622	रैयती	बाद	0.0180	मसोमात ठगनी जौजे ललीत महतो वो बिसुन गोप वो बबुन गोप पेशरान रेवल गोप वो मोसोमात बुधनी दोख्तर जोवी गोप वो हेमन महतो वो नन्हकू वो बाबु पेशरान खेमचन्द महतो वो मोसोमात जगीया जोजे परेम महतो वो पुनीत वल्द जागो वो शीतवा वो चमना वो टेकवा पेशरान वीशु वो भीखो वो बुधन पेशरान बेचु वो मसो0 भीखनी जौजे खेमन वो धुपाल वो चमन वो मुरत वो नीरो पेशरान अनुप महतो	प्लॉट 622 अंश	रास्ता	प्लॉट 613	प्लॉट 623
40	8	623	रैयती	बाद	0.0120		प्लॉट 623 अंश	रास्ता	प्लॉट 622	प्लॉट 397
41	18	1539	रैयती	टांड	0.0110	कैलाश यादव पिता–तुलसी यादव वो रेशमन यादव वो बालेश्वर यादव पिता–रिझो महतो वो रितलाल यादव वो प्रकाश यादव वो रामु यादव पिता–डेगन महतो	प्लॉट 1539 अंश	1556	प्लॉट 1540	प्लॉट 1557
42	18	1540	रैयती	टांड	0.0150		प्लॉट 1540 अंश	प्लॉट 1556	प्लॉट 1541	प्लॉट 1539
43	11	1541	रैयती	टांड	0.0060	तुला महतो वल्द–सेवा महतो	प्लॉट 1541 अंश	प्लॉट 1556	प्लॉट 1541 अंश	प्लॉट 1540
44	8	1542	रैयती	टांड	0.0280	मसोमात ठगनी जौजे ललीत महतो वो बिसुन गोप वो बबुन गोप पेशरान रेवल गोप वो मोसोमात बुधनी दोख्तर जोवी गोप वो हेमन महतो वो नन्हकु वो बाबु पेशरान खेमचन्द महतो वो मोसोमात जगीया जोजे परेम महतो वो पुनीत वल्द जागो वो शीतवा वो चमना वो टेकवा पेशरान वीशु वो भीखो वो बुधन पेशरान बेचु वो मसो0 भीखनी जौजे खेमन वो धुपाल वो चमन वो मुरत वो नीरो पेशरान अनुप महतो	प्लॉट 1542 अंश	प्लॉट 1554	प्लॉट 1543	प्लॉट 1554,1555 एवं 1556
45	8	1543	रैयती	टांड	0.0110		प्लॉट 1543 अंश	प्लॉट 1554	प्लॉट 1544	प्लॉट 1542
46	8	1544	रैयती	टांड	0.0110		प्लॉट 1544 अंश	प्लॉट 1554	प्लॉट 1545	प्लॉट 1543
47	8	1545	रैयती	टांड	0.0020		प्लॉट 1545 अंश	प्लॉट 1554	प्लॉट 1545	प्लॉट 1544
48	8	1555	रैयती	टांड	0.0260		प्लॉट 1556	प्लॉट 1554	प्लॉट 1542	रास्ता
49	8	1556	रैयती	टांड	0.0430		प्लॉट1539एवं 1540	प्लॉट 1555	प्लॉट 1542	रास्ता
50	20	1557	रैयती	टांड	0.025	मोहनलाल यादव वो सहदेव यादव पिता–कारू यादव वो गुरूसहाय यादव वो भोला यादव पिता–लालधारी यादव वो बिरेन्द्र यादव वो राजकुमार यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–रूपन यादव वो गणपत पिता–खेमन वो अकल महतो पिता–.....वो भुनेश्वर यादव वो बालेश्वर यादव वो लखन यादव पिता–दर्शन यादव वो सखिया देवी पति–डीलो यादव वो रामेश्वर यादव पिता–रूपन यादव वो अशोक यादव वो रंजीत यादव वो गौतम यादव पिता–सुरेन्द्र यादव वो जगदीश यादव पिता–लिलो यादव वो भीखन यादव वो मुंशी यादव वो युगल यादव पिता–बोधी यादव वो जागेश्वर यादव पिता–बंधन यादव वो तुलसी यादव वो चन्दर यादव पिता–भातु यादव वो कोसुम देवी पति–जीतन यादव वो नुनू महतो पिता–चमन महतो वो वोजीर महतो पिता–चोकन महतो	प्लॉट 1557 अंश	रास्ता	प्लॉट 1539	प्लॉट 1558
51	20	1558	रैयती	टांड	0.010		प्लॉट 1558 अंश	रास्ता	प्लॉट 1557	प्लॉट 1559
52	20	1559	रैयती	टांड	0.0140		प्लॉट 1559अंश	रास्ता	प्लॉट 1558	प्लॉट 1560
53	5	1560	रैयती	टांड	0.0180	मुन्द्रीका देवी पति–खुशरू यादव वो छतरू यादव पिता–रघु गोप वो दर्शन यादव पिता–भोला गोप वो सहदेव यादव वो धानेश्वर यादव वो महादेव यादव वो कार्तिक यादवपिता–रामसहाय यादव वो बासदेव यादव पिता–लट्टु महतो	प्लॉट 1560अंश	रास्ता	प्लॉट 1559	प्लॉट 1564
54	8	1564	रैयती	टांड	0.0150	मसोमात ठगनी जौजे ललीत महतो वो बिसुन गोप वो बबुन गोप पेशरान रेवल गोप वो मोसोमात बुधनी दोख्तर जोवी गोप वो हेमन महतो वो नन्हकु वो बाबु पेशरान खेमचन्द महतो वो मोसोमात जगीया जोजे परेम महतो वो पुनीत वल्द जागो वो शीतवा वो चमना वो टेकवा पेशरान वीशु वो भीखो वो बुधन पेशरान बेचु वो मसो0 भीखनी जौजे खेमन वो धुपाल वो चमन वो मुरत वो नीरो पेशरान अनुप महतो	प्लॉट 1564अंश	रास्ता	प्लॉट 1560	प्लॉट 1565
55	1	1565	रैयती	टांड	0.010	गीता देवी पति–जागेश्वर यादव वो मसो0 बन्धनी पति–बंशी महतो वो कौशल्या देवी पति–तुलसी यादव वो बुलाकी यादव पिता–अमरीत महतो वो पिन्टु कुमार पिता–मनी यादव वो लक्ष्मण यादव वो किशोर यादव वो बिनोद यादव वो संतोष यादव पिता–प्रभु यादव वो विक्की यादव पिता–जगन यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–बंशी यादव वो प्रयाग यादव पिता–धानो महतो	प्लॉट 1565अंश	रास्ता	प्लॉट 1564	प्लॉट 1566
56	1	1566	रैयती	टांड	0.0140		प्लॉट 1566अंश	रास्ता	प्लॉट 1565	प्लॉट 1567
57	1	1567	रैयती	टांड	0.0090		प्लॉट 1567 अंश	रास्ता	प्लॉट 1566	प्लॉट 1568
58	20	1568	रैयती	टांड	0.0280	मोहनलाल यादव वो सहदेव यादव पिता–कारू यादव वो गुरूसहाय यादव वो भोला यादव पिता–लालधारी यादव वो बिरेन्द्र यादव वो राजकुमार यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–रूपन यादव वो गणपत पिता–खेमन यादव वो अकल महतो पिता–......वो भुनेश्वर यादव वो बालेश्वर यादव वो लखन यादव पिता–दर्शन यादव वो सखिया देवी पति–डीलो यादव वो रामेश्वर यादव पिता–रूपन यादव वो अशोक यादव वो रंजीत यादव वो गौतम यादव पिता–सुरेन्द्र यादव वो जगदीश यादव पिता–लिलो यादव वो भीखन यादव वो मुंशी यादव वो युगल यादव पिता–बोधी यादव वो जागेश्वर यादव पिता–बंधन यादव वो तुलसी यादव वो चन्दर यादव पिता–भातु यादव वो कोसुम देवी पति–जीतन यादव वो नुनू महतो पिता–चमन महतो वो वोजीर महतो पिता–चोकन महतो	प्लॉट 1568अंश	रास्ता	प्लॉट 1567	प्लॉट 1569
59	20	1569	रैयती	टांड	0.0160		प्लॉट 1569 अंश	रास्ता	प्लॉट 1568	प्लॉट 1573
60	11	1573	रैयती	टांड	0.0340	तुला महतो वल्द–सेवा महतो	प्लॉट 1573 अंश	रास्ता	प्लॉट 1569	प्लॉट 1574
61	18	1574	रैयती	टांड	0.0150	बंधनी देवी पति–बंशी यादव वो कैलाश यादव पिता–तुलसी यादव वो रेशमन यादव वो बालेश्वर यादव पिता–रिझो महतो वो रितलाल यादव वो प्रकाश यादव वो शंम्भु यादव पिता–डेगन महतो	प्लॉट 1574 अंश	रास्ता	प्लॉट 1573	प्लॉट 1577
62	1	1577	रैयती	टांड	0.0390	लिलावती देवी पति–भुनेश्वर यादव	प्लॉट 1577अंश	रास्ता	प्लॉट 1574	प्लॉट 1578
63	20	1578	रैयती	टांड	0.0240	भोला चरण पिता–लालधारी वो मोहनलाल यादव वो सहदेव यादव पिता–कारू यादव वो गुरूसहाय यादव वो भोला यादव पिता–लालधारी यादव वो बिरेन्द्र यादव वो राज कुमार यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–रूपन यादव वो गणपत पिता–खेमन वो अकल महतो पिता–..... वो भुनेश्वर यादव वो बालेश्वर यादव वो लखन यादव पिता–दर्शन यादव वो सखिया देवी पति–डीलो यादव वो रामेश्वर यादव पिता–रूपन यादव वो अशोक यादव वो रंजीत यादव वो गौतम यादव पिता–सुरेन्द्र यादव वो जगदीश यादव पिता–लिलो यादव वो भीखन यादव वो मुंशी यादव वो युगल यादव पिता–बोधी यादव वो जागेश्वर यादव पिता–बंधन यादव वो तुलसी यादव वो चन्दर यादव पिता–भातु यादव वो कोसुम देवी पति–जीतन यादव वो नुनू महतो पिता–चमन महतो वो वोजीर महतो पिता–चोकन महतो	प्लॉट 1578 अंश	रास्ता	प्लॉट 1577	प्लॉट 1580
64	20	1579	रैयती	बाद	0.0120		प्लॉट 1579 अंश	रास्ता	प्लॉट 1580	रास्ता
65	20	1580	रैयती	टांड	0.0360		प्लॉट 1580 अंश	रास्ता	प्लॉट 1578	प्लॉट 1579
66	1	1726	रैयती	चीरामीठा	0.0010	जसीया देवी पति–रामेश्वर यादव	प्लॉट 1726 अंश	रास्ता	प्लॉट 1728	प्लॉट 1725
67	1	1728	रैयती	टांड़	0.003	मसो0 बन्धनी पति–बंशी महतो वो कौशल्या देवी पति–तुलसी यादव वो बुलाकी यादव पिता– अमरीत महतो वो पिन्टु कुमार पिता–मनी यादव वो लक्ष्मण यादव वो किशोर यादव वो बिनोद यादव वो संतोष यादव पिता–प्रभु यादव वो विक्की यादव पिता–जगन यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–बंशी यादव वो प्रयाग यादव पिता–धानो महतो	प्लॉट 1728	रास्ता	प्लॉट 1729	प्लॉट 1729
68	1	1729	रैयती	टांड़	0.0030		प्लॉट 1729 अंश	रास्ता	प्लॉट 1730	प्लॉट 1728
69	1	1730	रैयती	टांड़	0.0060		प्लॉट 1730 अंश	रास्ता	प्लॉट 1731	प्लॉट 1729
70	11	1731	रैयती	बाद	0.0170	तुला महतो वल्द–सेवा महतो	प्लॉट 1731अंश	रास्ता	रास्ता	प्लॉट 1730
71	8	1735	रैयती	टांड	0.0010	जागेश्वर यादव वो महावीर यादव वो बासुदेव यादव पिता–बिहारी यादव	रास्ता	प्लॉट 1735 अंश	प्लॉट 1734	प्लॉट 1736
72	1	1736	रैयती	टांड	0.0010	मसो0 बन्धनी पति–बंशी महतो वो कौशल्या देवी पति–तुलसी यादव वो बुलाकी यादव पिता– अमरीत महतो वो पिन्टु कुमार पिता–मनी यादव वो लक्ष्मण यादव वो किशोर यादव वो बिनोद यादव वो संतोष यादव पिता–प्रभु यादव वो विक्की यादव पिता–जगन यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–बंशी यादव वो प्रयाग यादव पिता–धानो महतो वो बंधनी देवी पति–बुधू यादव वो प्रकाश यादव पिता–बंशी यादव	रास्ता	प्लॉट 1736 अंश	प्लॉट 1735	प्लॉट 1737
73	1	1737	रैयती	टांड	0.0040		रास्ता	प्लॉट 1737 अंश	प्लॉट 1736	प्लॉट 1738
74	1	1738	रैयती	टांड	0.0140		रास्ता	प्लॉट 1738 अंश	प्लॉट 1737	प्लॉट 566
कुल:–					0.9230					

यह अधिघोषणा हितबद्ध व्यक्तियों की आपत्तियों के सुनने और अधिनियम सं0–30/3013 की धारा 15 में प्रदत्त यथा उपबंधित सम्यक जांच के पश्चात् किया गया है। भूमि अर्जन के कारण पुनर्व्यवस्थापन के लिए संभावित परिवारों की संख्या जिनके लिए पुनर्व्यवस्थापन के क्षेत्र चिहिन्त किये गयेहै, जिसकी संक्षिप्त विवरणी निम्नवतहै:–

ग्राम–सोन्देडीह थाना–कोडरमा, थाना सं0–259, अंचल–कोडरमा, जिला–कोडरमा कुल रकवा–0.9230 एकड़ यानि–0.3735 हेक्टेयर भूमि अर्जन पदाधिकारी, कोडरमा के कार्यालय में किसी कार्य दिवस के दिन भूमि योजना का निरीक्षण किया जा सकता है।

पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन योजना के सार नीचे दिये गये हैं:–**शून्य**

ह0/–
समुचित सरकार–सह–
उपायुक्त, कोडरमा

PR 355935 Land Reforms(25-26).D

आजाद सिपाही
रांची, गुरुवार, 26 जून, 2025
www.azadsipahi.in
08

युवा कांग्रेस की संगठनात्मक चुनाव प्रक्रिया कल से

खूंटी (आजाद सिपाही)। झारखंड प्रदेश युवा कांग्रेस प्रदेश के सभी जिलों में संगठनात्मक चुनाव प्रक्रिया 27 जून से शुरू करेगी। इसके तहत प्रखंड, जिला एवं विधानसभा स्तरीय समिति के लिए 27 जून से नामांकन की प्रक्रिया शुरू होगी। नौ जुलाई को नामांकनों की स्क्रूटनी की जायेगी। 13 जुलाई से सदस्यता अभियान शुरू कर समितियों का विधिवत गठन किया जायेगा। यह जानकारी युवा कांग्रेस जिला समिति द्वारा बुधवार को स्थानीय परिसदन में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में पार्टी के जिला डीआरओ पुष्कर सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि बड़ी संख्या में युवाओं को पार्टी संगठन से जोड़ने के लिए नेता बनो, नेता चुनो अभियान शुरू किया गया है, जिसका पोस्टर आज लॉन्च किया गया। प्रदेश उपाध्यक्ष वेद प्रकाश मिश्रा ने कहा कि युवा कांग्रेस ऐसा मंच है जो गांव से युवाओं को उठाकर नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता प्रदान करता है। जिलाध्यक्ष अरूण सांगा ने कहा कि अधिक से अधिक युवा इस चुनावी प्रक्रिया में भाग लेंगे। उन्होंने कहा कि युवा पार्टी के रीढ़ होते हैं। अधिक से अधिक युवाओं को संगठन से जोड़कर पार्टी को मजबूती प्रदान करेंगे। मौके पर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष रवि मिश्रा, युवा कांग्रेस के जिला अध्यक्ष अरूण सांगा, उपाध्यक्ष बहा मुंडा समेत युवा कांग्रेस के अन्य जिला स्तरीय नेता कार्यकर्ता उपस्थित थे।

प्रखंड स्तरीय सुब्रतो मुखर्जी फुटबॉल प्रतियोगिता संपन्न

सोनाहातु (आजाद सिपाही)। थाना मैदान प्रखंड स्तरीय सुब्रतो मुखर्जी फुटबॉल प्रतियोगिता बुधवार को संपन्न हुआ। प्रतियोगिता में प्रखंड के 19 विद्यालय की टीम ने हिस्सा लिया। अंडर 17 बालक वर्ग में विजेता राजकीयकृत प्लस टू हाई स्कूल लादुपडीह की टीम रही। अंडर 17 बालिका वर्ग में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय की टीम विजेता रही। अंडर 15 बालक वर्ग में विजेता राजकीय मध्य लादुपडीह विद्यालय की टीम रही। लिटिल चैंपस अंडर 12 बालक वर्ग में राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय पोआदीरी विजयी रहा। अंडर 12 बालिका वर्ग में विजेता राजकीय मध्य विद्यालय कन्या सोनाहातु की टीम रही। खेल में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक प्रतिनिधि रोहिताश्व चौधरी, बीईओ शांति मुनि तिर्की, बीपीओ गोपाल ठाकुर, थाना प्रभारी चंदन कुमार, शारीरिक शिक्षक बिदेश्वर महतो, अनिल लोहार, विपिन गाड़ी, शंभू शरण सिंह मुंडा, मनदीप मिंस, श्याम सुंदर महतो, झरिया महतो, दीनबंधु महतो, अरुण कुमार, पहलाद अहीर आदि मौजूद थे।

जेएलकेएम के कार्यकर्ताओं ने मांडू विधायक का पुतला फूंका

खूंटी (आजाद सिपाही)। झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा (जेएलकेएम) के केंद्रीय अध्यक्ष सह डुमरी विधायक जयराम कुमार महतो पर अभद्र भाषा प्रयोग करने के विरोध में जेएलकेएम के कार्यकर्ताओं ने बुधवार शाम को नेताजी चौक खूंटी पर मांडू विधायक निर्मल महतो (तिवारी महतो) का पुतला फूंका। कार्यकर्ताओं ने तिवारी महतो से माफी मांगने को कहा। जिला अध्यक्ष कुमार ब्रजकिशोर ने कहा कि मांडू विधायक अपना मानसिक संतुलन खो चुके हैं और अनर्गल तथा असंवैधानिक भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। विधानसभा अध्यक्ष से मांडू विधायक की सदस्यता रद्द करने की मांग भी की गयी। मौके पर केंद्रीय उपाध्यक्ष सुमन पटेल, जिला महासचिव विक्रम महतो, सचिव मंटू स्वासी, संगठन मंत्री विश्वकर्मा उरांव, मीडिया प्रभारी मुन्ना कुमार, एससी मोर्चा के विजय नायक, उपाध्यक्ष बजरंग साहू, पवन कुमार, नगर अध्यक्ष कुलदीप गुप्ता, बीरेंद्र महतो, मुकेश महतो, चुन्नू नायक जीतनू महतो, नरेंद्र साहू, जयंत जायसवाल, निलेश मुंडा, कार्तिक कुम्हार, सिद्धांत राम, अमित सिंह, आनंद कश्यप आदि उपस्थित थे।

विधायक सुरेश बैठा ने किया खलारी में मैरेज हाल निर्माण के लिए भूमि पूजन

खलारी (आजाद सिपाही)। खलारी में मैरेज हाल बनने का मार्ग प्रशस्त हो गया है। बुधवार को स्थानीय विधायक सुरेशकुमार बैठा की उपस्थिति में निर्माण स्थल पर भूमि पूजन कर शिलापट्ट लगाया गया। खलारी प्रखंड परिसर से सटे खलारी पंचायत के टीटू टाइप मैदान में मैरेज हाल का निर्माण किया जायेगा। निर्माण डीएमएफटी फंड से किया जा रहा है। विधायक द्वारा मनोनीत खलारी प्रखंड के समन्वय समिति के संयोजक राजेशसिंह मिंटू ने कहा कि मैरेज हाल बन जाने से खलारी के लोगों के लिए शादी ब्याह जैसे आयोजन में काफी सहूलियत होगी। भूमि पूजन के दौरान खलारी बीडीओ संतोष कुमार, सीओ प्रणव अंबष्ट, जिप सदस्य सरस्वती देवी, मुखिया तेजी किस्पोट्टा, गोपाल तिवारी, राजेशसिंह मिंटू, साबीर अंसारी, अनिल पासवान, मोनू रजक, इंदिरा देवी, तनवीर आलम, गोपाल सिंह, विक्की सिंह, रोषनलाल, नवनीत पांडेय, गौरव पांडेय, नवीन, मो बशीर, मो अब्बास सहित अन्य उपस्थित थे।

रैयत जाहिद अली ने पिपरवार प्रबंधन को सौंपा ज्ञापन, 12 जुलाई से पिपरवार बंदी की दी चेतावनी

पिपरवार (आजाद सिपाही)। सीसीएल पिपरवार क्षेत्र के बहेरा निवासी सह विस्थापित रैयत जाहिद अली ने सीसीएल पिपरवार क्षेत्र के महाप्रबंधक को ज्ञापन देकर उनके पूर्वजों की जमीन पर अवैध तरीके से सीसीएल में दूसरे के द्वारा नौकरी प्राप्त करने की जांच कराने, सीसीएल द्वारा आवंटन भूमि पर बाधित रास्ता को खाली कराने एवं बकाया पेड़ पौधे का मुआवजा का भुगतान कराने की मांग की है। साथ ही 11 जुलाई तक मांगे पूरी नहीं होने पर 12 जुलाई से राजधर साईडिंग सहित सीसीएल के कामों को अनिश्चितकाल के लिए बंद करने की चेतावनी दी है। ज्ञापन के माध्यम से उन्होंने बताया कि उनके पूर्वजों की जमीन जिसका खाता नंबर 126, प्लॉट संख्या 138 तथा 144 रकबा 6 एकड़ 50 डेसिमल और खाता संख्या एक प्लॉट संख्या 40 रकबा 2 एकड़ 22 डिसमिल में किसी व्यक्ति के द्वारा गलत तरीके से प्रमाण देकर के सीसीएल में नौकरी एवं मुआवजा प्राप्त किया है। जबकि असली मालिकाना हक रखने वाले हमारे परिवार के लोग दर-दर भटकने को मजबूर है। उन्होंने ज्ञापन के माध्यम से प्रबंधन से इस पर सख्त कार्रवाई कर इंसाफ की मांग की है। साथ ही मांगे पूरी नहीं होने पर 12 जुलाई से पिपरवार क्षेत्र में अनिश्चितकालीन बंदी की घोषणा की है। ज्ञापन की प्रतिलिपि सीसीएल के संबंधित विभागों के अधिकारी एवं प्रशासन को भी दी गयी है।

तीन करोड़ की लागत से बनेगा बनई नदी पर डायवर्सन : सांसद

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। खूंटी-सिमडेगा मुख्य मार्ग पर क्षतिग्रस्त बनई नदी पुल के पास आवागमन बहाल करने के लिए तीन करोड़ रुपये की लागत से डायवर्सन का निर्माण कराया जायेगा। गुरुवार से डायवर्सन का काम शुरू हो जायेगा। यह जानकारी सांसद कालीचरण मुंडा ने दी। ज्ञात हो कि सांसद ने इस मुद्दे को लेकर राज्य की ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका सिंह पांडेय से मंगलवार को मुलाकात की थी। ज्ञात हो कि 19 जून को हुई भारी बारिश के कारण खूंटी- तोरपा-कोलेबिरा पथ के 8 किमी पर पेलौल गांव के पास स्थित पुल बह गया था। बारिश के कारण ओलंपियन निक्की प्रधान के गांव हेसल और सांसद कालीचरण मुंडा के पैतृक गांव माहिल जानेवाले रास्ते में भी निर्माणाधीन पुलिया का डाईवर्सन ध्वस्त हो गया है। इससे आमजनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। वैकल्पिक मार्ग भी जाम हो गये हैं। स्कूली बच्चे परेशान हैं। समस्या के सामाधान को लेकर सांसद कालीचरण मुंडा ने ग्रामीण वकिास मंत्री से मुलाकात की थी।

राज्य की ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका सिंह पांडेय के साथ सांसद कालीचरण मुंडा (बायें) और तोरपा विधायक सुदीप गुड़िया (दायें)।

तोरपा विधायक ने भी मंत्री को समस्याओं से कराया अवगत : तोरपा विधायक सुदीप गुड़िया ने भी मंगलवार को ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका सिंह पांडेय से उनके आवास पर मुलाकात कर अपने विधानसभा क्षेत्र के दो क्षतिग्रस्त पुलों के पुनर्निर्माण की मांग की। उन्होंने बताया कि हाल की भारी बारिश में खूंटी-कोलेबिरा मुख्य मार्ग स्थित पेलौल के पास तजना नदी पर बना पुल टूट गया है, जिससे जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। विधायक ने मंत्री को बताया कि आगामी सावन में इस मार्ग से आम्रेश्वरधाम जाने वाले कांवरियों को भी भारी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने बताया कि कमडारा-बानो मार्ग पर सोय नाले पर बना पुल भी क्षतिग्रस्त है, जिससे ग्रामीणों, विद्यार्थियों और आपात सेवाओं को आने-जाने में परेशानी हो रही है। विधायक ने दोनों स्थानों पर यथाशीघ्र तकनीकी टीम भेजकर स्थल निरीक्षण कराने और वैकल्पिक मार्ग की व्यवस्था सुनिश्चित करने की मांग की।

सांसद ने की खूंटी के शहीद और पर्यटन स्थलों को जोड़ने वाली सड़कों के निर्माण की मांग

खूंटी (आजाद सिपाही)। खूंटी के सांसद कालीचरण मुंडा ने बुधवार को झारखंड सरकार के पथ निर्माण विभाग के प्रधान सचिव से भेंट कर खूंटी लोकसभा क्षेत्र के शहीद स्थलों एवं पर्यटन स्थलों को जोड़ने वाली प्रमुख सड़कों के निर्माण को लेकर पत्र सौंपा। पत्र में उन्होंने इस क्षेत्र में लंबित सड़क परियोजनाओं को शीघ्र पूरा कराने का अनुरोध किया। पत्र में कहा गया है कि खूंटी जिला ऐतिहासिक व सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो स्वतंत्रता संग्राम के महानायक बिरसा मुंडा की कर्मभूमि रही है। इसके साथ ही यह क्षेत्र कई शहीदों की बलिदान स्थली एवं प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण पर्यटन स्थल होने के कारण विशेष महत्व रखता है, लेकिन आज भी इन स्थलों तक पहुंचने के लिए उचित सड़क मार्ग नहीं होने से आम जनता, पर्यटक और स्थानीय ग्रामीणों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

ईचागढ़ में विधायक ने किया पूर्व उप मुख्यमंत्री सुधीर महतो की आदमकद प्रतिमा का अनावरण

आजाद सिपाही संवाददाता

ईचागढ़। प्रखंड क्षेत्र के तुता पंचायत के झाडूआ मोड़ पर बुधवार को झारखंड के पूर्व उपमुख्यमंत्री दिवंगत सुधीर महतो के 69वीं जयंती के अवसर पर उनके आदमकद मुर्ति का अनावरण विधायक सह उनके धर्मपत्नी सविता महतो ने विधिवत रुप से फीता काट व दीप प्रज्वलित कर किया। इस दौरान सविता महतो नें कहा कि उनके दिवंगत पति सुधीर महतो के अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए ईचागढ़ वासियो ने जो प्यार दिया है उसे भूलाना नामुमकिन है। उन्होंने कहा मैं हर वक्त ईचागढ़ के जनता के लिए खड़ी हूं।

उन्होंने कहा कि ईचागढ़ की जनता का काफी पुराना मांग था कि ईचागढ़ में दिवंगत नेता सुधीर महतो की मुर्ति लगे, जिसे आज जनता के प्यार से पूरा किया गया। उन्होंने दो बार आशीर्वाद देने के लिए ईचागढ़ के जनता का आभार जताया। साथ ही उन्होंने कहा कि ईचागढ़ की जनता का काफी पुराना मांग था कि ईचागढ़ में और एक डिग्री कॉलेज की स्थापना हो, जिसका भी प्रशासनिक स्वीकृति मिल गयी है। जल्द ही डिग्री कॉलेज का निर्माण भी होगा, जिससे क्षेत्र के छात्र-छात्राओं को ऊंची शिक्षा मिल पायेगी। वहीं पूर्व उपमुख्यमंत्री दिवंगत सुधीर महतो के आदमकद मूर्ति स्थापना के लिए झाडूआ मोड़ पर जमीन दान देने वाले राजेंद्र नाथ गोप को विधायक सविता महतो और उनकी पुत्री स्नेहा महतो ने साल ओढ़ाकर सम्मनित किया। सविता महतो ने कहा कि उनके दिवंगत पति सुधीर महतो के प्रति लोगों का प्यार आज भी उतना ही है। उन्होंने जमीन दाता के परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया। मौके पर झामुमो केंद्रीय सदस्य चारुचांद किस्कु, काबलु महतो, ओम प्रकाश लायेक, स्नेहा महतो, उपेन चंद्र महतो, इंद्रजीत, महतो, युधिष्ठिर मांझी, निरंजन महतो, समेत काफी संख्या में झामुमो कार्यकर्ता व उनके चाहनेवाले उपस्थित थे।

खलारी प्रखंड में आम महोत्सव का आयोजन

कसानों को किया गया सम्मानित

आजाद सिपाही संवाददाता

खलारी। खलारी प्रखंड के राजीव गांधी सेवा केंद्र में आम महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें प्रखंड के सभी पंचायत से बिरसा हरित ग्राम आम बागवानी योजना से लाभान्वित लाभुक अपने-अपने आम बागवानी योजना से लगाए हुए आम और विभिन्न फलों के साथ आयोजन में उपस्थित हुए। लाभुकों में आयोजन से काफी उत्साह नजर आया और अपने बागवानी से उपजे फल में विभिन्न नस्ल के आम जैसे आम्रपाली, मल्लिका, मालदा, कृष्णभोग, स्वर्णरेखा, दशहरी, फजली, बीजू आम और फल में अमरूद, अनार, अंजीर, चीकू, निंबू, बेर और पोमेलो फल, अंतः फसल में भिंडी, तेज पत्ता, करी पत्ता, बैंगन, करेला और नेनुआ तथा गेंदा फूल के साथ लाभुक शामिल हुए। कार्यक्रम में प्रखंड विकास पदाधिकारी संतोष कुमार, अंचल अधिकारी प्रणव अंबष्ट, जिला परिषद सदस्य सरस्वती देवी, विधायक प्रतिनिधि मोनू रजक आदि उपस्थित थे। आयोजन की शुरूआत में प्रखंड विकास पदाधिकारी के द्वारा आम बागवानी योजना से संबंधित उपयोगिता के बारे में जानकारी दिया गया, उसके बाद जिला परिषद सदस्य सरस्वती देवी के द्वारा सभी किसान को उनके कार्य के लिए सराहना व्यक्त किया गया एवं सभी मुखिया गण द्वारा संबोधन किया गया। सभी उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किसानों को सम्मानित किया गया। प्रखंड खलारी के उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कर्मियों को भी पदाधिकारियों द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। जिसमें लपरा मुखिया पुतुल देवी और पुष्पा खलखो, कनीय अभियंता रमेश कुमार गुप्ता, पंचायत सचिव रिशु कुमारी, ग्राम रोजगार सेवक विश्वरंजन कुमार और लालमोहन राम शामिल थे।

पिपरवार पुलिस ने कई जगहों पर चलाया नशामुक्ति जागरूकता अभियान

नशापान समाज के लिए अभिषाप : अभय कुमार

आजाद सिपाही संवाददाता

पिपरवार। चतरा पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर पिपरवार पुलिस के द्वारा थाना क्षेत्र के विभिन्न जगहों पर नशा मुक्ति को लेकर जागरूकता अभियान चलाया। पिपरवार थाना प्रभारी अभय कुमार के नेतृत्व में पुलिस पदाधिकारी एवं जवानों ने थाना क्षेत्र के बचरा चार नंबर चौक, बस स्टैंड, सब्जी मंडी, थाना चौक, बचरा बाजारटांड़, पीपल चौक सहित स्थान पर जागरूकता अभियान चलाते हुए आम नागरिकों एवं युवाओं से नशापान नहीं करने के लिए प्रेरित किया। इस संबंध में पिपरवार थाना प्रभारी अभय कुमार ने बताया कि झारखंड सरकार के निर्देश पर और चतरा पुलिस अधीक्षक के आदेश पर पिपरवार थाना क्षेत्र में नशा मुक्ति को लेकर पुलिस के द्वारा जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है, जिसमें अवैध अफीम, ब्राउन सुगर एंव अन्य नशीले मादक पदार्थ के विरुद्ध जागरूकता अभियान चलाया गया। उन्होंने कहा कि नशापान समाज के लिए अभिशाप है और इसके रोकथाम के लिए समाज के लोगों को जागरूक होने की जरूरत है। इसके रोकथाम के लिए जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम में पिपरवार थाना प्रभारी अभय कुमार, अवर निरीक्षक अभिमन्यु कुमार सहित कई पुलिस पदाधिकारी और जवान शामिल थे।

एनके एरिया में निकाली गयी स्वच्छता रैली

खलारी (आजाद सिपाही)। एनके एरिया सीसीएल में स्वच्छता पखवाड़ा के तहत बुधवार को आम जनों में जागरूकता फैलाने को लेकर स्वच्छता रैली निकली गयी। महाप्रबंधक कार्यालय से रैली की शुरूआत की गयी, जिसमें क्षेत्र के सभी बड़े अधिकारी, श्रमिक प्रतिनिधि और स्कूली बच्चे शामिल हुए। महाप्रबंधक दिनेश कुमार गुप्ता समेत अन्य अधिकारियों और श्रमिक प्रतिनिधियों ने हाथों में झाड़ू लेकर परिसर में फैले कूड़े कचरे की साफ सफाई की। इस अवसर पर महाप्रबंधक दिनेश कुमार गुप्ता ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा देश में चलाए जा रहे स्वच्छ भारत अभियान के तहत देश में स्वच्छता के प्रति लोग जागरूक हुए हैं। मौके पर मुख्य कार्मिक अधिकारी शैलेंद्र कुमार, महाप्रबंधक संचालन जितेंद्र कुमार, राकेश रोशन, निखिल अखौरी, श्रमिक प्रतिनिधि मिथिलेश कुमार सिंह, पिंकू सिंह, डीपी सिंह, ओम प्रकाश शर्मा, सुनील सहित महाप्रबंधक कार्यालय की कई महिला कर्मी भी मौजूद थी।

आपातकाल के 50 वर्ष पूरे होने पर भाजपा ने काला दिवस मनाया

खूंटी (आजाद सिपाही)। आपातकाल के 50 वर्ष पूरे होने पर भाजपा के जिला कार्यालय में बुधवार को काला दिवस मनाया गया। कार्यकम की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष चंद्रशेखर गुप्ता ने की। मुख्य अतिथि लोहरदगा के पूर्व सांसद सुदर्शन भगत और विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रदेश कार्य समिति सदस्य प्रेम मितल उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री संजय साहू और धन्यवाद ज्ञापन महामंत्री निखिल कंडुलना ने किया। कार्यक्रम में आपातकाल के प्रत्यक्षदर्शियों को भी सम्मानित किया गया। उनमें रामचंद्र महतो, मुसाफिर विश्वकर्मा, राघुराम महतो, जितवाहान महतो, महंत सिंह, सुभाष चंद्र पाहन, करमदयाल महतो, राजकुमार सिंह आदि आपातकाल के भुक्तभोगी उपस्थित थे। उन्होंने भी अपने अनुभव साझा किये। मौके पर रूप से जिला उपाध्यक्ष बिनोद नाग, मदन मोहन मिश्रा, कोषाध्यक्ष प्रियांक भगत, मदन मोहन गोप, आदर्श अंसुल, मनोज गुप्ता, शिवनारायण शाहदेव सुबोध कुमार विनोद धान आदि उपस्थित थे।

तेल टैंकर की चपेट में आने से स्कूटी सवार की मौत

मृतक की फाइल फोटो।

ईचागढ़ (आजाद सिपाही)। ईचागढ़ थाना क्षेत्र के सिल्ली रांगामाटी सड़क बड़ा चुनचुड़ीया गांव के समीप बुधवार को एक स्कूटी सवार व्यक्ति को पेट्रोल टेंकर (NL 01 AB 4891) पीछे से ठोकर मारने से मौके पर ही स्कूटी सवार की मौत हो गयी। सुचना मिलते ही ईचागढ़ पुलिस घटनास्थल पर पहुंचे व मृतक को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु सरायकेला सदर अस्पताल भेज दिया। स्कूटी सवार मृतक की पहचान रांची जिला के सोनाहातु थाना क्षेत्र के जामुदाग निवासी 37 वर्षीय पवन कुमार मंडल के रूप में की गयी। मिली जानकारी के अनुसार मृतक गम्हारीया इन्डो टेनिस टुल रूम में चालक का काम करते थे।

निमडीह में फिर एक जंगली हाथी की मौत

ईचागढ़ (आजाद सिपाही)। सरायकेला खरसावां जिले के नीमडीह थाना क्षेत्र के हेवन गांव में मंगलवार रात एक जंगली हाथी की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गयी। बुधवार सुबह जब ग्रामीण खेतों की ओर गये तो उन्हें वहां एक हाथी मृत अवस्था में मिला। इस बात की जानकारी तुरंत ही गांव के जनप्रतिनिधियों, पुलिस और वन विभाग को दी गयी। सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंच गई और जांच शुरू कर दी गई है। फिलहाल हाथी की मौत के कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। वन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि हेवन इलाके में 3 जंगली हाथी देखे गये थे, जिनमें से एक की मौत हो गयी है। बाकी 2 हाथियों की निगरानी की जा रही है। गौरतलब है कि इसी इलाके में बीते 5 जून को भी एक जंगली हाथी की मौत हुई थी।

नक्सली अमित मुंडा के घर पुलिस ने चिपकाया इश्तेहार

तमाड़ (आजाद सिपाही)। कराईकेला थाना (चाईबासा) पुलिस ने नक्सली अमित मुंडा के खिलाफ ढोल-नगाड़े के साथ इश्तेहार चस्पा किया। अमित मुंडा, पिता सुखराम मुंडा तमाड़ थाना क्षेत्र तामराना गांव निवासी है और उसके खिलाफ कराईकेला थाना कांड संख्या 13/2023 और 21/2023 के तहत मामला दर्ज है। पुलिस टीम ने परिजनो से आग्रह किया की अमित को जल्द आत्मसमर्पण करने के लिये प्रेरित करे।

महावीरनगर में कुआं से महिला का शव मिला

खलारी (आजाद सिपाही)। खलारी थाना क्षेत्र के बुकबुका पंचायत स्थित महावीर नगर बस्ती में बुधवार की सुबह लोगो ने एक महिला का शव कुआं में तैरता देखा। घटना की जानाकरी पाकर आसपास के दर्जनों महिला-पुरूष महिला का शव देखने कुआं के पास पहुंच गये। मौके पर खलारी थाना के एएसआई राजकिशोर सिंह व एसआई देव कुमार दास, महिला पुलिस एएसआई मोनिका टुडु के साथ पहुंचकर शव को बाहर निकाला। लोगो ने शव देखकर इसकी पहचान बस्ती के ही रहने वाले स्व जनगरनाथ साव की 30 वर्षीय पुत्री इंदू कुमारी के रूप में किया। लोगों ने बताया कि इंदु घर पर अकेले ही रहती थी। उसका परिवार बाहर रह रहा है। वहीं पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा किया और पोस्टमार्टम के लिए रांची भेज दिया। वहीं खलारी पुलिस मामले की जांच कर रही है।

सांसद प्रतिनिधि रविंद्र सिंह और मुखिया रीना देवी ने चतरा डीसी को सौंपा ज्ञापन

चतरा डीसी को ज्ञापन सौंपते सांसद प्रतिनिधि और मुखिया।

पिपरवार (आजाद सिपाही)। हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के चतरा जिला सांसद प्रतिनिधि रविंद्र कुमार सिंह और बचरा दक्षिणी पंचायत की मुखिया रीना देवी ने बुधवार को चतरा उपायुक्त कीर्ति श्री से मिलकर उन्हे ज्ञापन सौंपा। जिसमें बचरा उच्च विद्यालय की एकमात्र महिला शिक्षिका का स्थानांतरण रुकवाने की मांग की गयी है। ज्ञापन के माध्यम से उन्होंने कहा कि चतरा जिला का बचरा उच्च विद्यालय एक मुख्य स्कूल है। जिस स्कूल में 60 प्रतिशत से ज्यादा छात्रायें पढ़ती हो, वहां पर एकमात्र महिला शिक्षिका को स्कूल में प्रतिनियोजन के लिए भेजा जाना बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। वर्तमान में एक भी महिला शिक्षिका नहीं हैं। जिसके कारण स्कूल में पढ़ने वाली छात्राओं को परेशानी हो रही है। जिला शिक्षा अधिकारी का बचरा उच्च विद्यालय के प्रति उदासीन व्यवहार को दर्शाता है। इससे अभिभावकों में भी काफी रोष है। स्कूल में पढ़ाई में व्यवधान हो रहा है। उन्होंने डीसी से स्कूल में छात्राओं की संख्या एवं पढ़ाई को देखते हुए यथाशीघ्र शिक्षिका रेखा कुमारी को पुनः बचरा उच्च विद्यालय में पदस्थापित करने की मांग की है। वहीं डीसी ने इस पर सकारात्मक पहल करने का भरोसा दिया है।

आरसेटी में फास्ट फूड स्टॉल उद्यमी बैच को दी गयी विदाई

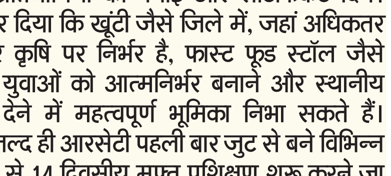

खूंटी (आजाद सिपाही)। बैंक ऑफ इंडिया द्वारा संचालित, ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (आरसेटी) खूंटी में फास्ट फूड स्टॉल उद्यमी बैच के विदाई समारोह का आयोजन बुधवार को किया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक मिथिलेश कुमार ने प्रशिक्षण पूरा करने वाले सभी प्रतिभागियों को बधाई और सर्टिफिकेट दिये। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि खूंटी जैसे जिले में, जहां अधिकतर आबादी ग्रामीण है और कृषि पर निर्भर है, फास्ट फूड स्टॉल जैसे स्वरोजगार के अवसर युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने और स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। निदेशक ने बताया कि जल्द ही आरसेटी पहली बार जुट से बने विभिन्न उत्पाद के लिए 26 जून से 14 दिवसीय मुफ़्त प्रशिक्षण शुरू करने जा रहा है। खूंटी जिले का कोई भी निवासी जिनकी उम्र 18-45 के बीच है, वह प्रशिक्षण ले सकता है। आरसेटी ट्रेनिंग के बाद बैंक से ऋण एवं मार्केटिंग मे भी संस्था मदद करेगी। अधिक जानकारी के लिए कर्रा रोड स्थित आरसेटी खूंटी से संपर्क किया जा सकता है।

बिट्टू की टीम को हरा बुढ़मू 11 बना चैंपियन

रातू (आजाद सिपाही)। प्रखंड के हुरहुर मैदान में युवा स्टार नाइट क्लब हुरहुरी की ओर से आयोजित तीन दिनी नाइट सर्कल क्रिकेट टूर्नामेंट का समापन हो गया। 21 जून से शुरू हुई इस खेल प्रतियोगिता में 16 टीमों के खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। फाइनल मुकाबले में रातू आम टांड के बिट्टू 11 की टीम ने जीत के लिए 8 ओवर में 40 रन का लक्ष्य रखा। जिसको बुढ़मू 11 की टीम ने सात ओवर में ही जीत दर्ज कर चैंपियनशिप 2025 अपने नाम दर्ज किया। पुरस्कार वितरण समारोह में कांग्रेसी नेता मियां जान अंसारी, भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के इमरान खान, कलामुद्दीन अंसारी, अफताब आलम, समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष सिद्दीक अंसारी आदि उपस्थित होकर खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया। चैंपिय बनने वाली बुढ़मू 11 को एक खस्सी, 21 हजार रुपया और ट्रॉफी, जबकि उप विजेता बिट्टू 11 आमटांड को 15 हजार रुपये और ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। मैंन ऑफ द मैच बुढ़मू 11 के खिलाड़ी पिंटू अंसारी और मैंन ऑफ द सीरीज बिट्टू 11 के कप्तान बिट्टू को मिला।

नौ साल बांग्लादेश की जेल में रहने के बाद हुई घर वापसी

मानसिक स्थिति खराब होने के चलते अनजाने में पहुंच गया था बांग्लादेश

करीब छह महीना बंगाल में भटकने के बाद वहां की पुलिस से संपर्क कर नामकुम पुलिस ने पहुंचाया घर

आजाद सिपाही संवाददाता

नामकुम। नामकुम निवासी अजय टोप्पो एक दशक के बाद अंततः अपने घर लौट आए। वर्ष 2014 में धुर्वा बाजार से अचानक लापता हुए अजय की मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी, जिसके चलते वे रांची से भटकते हुए अंतरराष्ट्रीय बॉर्डर पार कर बांग्लादेश पहुंच गए। मानसिक अस्थिरता की वजह से अजय को समझ नहीं आया कि वे कब और कैसे बॉर्डर पार कर गए। बांग्लादेश पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया, जहां वे करीब 9 साल तक बंद रहे। दिसंबर 2024 में अदालत के आदेश पर उन्हें रिहा किया गया। रिहाई के बाद बांग्लादेश पुलिस ने उन्हें बिहार के एक अन्य युवक के साथ पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना बॉर्डर पर छोड़ा। जहां बिहार निवासी युवक तो अपने घर चला गया, लेकिन अजय टोप्पो वहीं भटकते रहे। उनकी पहचान न होने के कारण वे काफी समय तक वहीं रुके रहे। इस बीच दिल्ली स्थित गृह मंत्रालय की ओर से एक पत्र के माध्यम से झारखंड पुलिस को सूचना मिली। इसके बाद झारखंड पुलिस के स्पेशल ब्रांच के निर्देश पर नामकुम थाना पुलिस ने अजय की खोजबीन शुरू की। जांच में पुष्टि हुई कि अजय वर्ष 2014 से लापता है। इसके बाद झारखंड पुलिस ने पश्चिम बंगाल पुलिस से संपर्क कर अजय की तस्वीर और अन्य जानकारियां साझा की। पुष्टि होने पर नामकुम थाना की टीम उत्तर 24 परगना पहुंची और अजय को वापस लेकर आई। बुधवार को अजय टोप्पो रांची पहुंचे, जहां पहले उन्हें नामकुम थाना लाया गया और फिर रिश्तेदारों की पहचान के बाद गांव भेजा गया। अजय के माता-पिता का निधन पहले ही हो चुका है, लेकिन गांववालों और रिश्तेदारों ने उन्हें पहचानकर खुशी जाहिर की। इधर, अजय टोप्पो ने कहा कि उनकी मानसिक स्थिति कमजोर थी, जिसके चलते वे रास्ता भटक गए थे। उन्होंने झारखंड पुलिस और बंगाल पुलिस का आभार जताते हुए कहा कि इन्हीं की मदद से वे आज अपने घर लौट पाए है।

सत्यापन के बाद अजय टोप्पो को रिश्तेदारों को सौंपती नामकुम पुलिस।

खेतों में अपनी बर्बाद फसलों को देख किसानों के छलक रहे आंसू

सरकार से अविलंब मुआवजा देने की कर रहे मांग

आजाद सिपाही संवाददाता

बेड़ो। प्रखंड मुख्यालय सहित आस पास के गांवों में बुधवार को नौवें दिन भी मौसमी बारिश का दौर जारी रहा। जिसका असर खेतों में तैयार टमाटर, कद्दू, भिंडी, मिर्चा, फूलगोभी, पत्तागोभी, बैगन, झिंगी और गोंगरा आदि फसलों पर पड़ रहा है। पानी से लबालब भरे खेतों में बर्बाद होती फसलों को देख किसानों के आंखों से आंसू छलक रहे हैं। खासकर ग्रामीण क्षेत्र में लगातार हो रही बारिश से परेशान किसान सब्जी की फसल को पौधा सहित घर में लाकर उसे तोड़ने पर मजबूर हैं। उन्हें सब्जियों के बीच खराब हो चुके फसल की छंटनी करनी पड़ रही है। वहीं, प्रखंड के कई गांवों में आधी से अधिक फसल बर्बाद हो चुकी है, जिससे किसानों को दुकान की उधारी के साथ ही बैंकों का कर्ज चुकाने की चिंता भी सता रही है। बतातें चलें कि बेड़ो प्रखंड के किसान सब्जी उत्पादन में अग्रिणी है। पूरे झारखंड में बेड़ो सब्जी मंडी प्रसिद्ध हैं, जहां हर गांव में लगभग बीस से तीस ऐसे किसान हैं, जो सब्जी लगाते हैं। उन सभी को मौसम की पहली ही बारिश में नुकसान का चोट सहन करना पड़ रहा है। दूसरी ओर, लगातार बारिश से आम जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है। जगह-जगह जलजमाव से लोग बेहद परेशान हैं।

अविलंब मुआवजा मिले

प्रखंड के किसान किसानों का कहना है कि लगातार बारिश के चलते उनकी आशाओं पर पूरी तरह पानी फिर गया है। बैंक से ऋण लेकर कई एकड़ में सब्जियों की खेती की थी, जो बारिश से पूरी तरह नष्ट हो गयी है। अब बैंक का कर्ज कैसे चुकाएंगे और कैसे आजीविका चलाएंगे?। किसानों का कहना है कि लगातार बारिश से तैयार मिर्चा एवं पके टमाटरों में पानी लग गया है। जमीन में पड़े रहने से वे सड़ने लगे हैं। उनका कहना है कि मार्च महीने में भी ओलावृष्टि की वजह से फसलों के नष्ट होने से वैसे ही आर्थिक स्थिति खराब हो गई है। इस बार सब्जियों की अच्छी पैदावार हुई थी, जिससे काफी उम्मीदें थी, लेकिन लगातार बारिश से वह उम्मीद भी टूट गयी है। किसानों ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से फसलों के नुकसान का आंकलन कर अविलंब मुआवजा देने की मांग की है।

खिजरी विधायक ने नामकुम में रखी 3 विकास योजनाओं की आधारशिला

नामकुम (आजाद सिपाही)। प्रखंड में खिजरी विधायक सह कांग्रेस विधायक दल के उप नेता राजेश कच्छप ने तीन महत्वपूर्ण विकास योजनाओं का शिलान्यास किया। इनमें सड़क निर्माण एवं सुदृढ़ीकरण से संबंधित योजनाएं शामिल है, जिससे क्षेत्र के लोगों को बेहतर आवागमन की सुविधा प्राप्त होगी। विधायक ने बताया कि मुख्यमंत्री ग्राम सड़क सुदृढ़ीकरण योजना के तहत तेतरी से सहेरा तक 1.95 किलोमीटर सड़क को मजबूत एवं पक्की बनाई जाएगी। इसके अलावा रांची क्षेत्रीय विकास प्राधिकार के अंतर्गत खिजरी गांव कोचाटोली से विकास नगर के नया टोला तक विभिन्न गलियों में पीसीसी पथ का निर्माण किया जाएगा। यह कार्य 2.42 करोड़ रुपये की लागत से पूरा होगा। जबकि तीसरी योजना के तहत विकास नगर खिजरी कोचाटोली से नया टोली तक भी पीसीसी सड़क का निर्माण किया जाना है, जिसकी लागत 2.47 करोड़ है। विधायक ने कहा कि खिजरी विधानसभा क्षेत्र के हर गली-मोहल्ले में पक्की सड़क बनाना मेरी प्राथमिकता है। वर्षों से इन सड़कों की मांग हो रही थी, जिसे अब पूरा किया जा रहा है। उन्होंने निर्माण कार्यों में पारदर्शिता और गुणवत्ता सुनिश्चित करने की बात कहते हुए चेतावनी दी कि संवेदक द्वारा गड़बड़ी करने पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। इस मौके पर विधायक प्रतिनिधि एतवा मुंडा, खिजरी विधानसभा के प्रभारी सतीश पंडा, मुखिया निशा उरांव, पंसस रोजलीन मिंज, 52 पड़हा अध्यक्ष प्रदीप तिर्की, शारदा टोप्पो, जातू टोप्पो, राजदीप कच्छप, लखन नायक, रतन उरांव, रिंकू कुमार, दिलीप रजक, कृष्ण गोप, लक्ष्मण लकड़ा, तेफिल सांगा, संजय महतो, बालू महतो, राजेश साहू, पंचू तिर्की और दिनेश चंद्र प्रमाणिक आदि शामिल थे।

बंद टोल प्लाजा को खोलने की वार्ता विफल

टोल पर तीसरे दिन भी नहीं हुई वाहनों से टोल टैक्स की वसूली

आजाद सिपाही संवाददाता

इटकी। बीडीओ प्रवीण कुमार और सीओ मोहम्मद अनीस की ओर से बंद टोल प्लाजा को खोलने को लेकर बुधवार को भुक्तभोगी परिवार के सदस्यों एवं ग्रामीणों के साथ वार्ता की, जो विफल रही। सभी सातो भुक्तभोगी परिवार के सदस्य अपनी मांग पर अड़े रहे। जिससे राष्ट्रीय राजमार्ग 23 के पिस्कानगड़ी चौली पतरा एवं इटकी मोड़ स्थित टोल प्लाजा में बुधवार को तीसरे दिन भी दिन ग्रामीणों ने वाहनों से टैक्स वसूली करने नहीं दिया और गेट खुला रखा। जिससे विभाग को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा। टोल प्लाज में बिना रोक टोक के सैकड़ों वाहनों का दिनभर अवागमण जारी रहा। बतातें चलें कि सोमवार को सैकड़ों ग्रामीणों ने टोल प्लाजा के निकट प्रदर्शन कर रांची-गुमला मुख्य मार्ग को साढ़े 10 घंटे तक जाम कर रखा था। आंदोलनकारी ग्रामीण विगत चार फरवरी को टोल प्लाजा हाई मास्क लाईट का टावर के यात्रियों से भरे टेंपो पर गिरने से दब कर मारे गये मृतक और घायलों को मुआवजा देने की मांग कर रहे थे। इस दौरान आंदोलनकारी वरीय अधिकारी और जन प्रतिनिघियों को आंदोलन स्थल पर बुलाने पर अड़े रहे। पर रात आठ बजे तक कोई वरीय प्रशासनिक अधिकारी और विधायक-सांसद आदि नहीं पहुंचा। इससे आक्रोशित ग्रामीणों ने टोल प्लाजा को अनिश्चितकाल के लिए ताला बंदी कर दिया है। साथ ही प्रशासन को चेताते हुए कहा कि जब तक मृतक और घायलों को बाकि का मुआवजा राशि नहीं दे दिया जाता तब तक टोल प्लाजा में किसी प्रकार की वसूली नहीं करने दिया जायेगा।

सफलता का कोई शॉर्ट कट नहीं होता: रामटहल चौधरी

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। बुटी आरटीसी हाई स्कूल में बुधवार को प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित हुआ। जिसका उद्घाटन विद्यालय के चेयरमैन पूर्व सांसद रामटहल चौधरी, सचिव डॉ पारस नाथ महतो एवं निदेशक डॉ रूद्र नारायण महतो ने संयुक्त रूप से किया। इस दौरान कक्षा 10वीं एवं 12वीं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसमें दिव्या कुमारी, कंचन कुमारी, स्वाती कुमारी, गिरिजा कुमारी, रुहानी सब्बा आदि शामिल हैं। इस अवसर पर रामटहल चौधरी ने कहा कि सफलता का कोई शॉर्ट कट नहीं होता है। कड़ी मेहनत, लगन और निरंतर प्रयास से ही आप अपने लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं। वहीं, डॉ पारसनाथ महतो ने कहा कि बच्चों की यह सफलता उनकी मेहनत, माता-पिता के सहयोग और शिक्षकों के मार्गदर्शन का परिणाम है। डॉ रूद्र नारायण महतो ने भी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि आज का यह सम्मान भविष्य में उनके आत्मविश्वास को बढ़ाएंगे और उन्हें जीवन में बड़े लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित करेंगे। मौके पर प्राचार्य सुनील सिंह, आरटीसी हाई स्कूल (जैक) की प्राचार्या डॉ शांति कुमारी, आरटीसी इंटर कॉलेज के प्राचार्य विकास कुमार आदि उपस्थित थे।

बीडीओ-बीपीओ पर विकास योजनाओं में कमीशनखोरी का आरोप

पिस्कानगड़ी (आजाद सिपाही)। प्रखंड प्रमुख मदुवा कच्छप और उपप्रमुख अफसाना परवीन सहित पांच अन्य पंसस ने रांची डीसी सहित ग्रामीण विकास विभाग के सचिव और डीडीसी को ज्ञापन सौंपकर बीडीओ दीपाली भगत एवं प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी कुमारी अनुजा पर भ्रष्टाचार में लिप्त होने का गंभीर आरोप लगाते हुए यहां से हटाने की मांग की है। साथ ही इनके पूरे कार्यकाल की जांच कराने की मांग की। प्रखंड प्रमुख ने बीडीओ और बीपीओ पर अपने कार्यकाल में मनरेगा सहित अन्य विकास योजनाओं में जम कर कमीशनखोरी करने, दलालों और अपने चहेते वेंडरों को ही काम देने सहित अन्य आरोप लगाया हैं। मामलों की जांच करते हुए दोनों को नगड़ी प्रखंड से अविलंब हटाने की मांग की है। ज्ञापन में बताया गया कि बीपीओ कुमारी अनुजा लंबे समय से यहां पदस्थापित हैं। दोनों मिलकर द्वारा 15वें वित्त आयोग के कार्य, मनरेगा, समाजिक सुरक्षा के तहत विभिन्न प्रकार के पेंशन, प्रधानमंत्री आवास और प्रखंड में चल रहे सभी प्रकार के विकास कार्यों में जम कर कमीशनखोरी कर रहे हैं। इस संबंध में पूछे जाने पर बीडीओ ने कहा कि आरोप झूठे और बेबुनियाद हैं।

रथयात्रा को लेकर इटकी थाने में शांति समिति की बैठक

इटकी (आजाद सिपाही)। जगन्नाथ महाप्रभु की रथ यात्रा को लेकर इटकी थाना परिसर में बुधवार को थाना प्रभारी मनीष कुमार की अध्यक्षता में बैठक हुई। जिसमें सभी समुदाय के लोग शामिल हुए। इसमें रथ यात्रा के दौरान रथ के चलने के रास्ते में कोई व्यवधान ना हो इसके लिए दुकानदारों को सड़क से निर्धारित दूरी पर अपना दुकान लगवाने का निर्णय लिया गया। पूरे मेला परिसर में प्रस-ासन के साथ स्थानीय वोलेटियर असमाजिक तत्वों के साथ अन्य गतिविधियों की निगरानी करेंगें। बाजार परिसर में ही प्रशासन के लोग कैंप में रहेंगे, जो सूचना पर त्वरित कार्रवाई करेंगें। बैठक में लाल रामेश्वर नाथ शाहदेव, उप प्रमुख परवेज राजा और राजकुमार तिर्की आदि मौजूद थे।

नगड़ी में पांच हजार किसानों को बांटने के लिए मिला महज 90 किलो बीजा धान

पिस्कानगड़ी (आजाद सिपाही। नगडी प्रखंड किसान बहुल क्षेत्र है। जहां कुल 13 पंचायत है। यहां के किसान सालोंभर कृषि कार्य में लगे रहते हैं। पूरे प्रखंड में लगभग पांच हजार किसान हैं। बारिश के मौसम में आर्थिक रूप से कमजोर किसानों को बाजार से बीजा धान खरीदने में कठिनाई होती हैं। इस बाबत किसानों ने कहा कि सरकार द्वारा किसानों के हित बहुत सारे योजनाएं चलाई जाती हैं, पर नगडी प्रखंड के किसानों के साथ अन्याय हो रहा हैं। नगडी प्रखंड में कुल पांच हजार किसान हैं। प्रखंड के हजारों किसानों को वितरण के लिए मात्र 90 किलो धान बीज आया है जो न्याय है। नगड़ी जिप सदस्य पूनम देवी ने कहा कि इस बार हजारों किसानों के बीच धान बीज वितरण करने के लिये 90 किलो धान बीज आया है यह किसानों के साथ मजाक है। हम सरकार और संबंधित विभाग के अधिकारी से इसकी मात्रा को बढ़ाने की मांग करते हैं। वहीं नगडी प्रखंड प्रमुख मदुवा कच्छप ने कहा कि विभाग के अधिकारी हमारे किसानों के साथ दुर्व्यवहार कर रहे है।

चुटूटोली में आंगनबाड़ी सहायिका का चयन

बेड़ो। प्रखंड के पुरियो पंचायत के आंगनबाड़ी केंद्र चुटूटोली में बुधवार को आंगनबाड़ी सहायिका का चयन शांति पूर्वक संपन्न हुआ। इसमें योग्यता के आधार पर बिनीता कुजूर का चयन किया गया। वहीं मौके पर सीडीपीओ बेड़ो संगीता कुजूर, बेड़ो प्रमुख बिनीता कच्छप, मुखिया नीरज कुजूर, ग्राम प्रधान जयराम कच्छप,पर्यवेक्षक पुष्पा तिर्की,एएनएम प्रीति कुमारी, विधायक प्रतिनिधि संजय कच्छप, सेविका करिश्मा लकड़ा, विद्यालय शिक्षक बंशी बैठा, सेविका फ्रांसिस्का कुजूर, सुमित्रा कच्छप व समाजसेवी गोवर्धन महतो समेत दर्जनों ग्रामीण मौजूद थे।

विवादित पोस्ट को लेकर आजसू ने की शिकायत

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। आजसू सुप्रीमो सुदेश महतो सहित पार्टी के कई बड़े नेताओं की छवि धूमिल करने के लिए कथित रूप से सोशल मीडिया पर लगातार विवादित और आपत्तिजनक वीडियो साझा किया जा रहा है। इससे आजसू कार्यकर्ताओं में आक्रोश है। आजसू छात्र संघ इकाई के जिला उपाध्यक्ष महावीर महतो ने बुधवार को अनगड़ा थानेदार हीरालाल शाह को लिखित आवेदन सौंपकर गलत पोस्ट करने वालों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कर कार्रवाई की मांग की। आरोप लगाया कि पूर्व डिप्टी सीएम सुदेश महतो, पूर्व मंत्री रामचंद्र सहिस, डॉ देवशरण भगत एवं दीपक महतो की छवि को धूमिल करने के लिए एक वीडियो को गलत तरीके से सोशल मीडिया पर कई आईडी से पोस्ट किया जा रहा है। आवेदन के साथ अपने नेताओं के विरुद्ध जिस फेसबुक एवं इंस्टाग्राम पेज से आपत्तिजनक वीडियो पोस्ट की गई है। उसकी कॉपी भी सबूत के तौर पर संलग्न किया है। मौके पर जलनाथ चौधरी, जगरनाथ महतो और धर्मेंद्र सिंह आदि मौजूद थे।

जमीन विवाद में भिड़े, पिता-पुत्र, आधा दर्जन घायल

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के राजाडेरा गांव में एक विवादित भूखंड को लेकर बुधवार को सगे पिता-पुत्र आपस में बी भीड़ गए। इस दौरान बाप-बेटे एवं उनके परिजनों के बीच जमकर मारपीट हुई। बताया जा रहा कि एक भूखंड को लेकर राजाडेरा निवासी जब्बार अंसारी का उसके पुत्र मुस्लिम अंसारी से काफी दिनों से विवाद चल रहा है। जब्बार का आरोप है कि उसके बेटे मुस्लिम अंसारी ने जमीन दलालों की मदद से उसे मृत घोषित कर फर्जी वंशावली तैयार किया और 19 डिसमील खतियानी भूखंड को अवैध रूप से बेच दिया है। जमीन अरगोड़ा के सीओ सुमन कुमार सौरभ ने चार लाख रुपए में खरीदा है। यह मामला डीसी, अनगड़ा सीओ एवं थाना के समक्ष पूर्व से लंबित है। इधर, अंचल कार्यालय द्वारा म्यूटेशन आवेदन रद्द किया गया है। बुधवार को जब्बार अंसारी अपने अन्य परिजनों के साथ इस भूमि पर बने अवैध निर्माण को हटाने का प्रयास कर रहे थे। जिसे लेकर विवाद हो गया। मारपीट में दोनों पक्षों के तीन महिलाओं सहित आधा दर्जन लोग घायल हुए हैं। घायलों में जब्बार अंसारी, रफीक अंसारी, नजमा खातून, मजीरा खातून, मुस्लिम अंसारी आदि शामिल हैं। दोनों पक्षों ने मारपीट एवं गाली-गलौज का आरोप लगाते हुए अनगड़ा थाना में आवेदन दिया गया है। थाना प्रभारी हीरालाल साह ने बताया कि मामले की छानबीन कर रही है।

बेड़ो में आम महोत्सव सह बागवानी मेला का आयोजन

आम की बागवानी रोजगार सृजन का प्रमुख साधन : सौरभ भुमानिय

आजाद सिपाही संवाददाता

बेड़ो। आम बागवानी रोजगार का प्रमुख साधन बन गया है। उक्त बातें रांची के डीडीसी सौरभ कुमार भुमानिया ने कहीं। वे बेड़ो प्रखंड के मनरेगा पार्क ईंटाचिल्दरी गांव के समीप बुधवार को बिरसा हरित ग्राम योजना के तहत आयोजित आम महोत्सव सह बागवानी मेला में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने संयुक्त रूप से मेला का उद्घाटन किया। कहा कि इससे संबंधित विषयों पर प्रखंड स्तर पर लाभुकों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। जिससे इसमें व्यापक प्रगति हो सके। साथ ही शेष लाभुकों को इसे रोजगार के रूप में आत्मसात करना चाहिए। वहीं, पूर्व मुखिया बुधराम बाड़ा ने कहा कि इस पार्क में करीब 200 एकड़ में आम की बागवानी की गई है। ग्रामीणों को रोजगार का साधन मिलने से उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है। कहा कि हमलोग एक एकड़ में 112 आम का पौधा लगाते हैं। एक पेड़ 10 पुत्र के समान होता है। इससे रोजगार सृजन के अवसर मिलते हैं। साथ ही पर्यावरण की रक्षा होती है। बीडीओ राहुल उरांव ने कहा कि आम बागवानी रोजगार के क्षेत्र में मील का पत्थर बनेगा। वहीं, सीओ प्रताप मिंज ने कहा कि आम बागवानी ग्रामीण क्षेत्रों में कालान्तर में लाभुकों के लिए वरदान बनेगा। इस दौरान विधायक प्रतिनिधि प्रो करमा उरांव, मुखिया अनीता बाड़ा, तंजीर हुसैन और जिप सदस्य बेरोनिका उरांव आदि ने भी अपने-अपने विचार रखे। इस दौरान महोत्सव में डीडीसी ने मनरेगा के कार्य पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करनेवाले ग्रामीणों में अफसाना परवीन, दिलीप भगत, रकीब खान, गुड्डू मीर,वाहिद अंसारी, लीली बाड़ा, पूनम देवी, रूखसाना परवीन, बागवानी सखियों में कृपा लकड़ा, अनिता उरांव, नमिता देवी, कृष्णा उरांव और शांति टोप्पो आदि को प्रशस्त पत्र देकर सम्मानित भी किया। लगे हाथ प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत महिला लाभुकों के बीच उन्नत चूल्हे का वितरण किया गया। डीडीसी ने स्टालों में प्रदर्शनी पर लगे विभिन्न प्रकार के आमों का मुआयना किया। इसके बाद मनरेगा पार्क में आम के पौधों का रोपण किया। इस मौके पर बीपीओ संजय तिर्की, सहायक अभियंता पुरुषोत्तम भाई पटेल, कनीय अभियंता सद्दाम हुसैन, दुर्गा टाना भगत, मुकेश सिन्हा, पंचायत सचिव करमु कंडिर, निरोज लकड़ा, सखी मंडल की दीदी के अलावा बुधराम बाड़ा, लाल नागेंद्र नाथ शाहदेव, राजेश सहाय, कलिंद्र सिंह, रवि उरांव और अरूण उरांव आदि उपस्थित थे।

ग्रामीण डाककर्मी डाक विभाग की रीढ़ होते हैं: रूपक सिन्हा

अनगड़ा में डाक सामुदायिक विकास कार्यक्रम का आयोजन

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। भारतीय डाक विभाग पूर्वी अनुमंडल रांची के तत्वावधान में बुधवार को आरटीसी पब्लिक स्कूल सभागार में डाक सामुदायिक विकास सह व्यवसाय विकास कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि के रूप में रांची मंडल के वरिष्ठ डाक अधीक्षक रूपक कुमार सिन्हा के अलावा विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्वी अनुमंडलीय डाक निरीक्षक सिकंदर प्रधान, डाक अधिदर्शक अरूण गुप्ता, समीर कुमार एवं स्कूल के प्राचार्य नरेंद्रनाथ महतो उपस्थित हुए। कार्यक्रम का संचालन रामकुमार दीपक ने किया। इस दौरान विशेष रूप से डाक विभाग की विभिन्न बचत योजनाओं, बीमा योजना, सहित अन्य लाभकारी योजनाओं की जानकारी दी गई। वरिष्ठ डाक अधीक्षक रूपक सिन्हा ने कहा कि ग्रामीण डाककर्मी डाक विभाग की रीढ़ होते हैं। डाक विभाग का नेटवर्क सुदूर ग्रामीण इलाकों तक फैला हुआ है, जहां ग्रामीण डाककर्मी विपरीत परिस्थितियों में भी ग्रामीणों को डाक सेवा की सुविधाएं प्रदान करते हैं। डाकघर के माध्यम से अनेक प्रकार की बचत एवं बीमा योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, महिला सशक्तीकरण आदि को ध्यान में रखकर योजनाएं चला रही है। जिसका हमें लाभ उठाना चाहिए। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य व्यवसाय करना नहीं है, बल्कि डाकघर में एक ही छत के नीचे सारी सुविधाएं उपलब्ध कराना है, ताकि जरूरत के हिसाब से आप इसका लाभ उठा सकें। उन्होंने कहा कि डाककर्मी सेवा भाव से कार्य करते हुए प्रत्येक ग्रामीण परिवार को डाक विभाग की लाभकारी योजनाओं से जोड़ने का प्रयास करें। वहीं, अनुमंडलीय डाक निरीक्षक सिकंदर प्रधान ने कहा कि भारतीय डाक विभाग आज अपनी बेहतर सेवाओं की बदौलत घर घर तक पहुंच बना चुका है। उन्होंने ग्रामीण डाककर्मियों को डोर टू डोर कैंपेन कर डाक विभाग की जनकल्याणकारी योजनाओं से लोगों को जोड़ने का आह्वान किया। इस अवसर पर डाक बीमा योजना के क्षेत्र में बेहतर कार्य करनेवाले राजाडेरा के डाकपाल सह बीएमएस के प्रमंडलीय सचिव रामकुमार दीपक, महेशपुर बीओ के एबीपीएम मानिकलाल महतो सहित अन्य को पुरस्कृत किया गया। इस मौके पर मानिकलाल महतो, बसंत महतो, तुलसी प्रमाणिक, प्रतिक कुमार, उपेंद्रनाथ मेहता, कालीचरण महतो, मेकाइल अंसारी, राजकिशोर प्रसाद, मिलन साहू, सुरेश महतो, मनमोहन मिर्धा, भीष्मा लोहरा, मक्खन महतो और झुबल महतो आदि उपस्थित रहे।

चैनपुर में अबुआ आवास का गृह प्रवेश

चैनपुर (आजाद सिपाही)। चैनपुर प्रखंड के कातिंग अंबाटोली गांव में बुधवार को दो नए परिवारों के लिए खुशी का दिन था। अमृता टोप्पो और हेंजा रौतिया ने अपने नवनिर्मित अबुआ आवास में गृह प्रवेश किया। इस अवसर पर प्रखंड विकास पदाधिकारी चैनपुर यादव बैठा ने दोनों परिवारों को बधाई दी और उनके गृहप्रवेश कराकर नये घर की चाबी सौंपी। अमृता टोप्पो और हेंजा रौतिया दोनों ही अपने नये घर में जाने के लिए बेहद उत्साहित थे। उन्होंने बताया कि अबुआ आवास योजना के तहत उन्हें घर बनाने के लिए आर्थिक सहायता मिली, जिससे उनका सपना पूरा हुआ। अबुआ आवास के तहत पक्का मकान बन जाने से पूरा परिवार खुश है। उन लोगों ने बताया कि पक्का मकान हमारे लिए एक सपना की तरह था सरकार के अबुवा आवास योजना के तहत यह सपना आज पूरा हो गया है। वे अपने नये घर में खुशी-खुशी रहने के लिए तैयार हैं। चैनपुर में अबुआ आवास योजना का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस योजना के तहत बनाए गए घरों में रहने वाले परिवारों के चेहरे पर खुशी साफ झलकती है। अमृता टोप्पो और हेंजा रौतिया जैसे लाभार्थियों के लिए यह योजना वरदान साबित हुई है।

आवासीय विद्यालय के छात्र का सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में इंजीनियरिंग की कोचिंग के लिए चयन

बसिया (आजाद सिपाही)। एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय,बसिया के कक्षा ग्यारहवीं का छात्र अलोक टोप्पो का चयन राष्ट्रीय आदिवासी छात्र शिक्षा समिति, जनजातीय कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इंजीनियरिंग की कोचिंग प्राप्त करने के लिए हुआ है। ज्ञात हो की दक्षणा फाउंडेशन, पुणे द्वारा परीक्षा ली गयी थी, जिसके बाद परीक्षा परिणाम के आधार पर राष्ट्रीय आदिवासी छात्र शिक्षा समिति ने दो सेंटर ऑफ एक्सीलेंस बनाकर एक-एक केंद्र में 20 छात्रों को इंजीनियरिंग तथा 20 छात्रों को मेडिकल के कोचिंग की व्यवस्था की है। एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय,बसिया से 89.20 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्णता हासिल करने वाले अलोक टोप्पो का चयन चनकापुर, महाराष्ट्र के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में इंजीनियरिंग की मुफ्त कोचिंग हेतु हुआ है। अलोक टोप्पो को चनकापुर के सेंटर आफ एक्सीलेंस में दो वर्षों के लिए इंजीनियरिंग की कोचिंग दी जायेगी। यहां पढ़ाई के साथ-साथ रहना-खाना व अन्य सभी सुविधाएं भारत सरकार द्वारा मुहैया करायी जाएगी। झारखंड के एकलव्य विद्यालयों से अलोक टोप्पो एकमात्र छात्र हैं जिनका चयन राष्ट्रीय स्तर के इस कोचिंग संस्थान के लिए हुआ है। अलोक टोप्पो के इस सफलता से विद्यालय में हर्ष का माहौल है।

बीडीओ-सीओ ने मृतक के परिजन से की मुलाकात

भरनो (आजाद सिपाही)। प्रखंड अंतर्गत ग्राम मकरा में सर्प दंश से शिकार हुई बालिका संजोनी उरांव उम्र लगभग 13 वर्ष की मृत्यु मंगलवार हो गयी थी। इसमें प्रखंड प्रशासन की ओर से इस दुख की घड़ी में परिवार को ढांढस बनाने हेतु प्रखंड विकास पदाधिकारी अरुण कुमार सिंह, अंचल अधिकारी अविनाश कूजूर संबंधित पंचायत के मुखिया, पंचायत समिति सदस्य एवं पंचायत सचिव मृतक के माता-पिता से मिले। तत्काल सहायता के रूप में चावल, वस्त्र एवं कुछ नगद राशि उपलब्ध करायी गयी। उनका आवास भी काफी जर्जर अवस्था में था। अंबेडकर आवास की स्वीकृति हेतु जिला को अभिलेख भेजने का निर्देश प्रखंड विकास अधिकारी द्वारा संबंधित पंचायत सचिव को दिया गया। साथ ही मृतक के पिता नक्कू उरांव जो कि दोनों आंखों से नेत्रहीन थे, उन्हें विकलांगता सर्टिफिकेट देने हेतु प्रस्ताव संबंधित मुखिया को लाने का निर्देश दिया गया। सरकारी सहायता के रूप में सर्प दंश से शिकार परिवार के आश्रित को 4 लाख का लाभ दिलाने हेतु तत्काल पहल करने की बात प्रखंड प्रशासन की ओर से कही गयी।

चैनपुर में कई दुकानों पर छापा, जुर्माना वसूला गया

चैनपुर (आजाद सिपाही)। चैनपुर थाना क्षेत्र के चौक-चौराहों पर मंगलवार को तंबाकू निषेध कार्यक्रम के तहत एक बड़ी कार्रवाई की गई, जिसमें दर्जनों दुकानों पर औचक छापेमारी कर गुटखा, सिगरेट और अन्य नशीले पदार्थ जब्त किये गये। यह अभियान प्रखंड विकास पदाधिकारी यादव बैठा, अंचल अधिकारी दिनेश गुप्ता और थाना प्रभारी कुन्दन चौधरी के संयुक्त नेतृत्व में चलाया गया उपायुक्त प्रेरणा दीक्षित के आदेश पर चैनपुर प्रखंड मुख्यालय में गुटखा, तंबाकू, सिगरेट सहित सभी प्रकार के नशीले पदार्थों की बिक्री पर सरकार ने पूर्ण प्रतिबंध लगा रखा है। बीडीओ यादव बैठा ने बताया कि इस प्रतिबंध के बावजूद कई दुकानदार चोरी-छिपे इन प्रतिबंधित पान मसालों की बिक्री कर रहे थे। इसी को रोकने के लिए यह विशेष अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान कुल दस दुकानों से जुर्माना वसूला गया और सभी दुकानदारों को सख्त चेतावनी दी गयी। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि यदि अगली बार छापेमारी में कोई दुकानदार बीड़ी, सिगरेट, तंबाकू या गुटखा बेचते हुए पाया जाता है, तो उस पर 10,000 का भारी जुर्माना लगाया जायेगा और कानूनी कार्रवाई भी की जायेगी। इस छापेमारी दल में बीडीओ यादव बैठा, सीओ दिनेश गुप्ता, थाना प्रभारी कुन्दन चौधरी, अंचल निरीक्षक मुनेश्वर सिंह और थाने के जवान शामिल थे।

कोनबीर व्यापार संघ के अध्यक्ष बने अनमोल तिवारी

बसिया (आजाद सिपाही)। गुरुवार को प्रखंड के कोनबीर व्यापार संघ का चुनाव कोनबीर सामुदायिक भवन में संतोष सोनी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस दौरान संतोष सोनी के द्वारा व्यापारिक संघ के अध्यक्ष का नाम का प्रस्ताव मांगा गया तो लोगों ने सर्व समिति से अनमोल तिवारी का नाम प्रस्तावित किया एवं उनको कोनबीर व्यापारिक संघ का अध्यक्ष चुना गया, इसके बाद नीरज कुमार साहू को सर्व समिति से उपाध्यक्ष, संदीप चौधरी को सचिव एवं सूरज गोप को कोषाध्यक्ष बनाया गया. अध्यक्ष अनमोल तिवारी ने कहा कि व्यवसायियों के हित में कार्य करना उनकी प्राथमिकता है। साथी ही उन्होंने उपस्थित सभी व्यवसायियों का आभार व्यक्त किया एवं सभी चयनित पदाधिकारी को शुभकामनाएं दी। इस दौरान मुख्य रूप से अजय कुमार पांडे, आनंद कुमार साहू, अनूप सोनी, बबलू ठाकुर एवं सभी व्यवसायिकगण उपस्थित थे।

धान का बीज नहीं मिला, नाराज किसानों ने जाम किया गुमला-छत्तीसगढ़ मार्ग

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। जिला में मानसून की शुरूआत के साथ ही अच्छी बारिश हो चुकी है। इस बार अच्छी पैदावार को लेकर किसान खुश हैं । कृषि विभाग की ओर से सब्सिडी के रूप में सभी किसानों को धान देने की योजना है लगातार किसान 15 दिनों से कार्यालय का चक्कर काट रहे हैं। लेकिन कुछ किसानों को धान उपलब्ध कराया गया, जबकि प्रतिदिन काफी संख्या में किसान कार्यालय का चक्कर काटते हुए वापस लौट जाते हैं। लगातार 15 दिनों से यही नजारा देखने को मिल रहा है किसान पैसे लगाकर गाड़ी भाड़ा देकर विभाग पहुंचते हैं। सुबह से शाम होने के बाद उनको धान नहीं है बोलकर बैरंग वापस लौटा दिया जाता है। जिसको लेकर किसान काफी चिंतित हैं। त्रस्त होकर किसान बुधवार की सुबह 8 बजे शहर के पटेल चौक को जाम कर दिया पटेल चौक के जाम होने से चारों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गई मामले की सूचना वरीय पदाधिकारी और विभाग को दी गई लेकिन वार्ता के लिए कोई पदाधिकारी घंटों बीत जाने के बावजूद सामने नहीं आए वहीं किसानों का कहना है कि हम लोग लगातार विभाग का चक्कर काट रहे हैं लेकिन विभाग की ओर से किसी प्रकार की स्पष्ट जानकारी नहीं दी जा रही है। 10 बजे कृषि पदाधिकारी विजय कुजूर अंचल अधिकारी हरीश कुमार जाम स्थल पहुंचे और किसानों से बातचीत की वहीं किसानों को जल्द धान दिए जाने का आश्वासन भी दिया। मामले को लेकर कृषि पदाधिकारी ने कहा जितना धान आया था किसानों के बीच वितरित कर दिया गया। स्टेट से धान आने के बाद ही किसानों के बीच वितरण किया जाएगा। वहीं भाजपा किसान मोर्चा के प्रमंडलीय प्रभारी मंगल सिंह भोगता ने कहा बीज बोने का यह अनुकूल समय है समय बीतने के बाद धान का किसान क्या करेंगे वहीं उन्होंने जिले में धान की कालाबाजारी का आरोपी भी लगाया है। जाम का नेतृत्व कर रहे झारखंड प्रदेश प्रतिज्ञा महिला एसोसिएशन की अध्यक्ष देव की देवी ने कहा कि सरकार किसान विरोधी है ठंड बीत जाने के बाद कंबल बांटती है खेती बाड़ी का समय बीत जाने के बाद धान बांटेगी। जल्द किसानों को धान का बीज मुहैया नहीं कराया गया तो कृषि विभाग में तालाबंदी की जायेगी।

नशीले पदार्थ के खिलाफ चला छापेमारी अभियान

आजाद सिपाही संवाददाता

बिशुनपुर। प्रखंड मुख्यालय में बुधवार को प्रखंड विकास प्राधिकारी सुलेमान मुंडरी, अंचलाधिकारी शेखर वर्मा एवं थाना प्रभारी राकेश सिंह के नेतृत्व में प्रतिबंधित नशीले पदार्थ पान, बीड़ी, गुटखा, सिगरेट, खैनी आदि प्रतिबंधित नशीली पदार्थ के खिलाफ छापेमारी अभियान चलाया गया। इसके तहत मध्य विद्यालय बिशुनपुर से लेकर हॉस्पिटल चौक तक के सभी किराना दुकान एवं गुमटी में छापेमारी की गयी। इस मौके पर प्रखंड विकास प्राधिकारी सुलेमान मुंडरीने कहा कि झारखंड सरकार के द्वारा सभी प्रकार के गुटका एवं पान मसाला सहित कई प्रकार के नशीली पदार्थों पर प्रतिबंध लगाया गया है, ताकि राज्य के छोटे-छोटे बच्चों को नशा से दूर रखा जा सके। प्रतिबंधित नशीली पदार्थों के खिलाफ छापेमारी अभियान चलाया गया। जहां भारी मात्रा में गुटका सहित कई अन्य नशीली पदार्थ जब्त कर उसे नष्ट किया गया। उन्होंने लोगों से आग्रह करते हुए कहा कि सरकार द्वारा जारी गाइडलाइन का सभी लोग पालन करें कोई भी व्यक्ति गुटका या अन्य नकली पदार्थ का बिक्री न करें नहीं तो प्रशासन के द्वारा सख्त कार्रवाई की जायेगी श्री मुंडरी ने बताया कि दुकानदारों के द्वारा भी प्रशासन को अस्वस्थ किया गया कि कोई भी दुकानदार प्रतिबंधित नशीले पदार्थ की बिक्री नहीं करेंगे।

भारतीय लोकतंत्र के इतिहास की सबसे त्रासदीपूर्ण घटना थी इमरजेंसी: अलखनाथ

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। वरिष्ठ भाजपा नेता एवं प्रदेश कार्य समिति सदस्य अलखनाथ पांडेय ने बुधवार 25 जून को आपातकाल की 50वीं बरसी पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि 1975 की वह काली रात भारतीय लोकतंत्र के इतिहास की सबसे त्रासदपूर्ण घटना थी। लेकिन आज देश ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में लोकतांत्रिक मूल्यों को नये आयाम तक पहुंचा दिया है। श्री पांडेय ने याद दिलाया कि कांग्रेस शासनकाल के दौरान लागू किया गया आपातकाल न केवल संविधान विरोधी था, बल्कि जनता के मौलिक अधिकारों की खुली अवहेलना भी थी। प्रेस पर सेंसरशिप, न्यायपालिका पर दबाव, और लाखों नेताओं व कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी झ ये सब उस समय लोकतंत्र के नाम पर धोखा था। ह्लउस दौर ने यह सिखाया कि सत्ता जब निरंकुश हो जाती है, तो राष्ट्र को कितना नुकसान होता है। श्री पांडेय ने कहा कि आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत लोकतंत्र, पारदर्शिता और सबको साथ लेकर चलने की मिसाल बन गया है। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, और सबका प्रयास जैसी सोच ने देश को एक नयी दिशा दी है। उन्होंने कहा कि आज हर नीति में गरीब, किसान, युवा, महिला, व्यापारी, अनुसूचित वर्ग, अल्पसंख्यक - सभी की भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है। डिजिटल भारत, आत्मनिर्भर भारत, स्टार्टअप इंडिया, और जनकल्याणकारी योजनाएं आज देश को विकास और समरसता की नयी ऊंचाई पर ले जा रही हैं।

कामडारा थाना प्रभारी ने बच्चों को सड़क सुरक्षा और साइबर अपराध की जानकारी दी

कामडारा (आजाद सिपाही)। कामडारा ग्लोस्प मेमोरियल उच्च विद्यालय कामडारा में बुधवार को कामडारा थाना प्रभारी शशि प्रकाश के द्वारा विद्यालय के कक्षा 6 से 10वीं के बच्चों के बीच विद्यालय के वर्ग में जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया। कार्यक्रम में प्रभारी द्वारा सड़क सुरक्षा,साइबर अपराध,डायन बिसाही, नशापान,डिजिटल अरेस्ट,बाल विवाह,बाल मजदूरी आदि से संबंधित विस्तार पूर्वक जानकारी दी और कहा कि अफीम की खेती करना गैर कानूनी है, अगर कोई अफीम की खेती कर रहा हो तो इसकी सूचना थाने को दें,साथ ही ग्रामीण इलाके में बहुत जल्द लोग अंधविश्वास का शिकार हो जाते हैं, जिससे तरह तरह की अफबाहें उड़ने लगती है, जिससे परहेज करें। वहीं थाना प्रभारी द्वारा कई सामाजिक कुरूतियों के बारे जानकारी देते हुए स्कूली बच्चों को कहा कि अपने गांव घर के लोगों को जाकर इन सब बातों को बताकर उन्हें भी जागरूक करें। साथ ही इमरजेंसी की स्थिति में डायल 112 नंबर के बारे में भी बताया गया। मौके पर विद्यालय के प्रधानाचार्य एमएल नाग समेत स्कूली बच्चे मौजूद थे।

कांग्रेसियों ने जिला आपूर्ति पदाधिकारी से की मुलाकात

सिसई (आजाद सिपाही)। गुमला जिला कांग्रेस कमिटी के महासचिव सह पूर्व 20 सूत्री अध्यक्ष गंगा उरांव के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जिला आपूर्ति पदाधिकारी, गुमला प्रीतिलता किस्कू से मुलाकात की। इस दौरान कांग्रेस नेता गंगा उरांव ने कहा कि कार्डधारियों के हित के लिए ससमय राशन संबंधित सभी सामग्री का उठाव हो, गोदाम से डीलर के लिए उचित माप तौल के साथ खाद्यान्न आवंटित किया जाये। प्रति कार्डधारियों से डेढ़ – दो किलो अनाज राशन डीलर काटता है उस पर रोक लगाया जाए। प्रति माह सभी प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी के द्वारा जनवितरण दुकानों का निरीक्षण हो, कई महिला मंडल जनवितरण दुकान से सिर्फ अध्यक्ष व सचिव लाभ उठा रहे हैं, बाकी सदस्य को भी लाभ दिलाया जाये। श्री उरांव ने कहा कि आपूर्ति विभाग से आकस्मिक कोष, गरीब असहाय लोगों के लिए प्रत्येक महीने, हरेक पंचायत के मुखिया को दस-दस हजार रुपये आवंटन होता है। उसका लाभ असहाय लाचार गरीबों को दिलाया जाए एवं उनके उपयोगिता प्रमाण की जांच हो। इस मौके पर कांग्रेस के पूर्व मंडल अध्यक्ष बिहारी भगत ने कहा कि सिसई प्रखंड अंतर्गत नगर पंचायत के रोशनी महिला मंडल के अध्यक्ष जयंती देवी पूर्व मुखिया और सचिव हेमंती देवी दोनों के मिलीभगत से वर्ष 2022 जून ,जुलाई, अगस्त तीन माह की, निशुल्क व शुल्क दोनो तरह की राशन को गबन किया गया था। जांच के उपरांत तीन साल से दुकान निलंबित है। इनकी लाइसेंस रद्द करें और कार्डधारियों की गबन की गयी राशन की भरपाई कराया जाये एवं खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत दोषियों पर कानूनी कार्रवाई किया जाये। मौके पर गंदुर मुंडा, रामधारी सिंह, कैलाश उरांव, बनबिहारी भगत, रविन्द्र उरांव मौजूद थे।

गुमला में थाना दिवस का आयोजन आज

गुमला (आजाद सिपाही)। गुरुवार को गुमला थाना में थाना दिवस का आयोजन किया गया है ।सुबह 11 से लोगों की समस्याएं सुनी जायेगी। जिसमें गुमला अंचलाधिकारी हरीश कुमार गुमला थाना प्रभारी महेंद्र करमाली एसडीपीओ सुरेश प्रसाद यादव मौजूद रहेंगे। जहां जमीन से जुड़े मामले व जनता की अन्य समस्याओं को सुनी जाएगी और निष्पादन भी किया जायेगा।

किसी भी शहर का चेहरा होता है बस स्टैंड, इसे सुव्यवस्थित रखें : एसडीएम

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत आज बुधवार को कॉफी विद एसडीएम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस नियमित साप्ताहिक संवाद श्रृंखला की मेजबानी अनुमंडल पदाधिकारी संजय कुमार द्वारा की गयी।

इस सप्ताह के सत्र में गढ़वा के बस मालिकों और बस एजेंटों को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम में कार्यपालक पदाधिकारी, नगर परिषद गढ़वा सुशील कुमार भी उपस्थित रहे। बस मालिकों और बस स्टैंड से जुड़े एजेंटों ने एसडीएम के समक्ष अपनी समस्याएं और सुझाव रखे। वहीं, बस मालिकों ने भी अपने-अपने मुद्दे साझा किये। एसडीएम संजय कुमार ने सभी की समस्याओं और सुझावों को गंभीरता से सुना और आवश्यक कार्रवाई का भरोसा दिलाया।

बस स्टैंड में यात्री सुविधायें बहाल हों : बस एसोसिएशन

इस संवाद कार्यक्रम के दौरान ज्यादातर बस संचालकों ने कहा कि बस स्टैंड का नवनिर्माण जरूर हुआ है, किंतु यहां न्यूनतम आवश्यक सुविधाओं की घोर कमी है। उन्होंने यहां पर सार्वजनिक शौचालय, पेयजल के साथ-साथ यात्री शेड की जरूरत बतायी। बस एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने एसडीएम से कहा कि वे नियमित तौर से नगर परिषद की सैरात के अनुरूप निकाय शुल्क अदा करते हैं किंतु यहां यात्रियों को बैठने के लिए एक कुर्सी भी नहीं है। पूरे बस स्टैंड में यात्री विशेष कर महिलाएं, बूढ़े, बच्चे सभी खड़े रहते हैं। उक्त शिकायत के आलोक में एसडीएम ने मौके पर मौजूद कार्यपालक पदाधिकारी सुशील कुमार को यथाशीघ्र उक्त यात्री सुविधायें बहाल करने हेतु नियमानुसार पहल करने का निर्देश दिया।

कार की चपेट में आने से बच्चे की मौत

सिसई (आजाद सिपाही)। प्रखण्ड थाना क्षेत्र अंतर्गत तेज रफ्तार बोलेरो की चपेट में आने से बच्चे की दर्दनाक मौत हो गयी। थाना क्षेत्र के बरगांव करंजटोली गांव के चन्दु उरांव के सात वर्षीय एकलौते पुत्र रितिक उरांव को बुधवार की शाम करीब सावा पांच बजे अपने ही घर के समीप एक तेज रफ्तार बोलेरो गाड़ी द्वारा कुचल दिया गया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बोलेरो को रोकने का प्रयास किया गया, किन्तु गाड़ी तेज रफ्तार से बरगांव से मुर्गू की ओर फरार हो गया।

हर हाल में प्रखंड बनेगा पेशका, विधानसभा में मामला को उठाउंगा : सत्येंद्रनाथ तिवारी

आजाद सिपाही संवाददाता

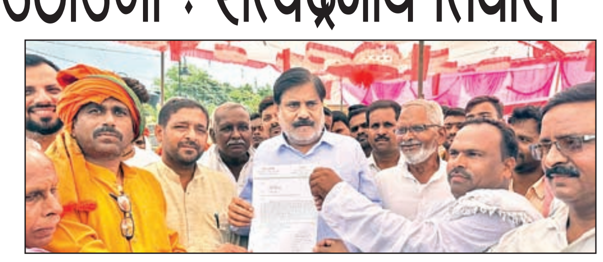

गढ़वा। पेशका प्रखंड बनाओ संघर्ष समिति के बैनर तले पेशका को प्रखंड का दर्जा देने की मांग को लेकर समाहरणालय के समक्ष ग्रामीणों ने एक दिवसीय धरना दिया। धरना के बाद मुख्यमंत्री के नाम उपायुक्त दिनेश कुमार यादव को मांग पत्र सौंपा गया। ग्रामीणों के मांग पर धरना में पहुंचे विधायक सत्येंद्रनाथ तिवारी के अलावे विभिन्न राजनीतिक दलों के लोग भी शामिल थे। मौके पर विधायक ने कहा कि पेशका को प्रखंड बनाने के लिए वे गंभीरता से पहल करेंगे। जुलाई माह में होने वाले विधान सभा सत्र में इसे प्रमुख से उठाएंगे और हर हाल में प्रखंड का दर्जा पेशका को दिलाकर रहेंगे। उन्होंने कहा कि पेशका ही नहीं ओखरगाड़ा, डुमरिया, विश्रामपुर, गोदरमाना को भी प्रखंड बनना चाहिए। इससे ग्रामीणों को सहूलियत होगी, योजनाओं का क्रियान्वनय भी सही तरीके से होगा। उन्होंने पूर्व मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर को ओखरगाड़ा को प्रखंड बनाने की पहल पर कहा कि उन्हें जनता को ठगना नहीं चाहिए। जनप्रतिनिधि पर जनता विश्वास करती है। जब वे मंत्री थे तो क्यों नहीं पहल किया। अब जनता को छलने व ठगने का काम कर रहे हैं। पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के मंत्री होने के बावजूद पिछले पांच साल में पेयजल का एक भी नया योजना पूरा नहीं हुआ। योजना में भारी घोटाला हुआ है। चुनाव के दौरान मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और पूर्व मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर ने भी जनता को पेशका को प्रखंड बनाने का भरोसा दिलाया था। मगर अब पूर्व मंत्री ओखरगाड़ा को प्रखंड बनाने की पहल कर पेशका की जनता के साथ छलावा कर रहे हैं। अब जनता जाग चुकी है। छलावा में नहीं आने वाली है। जबकि पूर्व मंत्री को पेशका व आसपास की जनता ने भरपूर सहयोग किया था। बावजूद वे मंत्री रहते कुछ नहीं कर सकें।

Jharkhand BijliVitran Nigam Limited
CIN:U40108JH2013SGC001702)
ELECTRIC SUPPLY CIRCLE, RANCHI
Kusai Colony, Doranda -834002,
Ph No. 0651-2490467, Fax No – 0651-2490558
Eamil Id ranchicircle.ese@gmail.com

CORRIGENDUM

The cost of BOQ (Non-Refundable) of Short e-NIT 68/PR/JBVNL/25-26 and 69/PR/JBVNL/25-26 may kindly be read as Rs. 1250.00 +GST extra Rs. 1475.00 instead of Rs. 1250+ GST extra Rs. 1450.00

Other terms & conditions of Short e-NIT will remain the same.

स्वहित एवं राष्ट्र हित में ऊर्जा बचावें। कृपया अपनी शिकयतों को टॉल फ्री नं० 1800 345 6570 पर दर्ज करायें।

Sd/-
Deputy General Manager (Technical)
Electric Supply Circle, Ranchi

PR No. 355875

PR 355965 (Jharkhand Bijlee Vitran Nigam Ltd)25-26*D

Jharkhand UrjaUtpadan Nigam Limited.
(CIN: U40108JH2013SGC001703)
Regd. Office:- Engineering Building H.E.C, Dhurwa, Ranchi- 834004
Email- cegenjuunl@gmail.com

Notice Inviting E-tender

NIT No.:- 14/PR/JUUNL/2025-26

General Manager (Technical), JUUNL invites E-tender from approved vendor of CEA, MoP, GoI for "Appointment of consultant for RLA Study, DPR Preparation and its approval for Renovation & Modernization, Life Extension and Upgradation of both units(2x65MW) of Swarnrekha Hydel Power Project, Sikidiri".

Sl. No.	Details of Work	
1	"RLA Study, DPR Preparation and its approval for Renovation & Modernization, Life Extension and Upgradation of both units(2x65MW) of Swarnrekha Hydel Power Project, Sikidiri".	
2	Estimated Cost of Work	Rs. 5.90/- Cr. (Rupees Five Crore Ninety Lacs only) (Inclusive of GST)
3	Cost of Tender Document	Rs. 10,000/- (Rupees Ten Thousand only) +18% GST
4	Bid Security/ Earnest Money Deposit(EMD)	Rs. 11,80,000/-(Rupees Eleven Lakh Eighty Thousand only)
5	Project Completion Period	14 months from the date of issue of LOI
6	Validity of Bid/Tender	180 Days from bid opening date
7	Calendar of Events:	
i.	Date of Publication of NIT	26.06.2025 at 16:00 hrs
ii.	Last date for sending pre-bid queries/ suggestions in writing or via Email- cegenjuunl@gmail.com	09.07.2025 at 16:00 hrs
iii.	Pre-Bid Meeting Date and Time	10.07.2025 at 16:00 hrs
iv.	Last Date / Time for receipt of bids	25.07.2025 at 16:00 hrs
v.	Date and Time for Opening of Technical bid	30.07.2025 at 16:00 hrs
vi.	Online opening of Financial Bid	To be Intimated after technical evaluation.
8	Address of communication	General Manager (Technical), Jharkhand Urja Utpadan Nigam Limited Engineering Building H.E.C, Dhurwa, Ranchi-834004,Email- cegenjuunl@gmail.com Mob.: 8210263836/ 8083523563

- e-Tender document and BOQ can be downloaded from the website http://jharkhandtenders.gov.in.The downloaded document shall be treated as a valid document for participation in the tender only if payment has been made towards *price of BOQ* and *earnest money*.
- The earnest money should be deposited in **online mode** one-tender portal i.e.www.jharkhandtenders.gov.in only.
- Cheque /DD/ Fixed Deposit receipt/Money Order or saving certificate etc. are not acceptable towards deposit of earnest money and tenders with above will be considered without earnest money.
- The earnest money of unsuccessful bidders will be refunded to them after award of the contract.
- Tender without Earnest Money shall not be considered.
- The tenders shall not be entertained after the dead line under any circumstances whatsoever.
- The under signed reserves the right to issue, extend the date of publishing/ submission/ opening tender/ distribute the works among the tenders or reject any / all tenders without assigning any reason thereof.
- Corrigendum/ addendum if any will be published in newspaper and also be uploaded on above website.
- Prospective bidders are requested to visit website regularly.

स्वहित एवं राष्ट्र हित में ऊर्जा बचावें। कृपया अपनी शिकातों को 18003456570 (कॉल सेन्टर) पर दर्ज करायें।

Sd/-
General Manager (Tech.)
JUUNL

PR 355979 Jharkhand Urja Utpadan Nigam Ltd(25-26).D

चिंता : हिलटॉप एनर्जी की आउटसोर्सिंग परियोजना को लेकर टकराव

धनबाद-गिरिडीह सांसद आमने-सामने, रैयतों की जमीन बनी सियासी रणभूमि

आजाद सिपाही संवाददाता

महुदा/धनबाद। कोयलांचल क्षेत्र में एक बार फिर सियासी तापमान चरम पर है। खरखरी कोलियरी क्षेत्र स्थित प्रस्तावित हिलटॉप एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड की आउटसोर्सिंग परियोजना ने धनबाद और गिरिडीह के सांसदों को आमने-सामने खड़ा कर दिया है। इस परियोजना के धरातल पर उतरने से पहले ही राजनीतिक संघर्ष की आहट सुनाई देने लगी है। मंगलवार को धनबाद सांसद ढुल्लू महतो द्वारा हिलटॉप आउटसोर्सिंग परियोजना के महाप्रबंधक से कथित दुर्व्यवहार के बाद स्थिति और तनावपूर्ण हो गई। इसके अगले ही दिन बुधवार

को सांसद ढुल्लू महतो ने सीनिडीह में एक आमसभा कर ग्रामीणों की भावनाओं का हवाला देते हुए परियोजना को ग्रामीण हित में बताया। वहीं, गिरिडीह सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी ने बीसीसीएल के सीएमडी से मुलाकात कर स्पष्ट कहा कि जब तक रैयतों की मांगें पूरी नहीं होतीं, तब तक परियोजना को धरातल पर नहीं उतरने दिया जाएगा। जानकारी के अनुसार, मधुबन थाना और धर्माबांध ओपी क्षेत्र के बाबुडीह सहित तीन पंचायतों की सीमा में लगभग 1250 एकड़ जमीन पर यह परियोजना प्रस्तावित है। कंपनी की योजना है कि पांच किलोमीटर के परिधि क्षेत्र में कोयला उत्पादन केंद्र स्थापित किया जाए, जिसका पहला चरण 1250 एकड़ भूमि पर सीमांकन कर शुरू किया जाना है। इस परियोजना को लेकर रैयतों की सहमति और मुआवजे की मांग के बीच राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन शुरू हो गया है। सांसद ढुल्लू महतो के समर्थक जहां परियोजना को क्षेत्र के विकास और रोजगार का माध्यम मानकर समर्थन कर रहे हैं, वहीं चंद्रप्रकाश चौधरी के समर्थक ग्रामीण हितों की अनदेखी का आरोप लगाते हुए विरोध की अगुवाई कर रहे हैं। बतातें चलें कि कुछ दिन पहले इस परियोजना को लेकर क्षेत्र में खूनी हिंसक झड़प भी हुई थी, जिसमें कई ग्रामीणों और पुलिस कर्मियों को चोटें आई थीं। यह देख प्रशासन की चिंता बढ़ गई है। निकट भविष्य में राजनीतिक संघर्ष के और भी गंभीर रूप लेने की आशंका भी जताई जा रही है। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि हिलटॉप एनर्जी की यह परियोजना अब सिर्फ औद्योगिक निवेश का विषय नहीं रह गई है, बल्कि यह झारखंड की राजनीति का नया मोर्चा बनती नजर आ रही है। देखना होगा कि यह टकराव विकास की ओर बढ़ता है या राजनीतिक बवाल की आग में जलता है।

कांग्रेस का जिला मीडिया चेयरमैन सह प्रवक्ता बनाये जाने पर पर्यवेक्षक ने दी पप्पू तिवारी को शुभकामनाएं

धनबाद (आजाद सिपाही)। जिला कांग्रेस पर्यवेक्षक अशोक कुमार चौधरी के धनबाद आगमन पर बुधवार को सर्किट हाऊस में नेताओं-कार्यकर्ताओं ने अभिनंदन किया। इस दौरान उन्होंने धनबाद जिला का मीडिया चैयरमेन सह प्रवक्ता बनाएं जाने पर पप्पू तिवारी को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। वहीं, विधानसभा चुनाव में धनबाद जिला के पूर्व प्रभारी रहे प्रदेश सचिव महेंद्र मिश्रा ने भी बधाई दी। वहीं, कांग्रेस पर्यवेक्षक अशोक चौधरी ने पप्पू तिवारी को धनबाद जिला का मीडिया चेयरमैन सह प्रवक्ता बनाए जाने पर पार्टी के प्रदेश प्रभारी केराजू, कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश सहित शीर्ष नेतृत्व के प्रति

आभार प्रकट किया। कहा कि कांग्रेस ने संगठन के प्रति समर्पित एवं ऊर्जावान कार्यकर्ता पप्पू तिवारी को धनबाद जिला का मीडिया चैयरमेन सह प्रवक्ता की महत्वपूर्ण जिम्मेवारी सौंपी है, जिससे संगठन की मजबूती में बल मिलेगा। कहा कि मुझे आशा ही नहीं, बल्कि पूर्ण विश्वास है संगठन ने जिस आशा और विश्वास के साथ पप्पू तिवारी को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है वे उसका निष्ठा और ईमानदारी के साथ निर्वहन करते हुए जिला के हर छोटी-बड़ी ज्वलंत समस्याओं को प्रमुखता के साथ रखेंगे एवं संगठनहित में कार्य करते हुए संगठन को धारदार, सशक्त एवं मजबूती प्रदान करेंगें। इस मौके पर झारखंड कांग्रेस के सचिव महेंद्र मिश्रा, योगेंद्र सिंह योगी, राजेश्वर सिंह यादव, बबलू दास, पप्पू पासवान, मनोहर दास, आशीष सिन्हा और अरविंद सैनी आदि उपस्थित थे।

रक्तदान शिविर का आयोजन, 44 यूनिट रक्त संग्रह

धनबाद (आजाद सिपाही)। भारतीय रेडक्रास सोसाइटी एवं एसबीआई बीआरओ धनबाद रूरल के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को मेमको मोड़ स्थित प्रांगण में एसबीआई बैंक के 70वें स्थापना दिवस पर रक्तदान शिविर आयोजित हुआ। जिसमें भारतीय रेडक्रास समिति धनबाद के चेयरमैन कौशलेंद्र कुमार सिंह, चेयरमैन सलाहकार कुमार मधुरेन्द्र सिंह, नोडल पदाधिकारी ब्लड डोनेशन प्रोग्राम बेनजीर परवीन, नोडल पदाधिकारी वाहन अनिल भगत, रंजीत कुमार सिंह आजीवन सदस्य सिंदरी क्षेत्र, सुजीत कुमार, इरशाद आलम, एसबीआई के रीजनल मैनेजर निर्मल कुमार, सुभाष कुमार, संजय कुमार वर्मा, ईशा सिंह, संगीता कुमारी और सुमन कुमारी ने आयोजन में अपनी सहभागिता सुनिश्चित की। इस दौरान 44 यूनिट रक्त संग्रह कर धनबाद एसएनएमएमसीएच के ब्लड बैंक को सौंप दिया गया। इस मौके पर अशोक कुमार, संजीव, विष्णु, राजू और साहनी आदि मौजूद रहे।

आरोप : रात के अंधेरे में जयरामपुर आउटसोर्सिंग के 50-60 समर्थकों का तांडव

हरवे-हथियार के साथ मोदीभिट्ठा बस्ती में बोला धावा, महिलाओं के साथ मारपीट

- त्रिपक्षीय वार्ता में दोबारा गुंडागर्दी नहीं होने और उपद्रवियों पर कार्रवाई का आश्वासन

आजाद सिपाही संवाददाता

झरिया/जोरापोखर। जयरामपुर आउटसोर्सिंग परियोजना में सोमवार को हुई हैवी ब्लास्टिंग से ईस्ट बरारी एवं मोदीभिट्ठा मुहल्ले में एक दर्जन से अधिक घर क्षतिग्रस्त हो गये थे। इससे आक्रोशित ग्रामीणों परियोजना का कामकाज बंद करवा दिया गया था, जो बुधवार को तीसरे दिन भी जारी रहा। कथित रूप से इससे कंपनी को करोड़ों रुपये की आर्थिक क्षति हुई है। जिसससे बौखलाए आउटसोर्सिंग के 50-60 लोग मंगलवार की देर रात हर्वे-हथियार से लैस होकर मोदीभिट्ठा बस्ती में घुसकर जमकर तांडव किये। इस दौरान परियोजना समर्थकों ने बस्ती के पास धरना देकर परियोजना का विरोध कर रही महिलाओं के साथ कथित रूप से मारपीट और छेड़खानी की। वहीं, बंद समर्थकों के हर्वे-हथियार लेकर पहुंचने और

मोदीभिट्ठा बस्ती में तांडव मचाते जयरामपुर आउटसोसिंग परियोजना समर्थक।

मारपीट-छेड़खानी शुरू करने से भयभीत होकर महिलाएं बस्ती की ओर शोर मचाते हुए भागने लही। आरोप है कि मारपीट में पार्वती महतो, जोबा महतो, अंकुरी देवी, ममता देवी, भानु देवी, कोलावती देवी, कुंती देवी और झूनी कुमारी नामक महिलाएं घायल हुई हैं। दूसरी ओर, घटना को लेकर बस्ती के ग्रामीणों ने रात में ही जोरापोखर थाना को लिखित शिकायत कर हमलावरों को अविलंब गिरफ्तार करने की मांग की है। वहीं, घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी राजेश प्रकाश सिन्हा दल बल के साथ तुरंत घटनास्थल पर पहुंच कर निरीक्षण किये। इसी को लेकर बुधवार को थाना प्रभारी ने प्रबंधक एस सील और सीआईएसएफ के निरीक्षक विजय शर्मा के साथ मोदीभिट्ठा में ग्रामीणों के साथ बैठक की। इसके बाद लोगों को आश्वस्त किया कि जो घटना होनी थी वह हो गई। अब किसी तरह की गुंडागर्दी नहीं होने दिया जाएगा। उन्होंने हमलावरों के खिलाफ कार्रवाई करने का भी आश्वासन दिया है। इस दौरान वरिष्ठ अधिवक्ता सह झामुमो नेता सोमनाथ चटर्जी एवं सपन बनर्जी ने घटनास्थल का निरीक्षण कर ग्रामीणों को उसका अधिकार दिलाने को उनकी लड़ाई कानूनी तरीके से लड़ने का भरोसा दिया। वहीं, बस्ती की एक दर्जन महिलाओं ने पुलिस को दिए लिखित शिकायत में कहा कि हैवी ब्लास्टिंग के प्रभाव से सोमवार को बस्ती में अनगिनत पत्थर उड़कर गिरे थे, जिसमें वे लोग बाल बाल बच गयी थीं। घटना के विरोध में ग्रामीणों ने परियोजना में काम को बंद करा दिया जो अभीतक जारी है। परियोजना को चालू कराने के लिए रात के अंधेरे में आउटसोर्सिंग समर्थक हेमंत पासवान, उज्ज्वल मंडल, संदीप यादव, सतीश सिंह और बंटी सिंह सहित करीब पांच दर्जन समर्थकों ने लाठी डंडे और पिस्टल लेकर बस्ती के पास धरना दे रही दो दर्जन महिलाओं पर हमलाकर कर उनके साथ मारपीट और छेड़छाड़ की। यहां तक कि हमलावरों ने बस्ती में घुसकर ग्रामीणों को भी खदेड़ खदेड़ कर मारा। वहीं, मामले को लेकर जोरापोखर थाना में प्रबंधन के साथ ग्रामीणों की तीन बार वार्ता हुई। जिसमें ग्रामीणों ने रात की घटना का प्राथमिकी दर्ज कर आरोपियों को गिरफ्तार करने, मुआवजा के साथ विस्थापन करने, डीजीएमएस के नियम के तहत खनन कार्य करने और विस्थापन होने तक हैवी ब्लास्टिंग पर रोक लगाने की मांग की है। इस दौरान प्रभारी जीएम एस के सिन्हा ने मोदीभिट्ठा के रैयत ग्रामीण की समस्या को सुलझाने को लेकर चार जुलाई को झरिया सीओ की मौजूदगी में वार्ता करने का आश्वासन दिया। अधिकारियों ने ग्रामीणों को जमीन के कागजों के साथ आने को कहा गया है। इस दौरान प्रबंधन ने परियोजना में संतुलित ब्लास्टिंग करने का भी आश्वासन दिया है। मौके पर थाना प्रभारी राजेश प्रकाश सिन्हा, प्रभारी जीएम एसके सिन्हा, पीओ एके पांडेय, ग्रामीणों की ओर से रामप्रसाद सिंह, सुरेश चक्रवर्ती, पार्वती महतो, जोबा महतो, मुकेश महतो, अमित सिंह, मकसूद आलम और शिवपूजन महतो आदि शामिल थे।

दिवंगत पत्रकार की पत्नी को सौंपी गयी पेंशन आदेश की प्रति

धनबाद (आजाद सिपाही)। मेपल वुड में कर्मचारी राज्य बीमा निगम के पूर्वी क्षेत्र के बीमा आयुक्त प्रणय सिन्हा की अध्यक्षता में झारखंड क्षेत्र के शाखा प्रबंधक, अधीक्षक एवं सामाजिक सुरक्षा अधिकारी की बुधवार को बैठक हुई, जिसमें निगम के कार्यकलापों पर चर्चा की गई। बीमा आयुक्त ने निगम की ओर से प्रदत्त सेवाओं को बेहतर तरीके से बीमाकृत व्यक्तियों को उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। वहीं, क्षेत्रीय निदेशक राजीव रंजन ने सभी अधिकारियों को वर्तमान समय को ध्यान में रखते हुए अपने कार्यकलापों को सुधार करते हुए बेहतर लीडरशिप का उदाहरण प्रस्तुत करने का अनुरोध किया, ताकि बीमाकृत व्यक्तियों को बेहतर सेवा मुहैया करायी जा सके। इस दौरान बीमा आयुक्त द्वारा बीमाकृत व्यक्ति दिवंगत पत्रकार अजय तिवारी की आश्रित विधवा नीतू तिवारी को पेंसन आदेश की प्रति सौंपा। विदित हो कि स्व अजय तिवारी एक प्रमुख हिंदी अखबार के पत्रकार थे। काम खत्म कर घर जाने के क्रम में सड़क दुर्घटना में उनकी मौत हो गयी थी, जिसे कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम के तहत रोजगारजनित चोट के रूप में स्वीकृत करते हुए उनके आश्रितों को प्रतिमाह 17040 रुपये पेंशन के रूप में मृत्यु की तिथि से भुगतान किया जाएगा। बैठक में झारखंड हाई कोर्ट के अधिवक्ता आशुतोष आनंद ने कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम के तहत अभियोजन की कार्रवाई के लिए विभिन्न प्रावधानों के बारे मे चर्चा की। इस मौके पर रांची कर्मचारी राज्य बीमा मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ अशोक कुमार सामंता, राज्य चिकित्सा अधिकारी डॉ अर्चना तिर्की, डॉक्टर डीके राकेश, डॉक्टर मधुलिका कुमारी, शिवेंद्र कुमार, राजेंद्र टुडू आदि उपस्थित थे।

27 जून को बोकारो हवाई अड्डे से चास मौसी बाड़ी के लिए निकलेगी रथ यात्रा

बोकारो (आजाद सिपाही)। इस्कॉन संस्था की ओर से 27 जून को बोकारो हवाई अड्डे से भव्य रथ यात्रा निकाली जाएगी, जो विभिन्न रास्तों से होते हुए भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और बहन सुभद्रा का रथ मगध हॉल स्थित मौसी बाड़ी पहुंचेगा। यहां नौ दिनों तक भगवान जगन्नथ को छप्पन भोग चढ़ाकर पूजा की जाएगी। बुधवार को चास में संवाददाता सम्मेलन आयोजित कर इस्कॉन

संस्था के संचालक जगन्नाथ दास ने इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि भगवान जगन्नाथ का रथ महोत्सव 27 जून से पांच जुलाई तक धूमधाम से मनाया जाएगा। इस साल सबसे बड़ी और अकर्षक रथ यात्रा आयोजित होगी। कहा कि मौसी बाड़ी भगवान जगन्नाथ को प्रतिदिननये पोशाक अपर्ण करते हुए प्रसाद भंडारा का आयोजन होगा।

बाइक चोर गिरोह का पर्दाफाश, पांच गिरफ्तार, 21 बाइक बरामद

फर्जी कागजात बनवाकर झारखंड और बिहार में बेचने की थी तैयारी

झारखंड-बिहार के विभिन्न जिलों में सक्रिय हैं सदस्य

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। पुलिस ने बाइक चोर गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए चोरी के 21 बाइक और दो मोबाइल फोन के साथ पांच आरोपियों को भी गिरफ्तार किया है। पकड़े गये लोगों में धनबाद के मो आरिफ अंसारी उर्फ आरिफ गद्दी और छोटू कुमार उर्फ छोटू पंडित शामिल हैं। इनके अलावा

बिहार के लखीसराय से सूरज कुमार, जामताड़ा से मो असलम और धनबाद से जागो उर्फ जगदीश भुईया को भी गिरफ्तार किया गया है। एसएसपी प्रभात कुमार ने बुधवार को बताया कि जिले में बढ़ती बाइक चोरी की घटनाओं के मद्देनजर विशेष टीम बनाई गई थी। सिंदरी एसडीपीओ और झरिया थाना प्रभारी के नेतृत्व में पांच अलग-अलग स्थानों पर छापामारी की गई। झरिया क्षेत्र से बरामद की गई बाइक के इंजन और चेसिस नंबर बदले गए थे। इन्हें फर्जी कागजात के साथ झारखंड और बिहार में बेचा जाना था।

झरिया के गैरेज में लाकर मिटाए जाते थे पहचान चिह्न

गिरोह का नेटवर्क बिहार और झारखंड के कई जिलों में फैला था। चोरी की बाइक को झरिया के गैरेज में लाकर पहचान चिह्न मिटाए जाते थे। फिर फर्जी दस्तावेज बनाकर बेच दी जाती थी।

जिप चेयरमैन ने टेक्सटाइल मार्केट का किया औचक निरीक्षण

टेक्सटाइल मार्केट में हो रही अवैध वसूली और अव्यवस्था बर्दाश्त नहीं : शारदा सिंह

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। जिला परिषद अध्यक्ष शारदा सिंह ने जिला पंचायती राज पदाधिकारी के साथ बुधवार को बैंक मोड़ स्थित टेक्सटाइल मार्केट का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान अवैध वसूली, अव्यवस्था के साथ ही कई अनियमितताएं पाई गई। निरीक्षण के दौरान शारदा सिंह ने टेक्सटाइल मार्केट के आसपास गंदगी को देखकर भी नाराजगी जताई। कहा कि नगर निगम को इस समस्या का समाधान करने के लिए तत्काल कदम उठाने चाहिए। साथ ही टेक्सटाइल मार्केट में हो

बैंक मोड़ स्थित टेक्सटाइल मार्केट का निरीक्षण करती जिप अध्यक्ष शारदा सिंह एवं अन्य।

रही अवैध वसूली और अव्यवस्था को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि जल्द ही इस मामले में गहन जांच और ठोस कार्रवाई की जाए। जिससे जिला परिषद को हो रहे आर्थिक नुकसान को रोका जा सकेगा और टेक्सटाइल मार्केट की व्यवस्था सुधारा जा सके।

एनएच 114ए के निर्माण कार्य में लापरवाही से जमुवा नवाडी गांव की सैकड़ों एकड़ जमीन टापू में तब्दील

किसानों का धान बीज-फसल का नुकसान होने से आक्रोशित ग्रामीणों ने की सड़क जाम

विधायक प्रतिनिधि मिथिलेश सिंह ने कंपनी से वार्ता कर किसानों को दिया मुआवजा दिलाने का आश्वासन

आजाद सिपाही संवाददाता

जरमुंडी/दुमका। राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच) 114ए के निर्माण कार्य में बरती जा रही लापरवाही के कारण जरमुंडी विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत पहरीडीह पंचायत के जमुवा नवाडी गांव की सैकड़ों एकड़ जमीन बड़े टापू में तब्दील हो गई है। एनएच 114ए के सामने लगभग 40 लोगों की जमीन पूरी तरह पानी में डूब गई हैं। ग्रामीणों ने बताया कि इसमें से 10-15 खेतों में धान का बीज भी है। कुछ लोगों का घर भी डूबने के कगार पर हैं। ग्रामीणों ने बताया कि एच एच 114ए का निर्माण करा रहे संवेदक, हाईवे के अभियंताओं एवं स्थानीय विधायक देवेंद्र कुंवर को भी फोन पर इसकी सूचना भी दी गई थी। लेकिन अभी तक कोई सुनवाई नहीं होने के कारण बुधवार को जमीन जलमग्न हो गयी है। ग्रामीणों ने बताया कि हालात बद से बद्तर हो गए है, लोगों को आने जाने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। यह सड़क काफी व्यस्त है और आने वाले समय सावन में कांवरिया को भी ज्यादा दिक्कत हो सकती हैं। ग्रामीणों ने कहा कि मजबूर होकर बुधवार को हमलोगों ने सड़क को जाम कर दिया था। उधर, मामले की सूचना ग्रामीणों ने फिर से विधायक देवेंद्र कुमार को दी। इसके बाद सूचना मिलते ही विधायक प्रतिनिधि मिथिलेश कुमार पहुंचे और ग्रामीणों को समझाते हुए कहा कि उन्होंने भी मामले में फोन से कंपनी को निर्देश दिया था कि इस क्षेत्र में बरसात के पहले काम करवा दीजिए नहीं तो दिक्कत होगी जो आज हो ही गयी। ग्रामीणों एवं जरमुंडी थाना प्रभारी श्याम सुंदर मंडल के सामने कंपनी वाले को फोन कर विधायक प्रतिनिधि मिथिलेश सिंह ने कहा कि गांव के लोगों का धान का बीज एवं फसल को नुकसान हुआ है। उनको उचित मुआवजा मिलना चाहिए। इस पर कंपनी ने आश्वासन देते हुए दो दिन का समय मांगा है। कहा कि सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। इस मौके पर मुखिया पार्वती देवी, उप मुखिया मुकेश यादव, ग्राम प्रधान वार्ड पार्षद एवं सैकड़ों ग्रामीण मौजूद थे।

हिमाचल के कुल्लू में चार जगह फटे बादल, तबाही

आजाद सिपाही संवाददाता

शिमला। मानसून की दस्तक के बाद बुधवार को ऑरेंज अलर्ट के बीच हिमाचल प्रदेश में भारी बारिश से कई जगह तबाही हुई है। बंजार, सैंज कुल्लू, मणिकर्ण से लेकर मनाली तक जिले में विभिन्न स्थानों पर बादल फटने और अचानक आयी बाढ़ की घटनाएं सामने आयी हैं। बुधवार को कुल्लू के सैंज के जीवानाला, गड़सा के शिलागढ़, मनाली के स्त्रो गैलरी, बंजार के होरनगाड़ में बादल फटने की घटना हुई है। इसी प्रकार गड़सा घाटी में हुरला नाला, पंचा नाला और मनिहार नाला, मणिकर्ण के ब्रह्म गंगा नाला, ग्ररहण, कुथी काकड़ी नाला तथा जिभी के पास कोटलाधार के पास भारी बारिश के कारण बाढ़ आ गयी। सैंज के जीवानाला में

धर्मशाला में 15-20 मजदूर बाढ़ में बहे, 2 शव बरामद

हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला में बुधवार को तेज बारिश हुई। खनियारा इलाके के सोकणी दा कोट में इंदिरा प्रियदर्शनी हाइड्रल प्रोजेक्ट में काम करने वाले 15-20 मजदूर मनुणी खड्ड (नदी) में बह गए। अबतक दो मजदूरों के शव मिले हैं। मजदूर नदी किनारे बने शेड में रह रहे थे। इसलिए बह गये।

इरान ने दोबारा परमाणु कार्यक्रम शुरू किया, तो हमला करेंगे : ट्रंप

एजेंसी

तेहरान। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को नीदरलैंड में नाटो शिखर सम्मेलन में मीडिया से कहा कि इरानी परमाणु ठिकानों पर अमेरिकी हमलों के कारण 12 दिनों तक चली इरान-इजराइल जंग रुकी। उन्होंने कहा, 12 दिनों के दौरान इरान नर्क से गुजरा, जिसके कारण उसे परमाणु हथियार बनाने की इच्छा छोड़नी पड़ी। अगर इरान ने फिर से परमाणु कार्यक्रम शुरू किया, तो हम फिर हमला करेंगे। दूसरी तरफ इरान ने भी मान लिया है कि 22 जून को अमेरिकी हमलों से उसके परमाणु ठिकानों को काफी नुकसान पहुंचा है। इरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बाघई ने इसकी पुष्टि की है। उन्होंने कहा कि अमेरिकी बस्टर बमों के हमले असरदार थे और उससे परमाणु ठिकानों को नुकसान पहुंचा है।

इजराइल-इरान में 12 दिन के बाद सीजफायर

इजराइल-इरान के बीच जंग के 12वें दिन मंगलवार को सीजफायर हो गया। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ने सबसे पहले कल सुबह 3:30 बजे सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए सीजफायर की जानकारी दी थी। बाद में दोनों देशों ने इसकी पुष्टि की और जंग में अपनी-अपनी जीत का दावा किया। इजराइली ढट बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा कि ईरान के खिलाफ इजराइल ने ऐतिहासिक जीत हासिल की है, जो पीढ़ियों तक याद रखी जाएगी। ईरानी विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा कि उनका देश न्यूक्लियर प्रोग्राम बंद नहीं करेगा। उन्होंने कहा- 'हमने इस तकनीक को हासिल करने के लिए बहुत मेहनत की है। हमारे वैज्ञानिकों ने बलिदान दिए हैं।' ईरान की राजधानी तेहरान में कल विक्ट्री सेलिब्रेशन प्रोग्राम भी आयोजित किया गया था।

तेहरान के इंकलाब स्क्वायर में विक्ट्री सेलिब्रेशन आयोजित किया गया।

इरान ने माना कि हमारे परमाणु ठिकानों को नुकसान पहुंचा

इरान ने मान लिया है कि 22 जून को अमेरिकी हमलों से उसके परमाणु ठिकानों को काफी नुकसान पहुंचा है। ईरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बाघई ने बुधवार को इसकी पुष्टि की है। अल जजीरा से बात करते हुए बाघई ने कहा कि अमेरिकी बस्टर बमों के हमले असरदार थे और उससे परमाणु ठिकानों को नुकसान पहुंचा है। हालांकि, बाघई ने नुकसान की डिटेल जानकारी नहीं दी।

उपराष्ट्रपति धनखड़ के सीने में दर्द उठा

नैनीताल (आजाद सिपाही)। उपराष्ट्रपति जगदीश धनखड़ की उत्तराखंड में बुधवार को अचानक तबीयत बिगड़ गयी। उन्हें तुरंत नैनीताल राजभवन ले जाया गया, जहां डॉक्टर ने उनका चेकअप किया। फिलहाल उनकी सेहत ठीक है। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ नैनीताल में कुमाऊं यूनिवर्सिटी के गोल्डन जुबली समारोह में चीफ गेस्ट थे। 45 मिनट के संबोधन में उन्होंने बार-बार 1989 में अपने साथ सांसद रहे डॉ. महेंद्र सिंह पाल का जिक्र किया। कार्यक्रम खत्म होने के बाद उपराष्ट्रपति धनखड़ महेंद्र सिंह पाल के कंधे पर हाथ रखकर बाहर निकले। करीब 10 कदम चलने पर उपराष्ट्रपति पूर्व सांसद के गले लग कर भावुक हो गये, तभी उनके सीने में अचानक दर्द उठा। पूर्व सांसद महेंद्र पाल और सुरक्षाकर्मियों ने उन्हें संभाला।

EXPERIENCE Happy Riding
मात्र ₹ 38,000/- On Road
बैटरी स्कूटी
कम लागत
कम रखरखाव
लाइसेंस मुक्त
एक साल की वारंटी
60 किलोमीटर रेंज
CONTACT FOR DEALERSHIP
J.K SALES
Pillar No. 83, In Between O.T.C. Ground & Piska More Ratu Road, Beside M-Bazar, Lakdi Tall, Ranchi
M.- 9386070011

ADARSH ACADEMY
Let's Start From Zero to Reach Infinity
AADHAR VII TO X JAC /CBSE/ICSE
XI & XII JAC /CBSE/ICSE
B.Sc. Mathematics (All Semesters)
JEE/NEET
ADMISSION OPEN
For Demo Visit Our Youtube Channel ADARSH ACADEMY RANCHI
8789921216, 7061333946
Plaza Chowk: Opp. Mahila Polytechnic College, Ranchi.
Sujata Chowk: 2nd Floor, City Centre, Opp. Gossner College, Ranchi.

NEW LIFE CLINIC
ALL MEDICAL SPECIALISTS ARE AVAILABLE HERE
PEDIATRICIAN (शिशु रोग विशेषज्ञ)
GYNECOLOGIST (स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ)
PHYSICIAN (सामान्य रोग विशेषज्ञ)
PHYSIOTHERAPIST (फिजियोथेरेपिस्ट)
हमारे यहाँ सभी प्रकार के टीकाकरण एवं खून जाँच की सुविधा उपलब्ध है।
HOME COLLECTION ALSO AVAILABLE
9102350010, 6202354863, 6294931155
Ground Floor, Gajsagar Complex Near State Bank of India, Kokar

JAISWAL CCTV
अपने शहर राँची में एक कॉल पर घर या ऑफिस में टेक्निशियन बुलाएं
ऑफिस घर या दुकान में CCTV कैमरा लगवाएं
INTERCOM
BIOMETRICS
CCTV
9431584423
Raj Complex, Radium Road, Kutchery Road, Ranchi

TEXMO
Borewell Submersibles
Single Phase/Three Phase
Domestic/Agriculture/Industrial Pumps
AQUATEX
Agricultural Monoblocks
Open-well Submersibles Pumps
Pressure Boosting Systems
Since : 1956
Eleven Times Export Award Winner
Manufactured Exclusively by AQUASUB ENGG. COIMBATORE
Authorised Dealer : PUMPS & PRIMOVERS
Dr. Fateullah Road, Ranchi-834001, Jharkhand
Ph.: 0651-3580818, Mob.: 9431108785, 9334702026, 9234300862
Website : www.pumpsandprimovers.co.in, Email : jai.kissan553@gmail.com

ACME COACHING
Classes For
+2 / I.Com. Accts, Eco., B.St.
B.Com. All Sem.
C.A./C.S. Foundation
Our Top Achievers (2025 Exams)
Home Tutions Also Available
Address Santipuram Colony, Chesire Home Road, Dipatoli, Ranchi
Mob.: 8210990620 / 9835120846

EUROKIDS GLOBAL SCHOOL
PRE-SCHOOL
PLAY GROUP, NURSERY, LKG, UKG & CLASS 1 TO 5
AGE FROM-1.8 TO 11 YEARS
Heureka, Euphonics, Mathlab, Scientific-Spark, Eurofit, Yogakids, Euro-Music, Mindful+
ENROL NOW! 2025-26
Rims Road, Tunki Tola, Kokar Ranchi // Mob:-7903079507 / 8092334348

WELCOME TO KIDS SECOND HOME ESTD.: FEB-2014
LITTLE STAR KIDS PLAY SCHOOL
Your's Favorite Preschool
PLAY GROUP, NURSERY, LKG, UKG, CLASS 1,2
ADMISSION OPEN 8252797609
Chuna Bhatha Road, Near Dislreey Pull, H.B. Road, Kokar, Ranchi (Jharkhand)

MAHAVIR DENTAL CLINIC
Dr. Anil Kumar
B.Sc, B.D.S
M.I D.A (New Delhi)
Fee Valid For 15 Days
Time : 10AM to 02:00PM & 04:00PM To 07:00PM
6206969366, 9934943989

THE DESERVE
Sri Karishna Mathura Tower, (Near Kaveri Restaurant), Circular Road, Lalpur, Ranchi
9835722261
निःशुल्क COMPUTER प्र० (DCA)
SPOKEN ENGLISH (GD +PD)
Other Courses
ADCA / DTP / C++
A+ / JAVA / PYTHON ect.
HINDI & ENGLISH TYPING
DFA - GST D-4 MONTH
GET JOB
MONEY BACK

!! श्री गणेशाय नमः !!
!! जय माँ काली मईया !!
पं० शम्भुनाथ उपाध्याय
मिलने का समय :
दिन सोमवार से शनिवार
समय : सुबह 9:00 बजे से दोपहर 2:00 बजे, 3 बजे से रात्रि 08 बजे तक
दिन रविवार
समय : सुबह 7:00 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक
इन्द्रजीत भवन, पहाड़ी मंदिर के सामने, बानों मंजिल रोड, राँची-834001
9431585446 | 7903633179

JOB चाहिए ? COMPUTER सीखिए !
The LINGO
Institute of English Language & Computer Education
OUR COURSES
धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलना सिखें वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक पद्धति द्वारा
ADCA
DCA
DTP
C++
Typing
Tally With GST
Advance Excel
सब पढ़ाते है हम सिखाते हैं।
Daily Practical LAB
Spoken English Basic & Advanced
9304108669
1st Floor, Anivash Complex, Opp. Dr. Amit Mukherjee Near Plaza Chowk, Ranchi - 834001 (Jharkhand)

Mob.: 9523367777 9931699449
SRI SAI ENTERPRISES
Khelgaon Chowk, Dipatoli, Ranchi - 834009
SAMSUNG LG Panasonic PHILIPS Whirlpool vivo oppo mi realme

ADMISSION OPEN
50% OFF
TILL JUNE 2025
L.P. PUBLIC SCHOOL
50+ Years of Trusted Early Education in KOKAR
Opposite Paridhan, Near Jeep Showroom KOKAR

Reg. no. JH-20-0100987
BUBU PLAY SCHOOL
ADMISSION OPEN
SESSION 2025-26
AGE GROUP
Play Group - 2 to 3 years
Nursery - 3 to 4 years
L.K.G - 4 to 5 years
U.K.G - 5 to 6 years
ADDRESS
NAGRI - BUKRU (NEAR JATRA MAIDAN) KANKE, RANCHI (JH.) 834006
CONTACT NO.
+91-9334814668
+91-9798295759
REGISTER NOW
WEBSITE :bpsranchi.com
EMAIL ID : bubuplayschool2025@gmail.com

प्रकाशित
Verma's Today CHAPTER WISE CLASS - XI 2025
ARTS, SCIENCE, COMMERCE
मिलते-जुलते नाम वाली नकली पुस्तकों से सावधान!
VERMA PRESS PVT. LTD.
4, R. G. STREET, THARPAKHNA RANCHI (JHARKHAND) - 834 001

Glossy Jewels
Let's Shine Everyday
अब आपके शहर राँची में स्टर्लिंग सील्वर ज्वेलरी और प्रीमियम आर्टिफिशियल ज्वेलरी का विशेष संग्रह अब एक छत के नीचे।
Special offer :
Flat 20% off on Sterling Silver Jewellery
Flat 50% off on Artificial Jewellery
Glossy Jewels.com
Near Satyabhama Tower, Hazaribagh Road, Lalpur, Ranchi-834001
Team of Glossy Jewels
@glossyjewels Contact@glossyjewels
7667873439

आसान नहीं फौजी कहलाना दोस्त, जज्बात पिघलाकर रगों में लोहा भरना पड़ता है,
YODDHA DEFENCE ACADEMY
NDA Target.
NDA Foundation (11th & 12th)
NDA Pre Foundation (8th & 10th)
CDS/MNS/AF
CPMF
Director & Mentor Brig. B.G. Pathak
Nurturing our youth Shaping new soldiers
9153595906
3rd Floor Avinash Complex, East Jail Road, Lalpur, Ranchi

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित। **संपादक :** हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक*** : विनोद कुमार,***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**